

ॐ

जीवन संस्कार



प्रकाशकः

नेपाल माहेश्वरी महिला संगठन



॥ श्री महेश वन्दना ॥



शान्ताकारं भुजगशयनं सर्पहारं सुरेशं ।
विश्वधारं स्फटिसदृशं शुभवर्णं शुभाड्म्
गौरीकांतं मदनदहनं योगिभिर्धर्यानगम्यम्
वन्द्रं शुभं भव हरं सर्वलौककनाथम्

॥ वन्दना ॥

किस विधि वंदन करू तिहारो - औढरदानी त्रिपुरारी
बलिहारी - बलिहारी - जय महेश बलिहारी
नयन तीन उपवीत भुजंगा, शशि ललाट सोहे सिर गंगा ।
मुन्ड माल गल बीच विराजत, महिमा है भरी... बलिहारी...
कर मैं डमरू त्रिशूल तिहारे, कटि मैं हर बाघबर धारे ।
उमा सहित हिम शैल विराजत, शोभा है न्यारी... बलिहारी...
पल मैं प्रभु तुम हो प्रलयंकर, पर प्रभो सदा उभयंकर
ऋषि-मुनि भेद न पाय तिहारो, हम तो हैं संसारी... बलिहारी...
अगम निगम तव भेद न जाने, ब्रह्मा विष्णु सदा शिव माने ।
देवों के ओ महादेव अब, रक्षा करो हमारी... बलिहारी..

नेपाल माहेश्वरी महिला संगठन



गिरिजा सारडा, अध्यक्ष



अनीता सोनी, निर्वर्तमान अध्यक्ष



चन्द्रभागा काबरा, उपाध्यक्ष



नीतू सोमानी, उपाध्यक्ष



ललिता जाजू, महासचिव



सरोज राठी, कोषाध्यक्ष



शीतल सोनी, सचिव



आशा अटल, सचिव

नेपाल माहेश्वरी महिला संगठन



अंजना पेडिवाल , संगठन सचिव



उमा राठी , कार्य समिति सदस्य,



यमुना तापडिया , कार्यसमिति सदस्य



इंदु मल्ल , कार्यसमिति सदस्य



ममता तापडिया,कार्यसमिति सदस्य



ललिता राठी , कार्यसमिति सदस्य



अर्चना काबरा, कार्यसमिति सदस्य



नविता चित्तलानिया , का. सदस्य

नेपाल माहेश्वरी महिला संगठन

सलाहकार



श्रीमती गोमती देवी राठी



श्रीमती रचना राठी



श्रीमती गीता लखौटिया



श्री शंकर कुमार सारडा



श्री घनश्याम राठी

**नेपाल माहेश्वरी महिला संगठन से
अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन मे
प्रतिनिधित्व**



श्रीमती अनिता सोनी
वेबसाईट समिति, संयोजिका



श्रीमती उमा राठी
कार्य समिति सदस्य

नेपाल माहेश्वरी महिला संगठन से

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन मे
का.का. मण्डल सदस्य



श्रीमती गिरिजा सारडा
विराटनगर



श्रीमती ललिता जाजू
विराटनगर



श्रीमती चन्द्रभागा काबरा
राजबिराज



श्रीमती आशा अटल
विराटनगर



श्रीमती पुष्पा चितलागिया
काठमाण्डौ



श्रीमती मञ्जु करवा
विराटनगर



श्रीमती अर्चना सारडा
काठमाण्डौ



श्रीमती सरोज राठी
इनरुवा

नेपाल माहेश्वरी महिला संगठन

सदस्य गण

श्रीमती रीता चितलांगिया, विर्तामोड

श्रीमती सरला सारडा, इटहरी

श्रीमती कविता बाहेती, काठमाण्डौ

श्रीमती सुधा सारडा, काठमाण्डौ

श्रीमती सविता सारडा, लाहान

श्रीमती शीतल बाहेती, विराटनगर

श्रीमती पूनम राठी, विराटनगर

श्रीमती अनिता अटल, धरान

श्रीमती लता सारडा, विराटनगर

श्रीमती कमला अटल, विराटनगर

श्रीमती सन्तोष राठी, विराटनगर

श्रीमती सन्तोष लखौटीया, विराटनगर

श्रीमती मोनाली काबरा, विराटनगर

श्रीमती मन्जु सारडा, राजविराज

श्रीमती सरिता खटोड, लाहान

नेपाल माहेश्वरी महिला मंच, विराटनगर

बिरगंज माहेश्वरी महिला मण्डल, बिरगंज

माहेश्वरी महिला मंच, काठमाण्डौ

माहेश्वरी महिला मंच, सुनसरी (इटहरी, इनरुवा, दुहबी, धरान)

माहेश्वरी महिला मंच, (बुटवल, भेरहवा)

सगरमाथा माहेश्वरी महिला मंच, (लाहान, राजविराज, हनुमाननगर)

मेची माहेश्वरी महिला मंच

(काकरभिटा, भद्रपुर, धुलाबारी, दमक, विर्तामोड, शनिश्चरे, फिक्कल,

पश्चिमपुर, इलाम, उर्लाबारी, ताप्लेजुङ, फिदिम)



अरिरत्ना भारतवर्षीय महाशिक्षकी महिला संघर्जा

श्रीमती सुशीला कावरा गढ़ीय उद्योग

22/15, चौपाल, रोड, फुटपाथ फोन : 2431891.

फैक्स : 0731-4042481 मो : 09329211011

E-mail : kabrasushila@gmail.com

कोषधाक्ष

सौ. आशा लडा

फैक्ट्रीदामाद

09313770556

संगठन मंत्री

सौ. राज ब्रह्म

कोलकाता

09831455858

महानंदी

सौ. जलनाना पाठानी

डॉकेती

09920023636

"श्रेष्ठ जीवन का आवाह : चिरा - वृक्षा - संस्कार"

श्रीमती श्रीमिता सारदा

आध्यात्म - नेपाल प्रोफेशियल, माटे. म. संगठन,
पर्यामेश्वरा



सफल एकाशन हेतु व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति

वह वह की बात है, कि नेपाल प्रोफेशियल

माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा एक स्मारिक "जीवन संस्कार" ०३
एकाशन किया जा रहा है, जिसमें प्रबन्ध में सशात् तक के सारे संस्करणों
के महत्व के दर्शाया जायेगा, जिसकी तरीका संगठन समय में व्यक्ति
आतशयक्ति है। ऐसे साहित्य के माध्यम से उस दृभावी काव्य-पीढ़ी
की तुगारे संस्कार, तुमारी परंपराएँ व तुगारे शीति-रिकालों के
अवगत फ़र्श सकते हैं, एवं उसके महत्व व उद्देश्य के भी व्यक्ति
सकते हैं।

लक्षण श्रीतिकाली, लक्षणीकि युग में सभी उच्च-शिक्षा।
ग्रहण कर उन्नेतर उन्नति कर रखे हैं, परन्तु तुमारी संस्कृति तुमारी
विशेषता की हम पीछे छोड़ी जा रहे हैं, इस ऐसे साहित्य का उकाशन
समरूपीय कदम है। इस इनों को संग्रहीय छनपन ऐसी छनेकानेक
श्रमकामनाएँ। पुनः सफल एकाशन हेतु मिशेलकामनाहों के साथ -

तुम्हारी
सुशीला कोषधक
बोध्याय अध्यक्ष



॥ श्री महेश्वराय नमः ॥

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन

गुवाहाटी (অসম)

सरला काबरा, उपाध्यक्षा (पूर्वांचल)

काबरा भवन, बी. आर. फूकन रोड

गुवाहाटी - 781 009 (অসম)

टूरभाष : 94350-45510

दिनांक: 13th 31/12/15



ମେଘ ଅନ୍ତର ଗାଁରଙ୍ଗା ଜୀ, କିମ୍ବା ଏହି

UN21 HE21

हेपाल प्रैदेशी मांडवरी मिला अंगठत द्वारे प्रकाशित 'जीवन संस्कार' हेतु मेरी दृष्टिक शुभानामनारे । यह पुस्तिका वर्तमान समय में भगान के लिए विशेष महेवपुरी सिल्ह छोटी और आमानिक दिशा में ठोस बदल जाती । इसी शुद्धिकी शुभानामनामारो के भाव :-

ସାରଳୀ କାର୍ଯ୍ୟ
ବାହ୍ୟିକ ପ୍ରାଦେଶି
(ପ୍ରକାଶକ)



अरिल भारतीय यादेश्वरी यदिला रंगळ

श्रीमती सुशीला काबरा शास्त्रीय वाचना

22/16 वायनांग रोड, इंदौर कोड़ा - 2431091.

फँक्स : 0731-4042481 मो. 0932911011

E-mail : kabrasushila@gmail.com

कोषधाक्ष

सौ. आशा लढा

फॉरेंटावाद

09313770556

संगठन नंदी

सौ. राज झावर

कोलकाता

09831455858

मन्मनी

सौ. कलमा गाडानी

डॉर्सेली

09920023636

“प्रेष्ठ जीवन का आश्रम: शिद्धा - इहाना - संख्या”

श्रीमती सुशीला काबरा

प्रिय लोगों

मेरिजाजी सारांडा



मधुर स्मृति

“जीवन संपर्कार” नामक पुस्तक आप निखले जा रही हैं।
जानकर खुल आधिक प्रसङ्गता हुई। हमारी कोस्कार हमारी प्रथा-
हमारी परंपराएँ हमारी धरोहर हैं। विश्वस्त के लिये वसे छाते पाली
भी तड़ पुँजाना होता। कबड्डी बदलते पैर में उपेहिला प्राथमिकता स्थि-
रता निकली दर्शाते हुए समाज के सम्मुख रखें। यह पुस्तक
जीवनों पर्याप्ती बोल, यही कव्वर से प्रार्थना, बोला रखने की अपेक्षा है।

श्रीमती

प्राकृत्यना गाडानी

श्री महेश्वराय नमः

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन



पूर्वाञ्चल संयुक्त मंत्री
जमुना हेडा

“सत्सदी तदन्”

प्रेम जीवन का द्वायार, शिक्षा, तुल्यता, संस्कार

२३, विजय कुमार मुखर्जी लेन, (पानी टंकी के समीप)
सलोकिया, हावड़ा - ४११ ९०६, मो० ९४२३० ३६८२६

Email : jamuna.heda@gmail.com



दिनांक : १५.१०.२०१५

प्रिय बहन,
श्रीमती गिरिजा सारडा

जय महेश ! नेपाल माहेश्वरी महिला संगठन ने अपनी संस्कृति को बढ़ावा देने हेतु समय समय पर कई पुस्तकों का प्रकाशन किया है। जीवन के १६ संस्कार में से कुछ संस्कारों को विधि विधान से कैसे अपनाकर, अपनी संस्कृति को धरोहर रूपी “जीवन संस्कार” पुस्तिका में प्रकाशित करने की संगठन द्वारा कोशिश बड़ी सराहनीय है। हमारी आने वाली पीढ़ी ज्यादा से ज्यादा लाभान्वित हो सके यही इस पुस्तक की सार्थकता होगी। विशेष शुभकामनाओं के साथ...
जय वन्दे !

धन्यवाद !

जय महेश !

जमुना हेडा
पूर्वाञ्चल संयुक्त मंत्री
अ०भा०मा०म०संगठन



प्रिय गिरिजा जी,
सादर नमस्ते,

आपने विराटनगर (नेपाल) में मेरा कुकरी शो रखा था तब मैं आपके साथ तीन दिन रही। उस समय आपके स्वभाव, आचार-विचरों से मैं बहुत प्रभावित हुई। उस दरमियान आप एक अभिनव संकल्पना के साथ किताब प्रकाशित करने की तैयारी कर रही थीं। मुझे भी वह संकल्पना बहुत ही अच्छी और उपयुक्त लगी।

हमारा राजस्थानी समाज बहुत ही रुद्धीवादी समाज है। हम हमारे पारंपारिक संस्कारों को बहुत ही आत्मियता से जतन करते आए हैं। हमारे यहाँ जीवन से ले कर मृत्यु तक हर संस्कार का विशेष महत्व होता है जिसके पालन से हमे मानविक संतोष मिलता है। पारंपारिक तरीके से घर के बुजाओं के मार्गदर्शन में यह संस्कार संपन्न होते हैं। समय-समयानुसार इनमें थोड़े बहुत बदलाव जरूर आए हैं।

आजकी नई पीढ़ी व्यस्तता के कारण इन संस्कारों को थोड़ा भलने लगी है। लेकिन समय-समय पर उन्हें भी इन सभी वातों को करने की चाहत होती है। उनके लिए आपकी किताब “जीवन संस्कार” एक मार्गदर्शक का काम करेगी, यह आशा ही नहीं अपितु विश्वास है। हर घर के संग्रह में यह किताब जरूर सम्मिलित होगी। इस रूप में आप एक बड़ी सामाजिक जिम्मेदारी को पूरा कर रही हैं। इस बात की मुझे बहुत खुशी है।

आपकी इस किताब के लिए बहुत शुभकामना
शोभा इन्दानी





अध्यक्ष

शंकर कुमार शारदा

राजविराज-४, सपारी (बेपाल)
फोन: ०३१-५०३४१ (O) ५२०१६४ (R)
मो. ९८५२८२०६०२ / ९८०१५२३०५६
E-mail: sarkar.sarda53@gmail.com

नेपाल माहेश्वरी परिषद

(स्थापित : वि.सं. २०५४)

केन्द्रीय कार्यालय : विराटनगर, (नेपाल)

महासचिव

दरबारी बाहेशी

दिव्यपेती दीप, विराटनगर-२ (बेपाल)
फोन: ०२-५२८५४९/५२४२२० मो. ९८५२०२०६६१
E-mail: suryabib@gmail.com
bahetibl@gmail.com

कार्यसभिति-पंचम सत्र

उपायक्षम

नागरिकाल राजी-काठमाडौं
मो. ९८०३५०५३५०
लक्ष्मीनारायण तारादिवा-विराटनगर
मो. ९८५२०२२१६१

कोषायक्षम

गोपिनेत्रकुमार रोडी-इलहाबाद
मो. ९८५२०२११३२

संचालक सचिव

नरेन्द्र गुराहारी-शिवशर्दै
मो. ९८५२६७११२९

सेवा

सोहनलाल दामा-नारायणनगर
मो. ९८५४५१६३०९
गणेश शारदा-लाहाल
मो. ९८५२८२७१६१

सांकेतिक सचिव

द्वयपालाल राजी-विराटनगर
मो. ९८५२०२०२०२१
दुर्माल राजी-काठमाडौं
मो. ९८५१०२३४४
आशोक मास-विराटनगर
मो. ९८५२०२०३०९
कृष्णकुमार राजी-विराटनगर
मो. ९८०२३००४२१
गोपिनेत्रकुमार काठमाडौं-राजदिवाज
मो. ९८५२८२०२००९
वर्षपिंशीर नुस्खाङ्की-काठमाडौं
मो. ९८५१०४५८८
श्रीमिद्यास राजी-विराटनगर
मो. ९८४२१६४६०९
जिल्क राजी-विराटनगर
मो. ९८५२०२०६४४
मालालक राजी-काठमाडौं
मो. ९८४१२१७८७१
अशोक रोमाल-विराटनगर
मो. ९८०२७००१४७
राजकुमार अल-काठमाडौं
मो. ९८५१०६८९८८
श्रीनारी जिल्क राजी-विराटनगर
मो. ९८५२०२३२३७
ओमप्रकाश राजी-विराटनगर
मो. ९८५२०२३३१

सदस्यालयकारी

बुजगोपाल तोष्णीवाल-काठमाडौं
मो. ९८५१०६८४४५
घलहाल राजी-विराटनगर
मो. ९८४२०२०४५७
रमेश तारादिवा-काठमाडौं
मो. ९८५१०४३७४

नेपाल माहेश्वरी देवा कोष संसोकक
युगल फिल्म राजी-विराटनगर
मो. ९८४२२७८८१५

पत्र संख्या :

मिति: २०/६/२०६२

श्रीमति निरिजा शारदा

राष्ट्रिय अध्यक्ष

नेपाल महेश्वरी महिला संघठन

विराटनगर



नेपाल महेश्वरी महिला संघठन के द्वारा प्रकाशित "जिवन संस्कार" के माध्यम से जल्म से लेकर सरण तक के संस्कार के बारे में आपके प्रतिका द्वारा समाजको आवश्यक जागरकारी देवे हेतु पुस्तिका निकाल कर बहुत ही पूण्यका काम किया जिसके लिए नेपाल महेश्वरी परिषद के हार्दिक शुभ कामना एवं च्याहाँ देवा चाहाहा हु ।

परिषद घटक के स्पष्ट आपोलोगे हमेशा अग्रणी भूमिका निभाइ है । इस प्रतिका के मार्फत सभी समाजके बन्धुओं को आवश्यक संस्कार के बारे में जाकरारी देवे हेतु बहुत धन्यवाद एवं आशा है भविष्यमें भी अनमोल कार्य करने की क्षमता भववाव महिला संघठन से प्राप्त हो इस जाशा के साथ ।

जापका ही

(शकर कमार शारदा)

अध्यक्ष

● संगठन- संस्कार- सेवा- समुन्नती ●

● सुविधार- जो अपने दिए जियाम नहीं बनाता, उसे दूसरों के बिचमों पर घलना पडता है ।

अनिता सोनी

नि. वर्तमान अध्यक्ष, नेपाल माहेश्वरी महिला संगठन,
राष्ट्रिय संयोजिका, वेबसाइट समीक्षा, अधिकारी भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन
१३१, मेनरोड उत्तर, विराटनगर - ९, नेपाल। E-mail : anitams2001@yahoo.com



प्रिय बहन गिरिजाजी सारडा,
जयश्री कृष्णा ।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुवि कि नेपाल माहेश्वरी महिला संगठन
"जिवन संस्कार" सम्बन्ध पुस्तक प्रकाशित कर रही है। यह
पुस्तक सभिके लिए बहुत हि बुहुमल्य व उपयोगी सावित होगी।

संगठन एक फुल की तरह है,
जिसमें विभिन्न पत्तियाँ एक साथ रहती हैं।

इसलिये हम संगठित हैं,
संगठित होना ही हमारी विजय है।
संगठन हमेशा संगठित रहें यह हमारी कोशीश रहनी चाहीये।

नेपाल माहेश्वरी महिला संगठन निरन्तर आगे बढ़ते रहे, इन्हि
भावनाओं व कामनाओं के साथ इसके प्रकाशन हेतु मेरी ढेर सारी
शुभकामनाएँ ।

स्नेह अभिवादन ।

Anita Soni
(अनिता सोनी)



“महिलाओं मे जागृति, समाज व राष्ट्र की उन्नति”

नेपाल राष्ट्रिय मारवाड़ी महिला संगठन

(अन्तर्गत-नेपाल राष्ट्रिय मारवाड़ी परिषद)

कोट्टेद्वय कार्यालय, विराटनगर



अध्यक्ष

श्रीमती रचना राठी

आगमनी शोधालोक इंडिपन्डेंट प्रा. लि.

लिम्पेनी, विराटनगर-३

फोन : ०१२-५३०६०७४

मो. ९८४०२६६६४

E-mail - rachnarathi03@gmail.com

महालिंगिक

श्रीमति प्रभा ओसवाल (महानोत्तम)

श्री स्वातंत्र्य इंटरप्रैजेज

बाटारोड, विराटनगर-१२

फोन : ०१२-५३०६०८८

मो. ९८४०२६६६४

विवरणात्मक अध्यक्ष

श्रीमति सुमीला मोल्हा

विराटनगर

फोन : ०१२-५३०६०८८

मो. ९८४०२६६६०८

उपाध्यक्ष

श्रीमती विरेण संवद्दे

कामगाड़ी

फोन : ०१२-५३०२६६८१

मो. ९८४०२६६२११

श्रीमती मीरा खेत्राल

विराटनगर

फोन : ०१२-५३०२६१८

श्रीमती निमाला जाँशी

मन्दिरपुर

फोन : ०१२-५३००८०५०

मो. ९८४०२६२८५५

कोषाध्यक्ष

श्रीमती मरला सेठिया

विराटनगर

फोन : ०१२-५३०८१

रातिव

श्रीमती यमुना तापाडिया

कामगाड़ी

फोन : ०१२-५३२२६००

मो. ९८४०२६२८३८

श्रीमती अनु जैन

कुमावती

फोन : ०१२-५३०१८

मो. ९८४०२०२२१८

संगठन सचिव

श्रीमती सुनिता शर्मा

विराटनगर

फोन : ०१२-५३२२३३०

मो. ९८४०२६२८३८

प्रधान सचिव

श्रीमती मन्दु शारदा

शारदावाज

फोन : ०१२-५३०२१८

मो. ९८४०२०१०२४

दिनांक : १ मार्च २०१६

विराटनगर, नेपाल

अध्यक्षीय कार्यालय



श्रीमती गिरजा साराडाजी,

अध्यक्ष

नेपाल माहेश्वरी महिला संगठन,

जय श्री कृष्ण ! आपके द्वारा प्रदत्त पत्रद्वारा जात हआ कि आप जन्म से मृत्यु पर्यन्त समाज के अनुरूप प्रचलित सोलह सस्कारों की जानकारी तेजु पुस्तक प्रकाशन कर रहे हैं। आज हमारी संस्कृति के अनुरूप पम्पमाझाँ, सस्कारों का निवेदन एक गहरी चर्नात्मा है। एकल परिवार में बुज्जी की गैरि भौजिदी की समस्या में हमें हमारी परम्पराओं को सुझात रखना बहुत आवश्यक है। सम्मुख नेपाल की मारवाड़ी महिला समाज आपको आपके द्वारा शतप्रयास के लिए शारुवाद देता है। मंदिर यह शमकासना है कि आपके द्वारा प्रकाशीत यह पुस्तक हमारी संस्कृति एवं पम्पमाझाँ को जीवीत रखने के साथ ही आज की युवा पीढ़ी के लिए मार्गदर्शन की भूमिका निभाएगी।

देह सारी शुभकामनाओं के साथ ।

रचना राठी

अध्यक्ष

R. Rathi

नेपाल राष्ट्रिय मारवाड़ी महिला संगठन



गोमती राठी

नेपाल माहेश्वरी महिला संगठन
संस्थापक अध्यक्ष

अखिल भारतवर्षीय महेश्वरी महिला संगठन
संयुक्त सचिव पूर्वाञ्चल २०१० से २०१३

पो.ब.नं. २७, विराटनगर, नेपाल
फोन : ००१७७-२१-४६२४७६
फैक्स : ००१७७-२१-४६३२५६
मो. : ९८५२०२००७३८ (नेपाल)
९३८५८६१४२८ (भारत)
ई-मेल : getnaresh@hotmail.com

श्रीमति गिरिजाजी सारडा
अध्यक्ष नेपाल माहेश्वरी महिला संगठन
विराटनगर।

शुभकामना



प्रिय बहन सादर जयश्री कृष्ण,

आपने अपनी अध्यक्षता में सामाजिक, धार्मिक, स्वास्थ्य सम्बन्धी काफी सराहनीय कार्य किये हैं। उनमें एक ये नईकड़ी जुड़ने जा रही है जिसका नाम है जीवन संस्कार।

आज के इस व्यस्त जिवन में एकल परिवार होने कि बजह से बहनों को अपने रिती रिवाज बताने वाला या समजानेवाला कोई न ही है। सामूहिक परिवार में तो बड़े बुजुर्ग अपने ही सब कार्य संभाल लेते हैं पर आज बच्चे अपनों से दुर रहते हैं। उनके लिये तो ये पुस्तक काफी कार गर सावित होंगी व आप की मेहनत रंग लायेगी आपको व आपके पूरे संगठनको बहुत-बहुत बधाई।

हार्दिक शुभकामना

मेघ भर गया जल से तो वरसेगा।

फुल भर गया महक से तो महकेगा॥

नारि शक्ति नई चेतना को लायेगी।

घर समाज और राष्ट्र को चमकायेगी॥

शुभेच्छा

गोमती राठी
संयुक्त सचिव (पू.)
अ.भा.मा.म.संगठन



उमा राठी

कार्य समिति सदस्य

अखिल भारतवर्षीय नेपाल माहेश्वरी महिला संगठन

जय गंगा निवास, अतिथि सदन के नजदीक,

मेन रोड, विराटनगर (नेपाल)

मो. ९८४२३७०३७



प्रिय बहन गिरिजा जी सारडा,
जय महेश।

नेपाल माहेश्वरी महिला संगठन के तृतीय सत्र के कार्यक्रमों में प्रकाशन के रूपमें
एक और कटी जुड़ने जा रही है, जो कि अत्यन्त प्रशंसनीय है।

जिस प्रकार अन्य कार्यक्रमों में आशातीत सफलता मिली, आशा हैं उसी प्रकार
सामाजिक रीति-रिवाजों से सज्जित यह पुस्तक भी पठनीय व संग्रहणीय होगी।

नेपाल माहेश्वरी महिला संगठनका छोटे से लेकिन अत्यन्त उल्लेखनीय इतिहास को
निरन्तरता देते हुये यह पुस्तक इसके वर्तमान एवं भविष्य में एक मार्गदर्शक ग्रन्थ के
रूप में चार चाँद लगाएगी।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ
आपकी
उमा राठी



॥ जय महेश ॥

नेपाल माहेश्वरी महिला संगठन

केन्द्रीय कार्यालय : विराटनगर, नेपाल
(स्थापित: बि.सं. २०६३)

जहारसवित

ललिता जाजू

गोकुल थाम, मेनरोड, तिनपैनी
विराटनगर

फोन: ०२१-५२३८८२, ९८५२०२३१५९ (M)

संगठन-प्रगति की ओर

सतत कर्म करना मुकद्दम बनाना

मेरी बहनों और बेटियों तुम सदा मुझ्हराना,

हमारी प्रथम अध्यक्ष श्रीमती गोमती देवी राठी के प्यार और दुलार के साथ

सस्था ने अपने शुरूआती दौर का सफर किया,

चली पेट में बो बेटी, तो थी धड़कन सुनाती,

बढ़ी चांद जैसी वो प्यारी सी बेटी तो थी जमाने भर की खुशियाँ हमने समेटी,

हमारी द्वितीय अध्यक्ष श्रीमती अनीता जी सोनी के सुदृढ़ कन्धों पर सस्था ने बचपन से कदम आगे बढ़ाते हुए युवावस्था में प्रवेश किया,

युवा होती हमारी बेटी कि खनकती हंसी थी, चहकती थी उसकी बोली

सजाती थी आँगन, वो बना कर रंगोली

लेकिन हमारी नई अध्यक्ष श्रीमती गिरिजा साराडा और उनकी टीम का लक्ष्य या हमारी बेटियों और बहनों को ना सिर्फ सबल बनाना, बल्कि उन्हें दुनिया से रूबरू करना।

इसी उद्देश्य को सामने रख कर, हम आगे बढ़ चले

प्रत्येक वर्ष गर्मी में शरवत बनाकर स्वावलम्बन कि डाली नींव,

काठमांडू में सामाजिकता के महत्व को बताने, परिषद् एवं युवा के संग किया विचार मंथन

इन्टरनेट कि समर्भी महता और ईमेल से संस्था को जोड़ा

सोशल नेटवर्किंग का भी किया उत्पोदण, फेसबुक से जोड़े ६०० माहेश्वरी सदस्य

अपनी गतिविधियों से वाकिफ कराने के लिए बनाया फेसबुक पेज

क्लाइटरेण्ट्री गुण बना कर महिलाओं और सदस्यों को जोड़ा

परिवार और दामपत्य के टूटते स्वरूप से कैसे बचा जाए, समाज के सभी अंगों के साथ टाक शो एवं नाटक के माध्यम से की वहत चर्चा

विश्वकर्मा और दिवाली पर वर्ष दर वर्ष, पूरे शहर के लिए मिठाई बनाकर घर से ही व्यापार कैसे हो, कि प्रेरणा दी बहनों का बच्चों के लिए करियर कि महत्ता को समझते हों काउउसलिंग टीम को बुलाया हमने

बच्चों-बड़ों, सभी कि हैंड राइटिंग एनालिसिस भी करवाया हमने

युवा बहनों और मध्य आयु बहनों के लिए डायरीशियन के साथ टाक शो में सही भोजन की महत्ता से रूबरू कराया

गाँव में जा कर ग्रामीणों के लिए चलाया निश्चल चिकित्सा शिविर

वृक्षारोपण कर प्रकृति के प्रति किया अपने दायित्व पर्ण

भारतीय जनता पार्टी से आये श्याम जी जाज, ज्ञान दे भारतीय मूल कि महिलाओं के अधिकारों पे की चर्चा हमने

बायोडाटा सम्मलेन किया धरान और काठमांडू, आय योग रिश्ते मिले ध्येय बनाया हमने

संस्कार मिले बच्चों को भी, आई निर्जला एकारसी, पांचाली मंदिर और व्याश्रम में ठंडाई एवं बाल्टी का किया वितरण

पुना से श्रीमती शोभा जी इन्दानी ने आ कर दिया, आस पास के सभी छोटे छोटे बेटों की बहनों और बेटियों को पाक कला का प्रशिक्षण

बम्बई से आई हमारी एक और बेटी, जिसने चिकित्सा जगत में एक नए प्रोफेशन से रूबरू कराया हमारी बेटियों को

डा. पूनम साराडा शर्मा और डा. ललित शर्मा ने आकर औरोपास्टी कैप लगाया

हमारी बहनों ने देश के कोने कोने में जाकर विजय का परचम फहराया

चाहे हो सूरत, मदास, बंगलौर, या फिर हो शिर्डी, अहमदाबाद, हैदराबाद या गौहाटी

हर जगह हमारी टीम पहुंची और अपनी छाप छोड़ते हुए बहुत से पुरस्कार ले लोटी

अब सम्मुख है हम आपके, एक नई कोशिश के साथ

आशा है जीवन संस्कार आप सभी को मार्गदर्शित करेगी.



जय महेश
ललिता जाजू



॥ जय महेश ॥

नेपाल माहेश्वरी महिला संगठन

केन्द्रीय कार्यालय : विराटनगर, नेपाल
(स्थापित: वि.सं. २०६३)

अध्यक्ष

गिरिजा सारडा

सारडा ग्रुप, पो.ब.नं. ११६

घरन रोड, विराटनगर-१३

फोन : ०२१-५२१७४० (O), ०२१-५३२६०७ (R)

9८५२०२३२३७ (M)

E-Mail: nmms_president@gmail.com

अध्यक्षीय मंत्र्य



जिन्दगी के भी अजीव रंग हैं, नमक है ज्यादा-चीरी कम है
कभी रंगों से भरी, कभी बे रंग है जिन्दगी

ऐसी ही एक बे रंग घड़ी में, जहाँ किसी अपने को खो कर दिल उदास था, वहाँ, बहुत से अपनों वाले संयुक्त परिवार के ना होने से अपने “पाप” की अंतिम विदाई ठीक से कर पायेंगे या नहीं, ये डर भी था।

आज के एकल परिवार संस्कृति और शुरू से बाहर पढ़ाई करने से, मुझ जैसी युवा पीढ़ी अक्सर इस कशमकश में आ खड़ी होती है।

जब हमारी कार्यसमिति बैठक में मैंने अपनी आप बीती बताते हुए, अपने बुजुर्गों और टीम से ये आग्रह किया कि मैं ना अपने बड़ों से समझ कर, जीवन संस्कारों पर उनके अनुभवों को लिपिबद्ध कर लिया जाए, तो सभी बेकिभक्त तैयार हो गए।

मैंका खुशी का हो या गम का, हमारे समाज में हर एक संस्कार का अलग महत्व है। इन्हीं संस्कारों को हमारी दाढ़ी, भुआ, बड़ी माँ, काकी, फूफाजी, जेठानी इत्यादि समाज के वरिष्ठजनों के साथ बैठ कर जानने और लिपिबद्ध करने का जो अवसर मुझे और हमारी पत्रिका प्रभारी श्रीमती अमिता पेडिवाल को मिला उससे ना सिर्फ हमारी जानकारी बढ़ी, बल्कि सामिजिक आचार विचार के बारे में हमारी समझ भी बढ़ी।

सिर्फ मैं ही नहीं बल्कि हमारी पूरी टीम हार्दिक आभारी है हमारे सलाहकार बने वरिष्ठजनों श्री घनश्याम जी राठी, श्रीमती सरस्वती देवी राठी, श्रीमती सीता देवी राठी एवं श्रीमती रंजना जी मंत्री का, जिन्होंने इस ज्ञान को लिपिबद्ध करके पूरे समाज के साथ बांटने का गौरव हमें प्रदान किया।

आभारी है श्रीमती शोभा जी इन्द्रानी का, जिन्होंने ने एक बार में ३५०० लोगों को एकसाथ कुकिंग सिखा कर, ना सिर्फ लिम्का बुक आँफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में नाम दर्ज करवा के माहेश्वरी समाज का नाम ऊँचा किया, बल्कि हमारी बहनों को नेपाल आकर पाक कला के राज बताये और हमारी इस पुस्तक का नामकरण भी किया।

समर्पित है जीवन संस्कार, हमारे पुरुषों को जिन्होंने इतना समृद्ध संस्कार रूपी खजाना हमारे लिए बनाया।

जीवन के हर मोड़ पर, सुनहरी यादों को रहने दो
जीवन के हर संस्कार में सतुष्टि की मिठास रहने दो
ये अंदाज़ है नेपाल माहेश्वरी महिला संगठन का
ना खुद रहो संस्कारों से अनजान, ना दूसरों को रहने दो।

जय महेश !
गिरिजा सारडा

शुभकामना संदेश



हिन्दु संस्कृति बहुत विलक्षण है। मनुष्य मात्र का सुगमता से एवं शीघ्रता से कल्याण कैसे हो- इसका जितना गम्भीर विचार हिन्दु संस्कृति में किया गया है, उतना अन्यत्र नहीं मिलता। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त मनुष्य जिन-जिन वस्तुओं एवं व्यक्तियों के सम्पर्क में आता और जो-जो कियाएँ करता है, उन सबको हमारे क्रान्तिदर्शी ऋषि-मुनियों ने बड़े वैज्ञानिक ढंग से सुनियोजित मर्यादित एवं सुसंस्कृत किया है। ये विधान एवं नियम अंधविश्वास या रुद्धियाँ नहीं हैं वल्कि शारीरिक, मानसिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से अर्थपूर्ण हैं।

हमने इस विशाल विषय को इस छोटी सी पुस्तक “जीवन संस्कार” में समेटने का यथासभंव प्रयत्न किया है। प्रस्तुत पुस्तक में मनुष्य के जीवन से लेकर मृत्युपर्यन्त तक होने वाले हिन्दु रीति रिवाजों के बारे में पूर्णत जानकारी दी हुई है।

वर्तमान युग में जहाँ काम काज की व्यस्थता के कारण इन रीति-रीवाजों की जानकारी नहीं होती इस पुस्तक के माध्यम से परम्परा जीवित रखने का यह छोटा सा प्रयास है। ताकि हमारी भावी पीढ़ी सभी रीति रिवाजों से भली भाँती परिचित हो।

मैं आभार व्यक्त करना चाहती हूँ हमारी अध्यक्षा श्रीमती रिरिजा जी सारडा का जिनके साथ मुझे इस पुस्तक में पुस्तिका प्रभारी के रूप में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ।

आशा है आम सभी को हमारा ये प्रयास पसन्द आयेगा

जय महेश

अमिता पेड़ीवाल

॥ जय महेश ॥

परिवार में प्रचलित रीति-रिंगाज

भारतीय कृषियों एवं धर्मशास्त्रों में संस्कारों की आवश्यकता बतलाई गई है। उसके लिए कुछ ऐसे उपचारों का आविष्कार किया है, जिनका प्रभाव शरीर तथा मन पर ही नहीं वरन् सूक्ष्म अंतःकरण पर भी पड़ता है। संस्कार वह उपचार हैं जिससे मनुष्य से मानव हो जाता है, अर्थात् वह सभ्य हो जाता है। संस्कारित न होने के कारण मनुष्येतर प्राणी असभ्य होता है।

संस्कारों का यह प्रावधान विज्ञान सम्मत ही है। दुनिया की सभी संस्कृतियां मनुष्य को अपनी-अपनी तरह से संस्कारित करती हैं। संस्कारों से आत्मा, अंतःकरण शुद्ध होता है। संस्कार मनुष्य को पाप और अज्ञान से दूर कर आचार-विचार और ज्ञान-विज्ञान से संयुक्त करते हैं, ताकि मनुष्य अनुशासित जीवन-यापन कर सकें।

जिस प्रकार अनेक रंगों का उचित उपयोग करने पर चित्र में सुन्दरता, आकर्षण एवं पूर्ण वास्तविकता आ जाती है, उसी प्रकार शास्त्रानुसार अपने संस्कार करने से मनुष्य की बुद्धि और मन में सात्त्विकता एवं सर्वजनप्रियता का संचार होता है तथा उससे वास्तविक सुख-शांति का अनुभव होता है। जिस तरह प्रत्येक धर्म या संस्कृति में निश्चित संस्कार हैं, उसी तरह हिन्दू धर्म व्यवस्था में संस्कारों की एक निश्चित संख्या है।

जीवन को मंगलमय बनाने की प्रक्रिया का नाम संस्कार है। मानव के चरित्र निर्माण और आध्यात्मिक उन्नति के लिए संस्कार आवश्यक है। ये मानव जीवन के मूल स्रोत हैं। संस्कार का सम्बन्ध मानव के कर्म और व्यवहार से है, मानव को जन्म के समय जैसे संस्कार मिलते हैं, प्रायः वैसा ही भावी जीवन बनता है। इसीलिए हमारे शास्त्र में सोलह संस्कारों का वर्णन है। इसमें से कुछ संस्कार जन्म से पूर्व किये जाते हैं। कुछ जीवन में और कुछ मृत्यु के पश्चात भी किये जाते हैं।

आज के समय में हम संस्कारों को भूल गये हैं इसी कारण विभिन्न

समस्याओं में उलझे रहते हैं, अपने शास्त्रों द्वारा निर्धारित संस्कारों को करने पर ही मानव सच्चा मानव बन सकता है।

महर्षि श्री व्यासजी द्वारा प्रतिपादित प्रमुख षौड़स (सोलह) संस्कार इस प्रकार माने गये हैं-

१. गर्भधान, २ प्रवसन, ३. सीमन्तोन्नयन, ४ जातकर्म, ५ नामकरण, ६ निष्क्रमण, ७ अन्नाप्राशन, ८ चूडाकर्म, ९ कर्णभेद, १० उपनयन, ११ शिक्षा, १२. समावर्तन, १३ विवाह, १४ वानप्रस्थाश्रम, १५ सन्यासश्रम, १६ अंत्येष्टि संस्कार।

अगर इन संस्कारों की आज के इस भीषण युग में व्याख्या कर उनकी विवेचना करें तो यह अर्थ सामने आता है कि इन संस्कारों को आयु एवं आयु सम्बद्धी शारिरिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर ही श्रृंखलाबद्ध किया गया है। यहां मुख्य रूप से तीन संस्कार हैं - १ जन्म, २ विवाह, ३ अंत्येष्टि (दाह संस्कार) जिसमें परिजनों, सम्बंधियों एवं समाज की विशेष भागीदारी रहती है, ताकि समरूपता तो बनी ही रहे तथा उनका अभिप्राय भी समझा जा सके।

त्यौहार की तरह रीति रिवाज भी हर परिवार में अलग-अलग तरह से मनाये जाते हैं। हमारे रीति रिवाज हम कैसे मनाते हैं, जन्म से मृत्यु तक इन बातों की जानकारी हम यहाँ देने की कोशिश कर रहे हैं।

हमारे परिवार में बच्चे के जन्म से पूर्व व पश्चात कुछ प्रथाएं हैं।

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	पेज नं.
१	जठमोत्सव संस्कार.....	3
२	विवाह संस्कार.....	22
३	गृह प्रवेश	45
४	अन्त सुधार.....	53
५	बडे व्रत.....	69
६	दान धर्म.....	96
७	नित्य नैमित्तिम कर्म.....	108
८	गीत प्रतियोगिता.....	124



जन्मोत्सव संरक्षण



गर्भावस्था उपरांत सामान्य जानकारियाँ

किसी भी नारी का नारीत्व तभी पूर्ण रूप से श्रृंगारित होता है जब विवाहोपरांत वह मातृत्व के अलंकार सें अलंकृत हो। माता बनना उसके जीवन का सर्वाधिक आनंददायी क्षण होता है। नारी शिशु को जन्म देकर पूरे परिवार को एक अनुपम उपहार देती है। विवाहोपरांत पति के सहयोग से प्रजनन क्रिया चक्र आरंभ होता है। शिशु का विकास जन्म के बाद से नहीं अपितु माता के गर्भ से ही शुरू हो जाता है व इस विकास का प्रभाव शिशु के पौढ़ावस्था तक उस पर हावी रहता है। अतः शिशु के अच्छे स्वास्थ्य, की नींव माता को गर्भकाल से ही डालनी चाहिये। शिशु का स्वास्थ्य वजन, कद-काठी, सुडोल मांसपेशियाँ मजबूत हड्डियाँ रोग प्रतिरोधक क्षमता, मानसिक सार, बुद्धिलब्धि सबकुछ माता के खान-पान, स्वास्थ्य एवं वातावरण पर निर्भर करता है। गर्भ के दौरान यदि माँ प्रसन्नता भरा जीवन व्यतीत करती है तो आनेवाले बच्चे का व्यक्तित्व भी खुशहाल होगा। माता के सोच-विचार का प्रभाव भी शिशु पर पूर्णरूपेण पड़ता है। इसलिये गर्भवती स्त्री को अपने गर्भावस्था में अच्छे खान-पान के साथ अच्छी धार्मिक पुस्तक का अध्ययन करना चाहिये, ईश्वर में ध्यान लगाना चाहिये। सुखमयी एवं यादगार गर्भावस्था के लिये महत्वपूर्ण जानकारियाँ दी गई हैं:-

गर्भावस्था को तीन हिस्सों में बांटा गया है

१ प्रथम त्रिमास (१-३ महिने)

२ द्वितीय त्रिमास (४ से ६ महिने)

३ तृतीय त्रिमास (७-से ९ महिने)

गर्भधारण की सामान्य पहचान है निश्चित तिथि के दस दिन पश्चात् तक मासिक धर्म न हो, इसके अलावा सुबह के समय जी- मिचलाना जिसे **Morning Sickness** भी कहते हैं, बार- बार पेशाब होना, थूक अधिक बनना इत्यादि। यद्यपि से सब लक्षण गर्भाधान की भावना को दर्शाते हैं परन्तु उपरोक्त लक्षण प्रदर्शित होने के पश्चात् स्त्री रोग विशेषज्ञ से जाँच करानी चाहिये।

चिकित्सक से अपनी पूर्व विमारी के बारे में कुछ भी न छिपायें व सही विवरण दें। यदि स्त्री अपनी बीमारियों को छिपाती है तो उसका परिणाम शिशु को भुगतना पड़ सकता है। प्रसव के पूर्व कुछ आवश्यक जाँच परीक्षणों द्वारा इस बात को सुनिश्चित किया जाता है कि गर्भवती स्त्री एवं शिशु का स्वास्थ्य गर्भकाल से लेकर प्रसव तक उत्तम बना रहे। इस दौरान निम्न बातों की जाँच की जाती हैं- (१) वजन, (२) ब्लडशुगर, (३) यैनरोग, (४) शिशु विकास (५) रक्तचाप (६) पेशाब (७) रक्त का स्तर (८) हृदय एवं फेफड़े के रोग।

गर्भधारण के बीस सप्ताह बाद टिट्नेस टाक्साईड का टीका लगवायें। दूसरा टीका पहले टीके के ६ सप्ताह बाद लगता है। गर्भधारण के दौरान पथ्य का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिये। अधिकतर महिलायें खान-पान के विषय में जरा भी ध्यान नहीं देती हैं वे अपने भोजन की पौष्टिकता, नियमित दवाईयों के सेवन, विश्राम, परिश्रम एवं व्यायाम के संतुलन के महत्व को नहीं समझती हैं। गर्भवती महिला जो खाती-पीती है वह खून में मिलकर (अम्बिलिकल कार्ड) के माध्यम से शिशु तक पहुंचता है। आहार में पौष्टिक तत्वों की कमी हो तो गर्भवती स्त्री से उत्पन्न शिशु कमजोर, रक्ताल्पता का शिकार होगा व भविष्य में उसे और भी बीमारियां होने की संभावना हो सकती हैं। माँ का दूध शिशु के लिये अमृत होता है इससे शिशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और दूध माँ द्वारा खाये गये पौष्टिक आहार पर ही निर्भर करता है। यदि गर्भवती स्त्री को पौष्टिक आहार पूरी तरह न मिले तो उसे दूध कम होगा और बच्चे को उचित मात्रा में दूध नहीं मिलेगा। आहार की पौष्टिकता का अर्थ यह नहीं कि आप धी, मेवे आदि वसायुक्त पदार्थों का सेवन अधिक मात्रा में करें क्योंकि इस दौरान आपको अपने वजन पर नियंत्रण रखना भी अत्याधिक जरूरी है।

गर्भवती स्त्री को अपने भोजन की मात्रा धीरे-धीरे बढ़ानी चाहियें। एक बार में अधिक भोजन करने की अपेक्षा दिन में ५-६ बार खाना चाहियें। आहार में छिलके वाली दाल, पत्तेदार सब्जियाँ, मौसमी फल, दूध, सोयाबीन, मूँगफली, सलाद, आयरन युक्त खाद्यपदार्थ जैसे अनार, अंजीर किशमिश इत्यादि का सेवन अधिक मात्रा में करना चाहिये। रेशेदार खाद्यपदार्थ अधिक मात्रा में लें ताकि कब्ज

न हो।

पथ के अतिरिक्त रात्रि द घंटे नींद एवं दोपहर में डेढ़ घंटे अवश्य आराम करें। चिकित्सक के परामर्श नियमित हल्के काम से परहेज न करें। नियमित सैर पर जायें। अपने शरीर की साफ सफाई पर ध्यान दें।

गर्भवता में खान-पान की विशेष जानकारी :-

१. सुबह खाली पेट दो भीरो बदाम, नारियल व मिश्री दूध के साथ दें जिससे बच्चे की नेत्र ज्योति अच्छी होती है।
२. एक चुटकी वंशलोचन का पाउडर नित्य दूध के साथ दें। इसमें कैलसियम होने के कारण हड्डियाँ मजबूत होती हैं।
३. एक चम्मच मलाई या मख्खन मिसरी के साथ दें।
४. गीला नारियल मिसरी के साथ खाने से बच्चे गोरे होता है।
५. अखरोट गर्भवती स्त्री को नित्य दें जिससे बच्चे का दिमाग तेज होता है।
६. संतरे का रस या संतरा खाने से विटामिन-सी मिलता है।
७. खाने के बाद दोनों वक्त सौफ खिलाएं।
८. नारियल (डाब) का पानी हर रोज पिलाएं।
९. गर्भकाल के प्रत्येक महिने में गर्भवती स्त्री का वजन १ कि. बड़ना चाहिए।
१०. आँठवे महीने से गर्भवती स्त्री को सुबह दूध में केशर, इलायची व दो चम्मच शुद्ध धी मिलाकर दें। साथ में १० बदाम भी दें। सोने से पहले मलाई व सूखे नारियल के लड्डु दें।
सुखे नारियल के लड्डु बनाने की विधि :- नारियल गोटे को मिसरी में पीस लें। फिर स्वादानुसार उसी में मिसरी भी पीस लें। उसी समय छोटे-छोटे लड्डु बना लें।
११. आँठवे नौवें महीने में चिकनाई-युक्त खाना दिया जाता है जिससे प्रसव में आसानी होती है।
१२. प्रसव के समय अस्पताल ले जाते समय प्रसूता को दूध में धी, केशर, इलायची डालकर पिलायें व राई के दाने समान थोड़ी मात्रा में अंबर पान में डालकर खिलायें।

विशेष सावधानी :-

- १ अगर पांव या शरीर में सूजन आ जाये तो नमक व शक्कर कम कर दें, और डाक्टर की सलाह लें।
- २ अनारस, पपीता, गोंद गर्भवती महिला को न खिलायें।
- ३ गर्भकाल के दौरान अगर ग्रहण आ जाये तो गर्भवती को ग्रहण नहीं देखना चाहियें। नारियल, सप्तधान, लोहे की चाबी, लाल कपड़े में बाँधकर घुटने के नीचे रखना चाहिये। नींद न लेवे व सरौता, कैची, चाकू, माला हाथ में न लें।
- ४ शिशु को जन्म देना एक जटिल प्रक्रिया है अतः गर्भावस्था एवं प्रसव के दौरान जटिलताओं से बचने के लिए स्त्री रोग विशेषज्ञ से परामार्श लें एवं उसके बताये गये निर्देशों पर भली-भांति अमल करें।
- ५ आँठवे महीने में रेल यात्रा न करें। यदि प्रसव दूसरे शहर में होना हो तो सातवें महीने में ही चले जायें।

साध

गर्भकाल के सातवे महीने (अगर किसी कारण वश सातवें महीने में नहीं हो सके तो आठवें महीने) में अच्छा दिन देखकर गर्भवती बहु की साध पुजाते हैं।

साध पीहर वाले लाते हैं, अगर किसी कारण वश पीहर से न आ पाए तो, बहु को ससुराल की तरफ से अच्छी साड़ी पहना कर, मेहन्दी मण्डवा कर एवं सातों सिन्नार कर बाजोट पर बैठाते हैं, (बहु की साड़ी व रुमाल हरी तथा गोटा लगी होनी चाहिए) साथ में बेटे को भी, माला पहनाते हैं, कुमकुम का तिलक करे मेवे से खोल भरते हैं। साध पूजन में गणेशजी की पूजा पश्चात खोल भरा जाता है। खोल में नारीयल नहीं डालते हैं। खोल में मेवे के साथ पाँच फल एवं आटा में हल्दी मिला कर उससे बने पाँच फल भी दिए जाते हैं। खोल बाँस के ड़गरे में बधारा जाता है। खोल भरने वाली स्त्री सुहागन होनी चाहिए। परिवार व समाज की सभी औरतों को बुलाते हैं, जापा के गीत गाये जाते हैं। पीहर से परिवार वाले आते हैं, कपड़े व सात तरह की मिठाई जिस में घेवर हो तो बहुत बढ़िया, लेकर आते हैं। घेवर या मिठाई बाँटी जाती है। फिर बहु को पीहर भेजते हैं, लेकिन ये जरुरी नहीं हैं। हम चाहें तो अपने घर पर भी रख सकते हैं। पीहर वाले भी खोल भरते हैं।



प्रसव पीड़ा-

प्रसव पीड़ा शुरू होने पर गुड़ व चावल की एक पोटली बना कर उसमे सात रुपैये डाल कर प्रसूता के ऊपर सात बार घुमा कर बेमाता का नाम ले कर प्रसूता के सिरहाने रखी जाती है। प्रसव उपरान्त नहावन के दिन उस पोटली को दैया को दे देवें।

बच्चे का जन्म-

बच्चे का जन्म होते ही हम घड़ी देखते हैं, घड़ी के समयानुसार पडिंतजी को बच्चे का नक्षत्र व पाया दिखाते हैं। अगर नक्षत्र हो तो सताइस दिन का नहावण होता है। चांदी व तांबे का पाया अच्छा माना जाता है। सोने व लोहे का पाया कड़क होता है, उसकी पूजा करवानी पड़ती है। लौह नक्षत्र- लोहे की कढाई में सोने की तुष व सरसों का तेल डाल कर जच्चा व बच्चा का मुंह उसमे दिखा कर ज्योतकी (डाकोत) को नहावन के दिन दिया जाता है।

(जन्म पश्चात्)

जन्मधूंटी-

सर्वप्रथम सोने की तांत में शहद लगाकर बच्चे की जीभ पर ॐ लिख दें। मान्यता है कि इससे बच्चा मेघावी एवं मृदु-भाषी होता है।

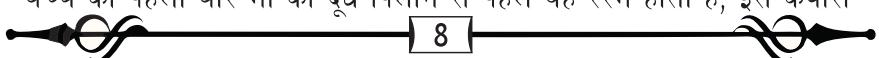
मधु प्राशन के पश्चात जन्मधूंटी दी जाती है। जन्मधूंटी गन्धारी या चन्द्ररयो के पत्तों का रस गुड़, अजवायन डालकर थोड़ा गर्म कर के शहद मिलाकर बच्चे के मुँह मे दिया जाता है। मधु प्राशन तथा जन्मधूंटी घर के किसी बड़े या समझदार व्यक्ति के पिलाने की प्रथा है।

थाल बजाना-

अगर लड़का होता है तो कांसी के थाल में साथिया मांड़ कर चांदी की हँसली या बेलन से घर के बुर्जग व भुवा बहनें बच्चा होते ही थाली बजाती हैं, व बधाई बांटते हैं। वाद मे बच्चे के घर आने के वाद पडित जी को समय दिखा कर फिर से थाली बजाते हैं, जिसकी आवाज बच्चे के कान मे पड़नी चाहिए।

आँचल खोलाई-

बच्चे को पहली बार माँ का दूध पिलाने से पहले यह रस्म होती है, इसे कंवारी



सुवासणी, नानदी, जेठुती, भतीजी, भानजी करती है, जो करती है उसे नेग देते हैं।
सामान : कच्चा दूध, कंघा, कंघे में बाल व पानी।

छठी-

छठी के दिन बच्चे को आटे, हल्दी और धी की लोई करते हैं। दही व हल्दी से माँ के केश की लट खोलते हैं। नहलाने के पश्चात बच्चे के हाथ-पाँव में नीला धागा बाँध देते हैं। रोली चावल जच्चा को दिया जाता है, जिससे वो स्वयं तिलक कर के बच्चे को आड़ा टीका लगाती है। जब बच्चे की छठी रात होती है, तब उसके सिर के पास कोपी व लाल पेन रखते हैं, ऐसा कहा जाता है कि विधाता छठी के दिन लेख लिखते हैं, यह कामना करते हैं कि विधाता इसका भविष्य उज्जवल हो ऐसा लिखना। कोपी पर कुमकुम के छीटें डालते हैं, स्वास्तिक बनाते हैं, सात टिकी लगाते हैं तथा पेन के मोली बांधते हैं। एक कटोरी में भात, चिनी एवं धी डाल कर रखे जाते हैं। बच्चे की माँ मेहन्दी लगाती है।

नहावण-

नक्षत्र वगेरह नहीं हो तो १०-११ दिन में अच्छा वार व मुहर्त देखकर बच्चे का नहावण करवाते हैं, उस दिन सुवा निकालते हैं, भगवान की पूजा भी उस दिन से शुरू होती है। बच्चे व बच्चे की माँ को गोमुत्र डाले हुए पानी से सिर धोकर नहलाते हैं, कोरे कपड़े पहनाते हैं। अगर पीहर में जापा हो तो ससुराल वाले और अगर ससुराल में जापा हो तो पीहर वाले आते हैं, जच्चा-बच्चा दोनों के कपड़े लाते हैं, पीले की साड़ी लाते हैं, वो ही पहन कर जच्चा नहावण पुजती है। नहावन के दिन चार कुंवरे लड़के मिल कर तनी बांधते हैं। नहावन पूजा के वक्त पलंग सूना नहीं छोड़ते, देवर नानदा या जेठूता पलंग पर बैठता है, उसे बाद मे नेग दिया जाता है। नहावन पूजा के वक्त जच्चा बच्चा को देवर नानदा या जेठूता पल्ला पकड़ के ले जाता है, उसे बाद मे नेग दिया जाता है। पण्डितजी राशि व चार नाम निकालते हैं, फिर घरवाले अपनी पसन्द का नाम निकालते हैं। सवा महिने के अन्तराल मे ४ बार सिर धोकर जच्चा मन्दिर जाती है, ग्यारस का व्रत करती है। तब रसोइ में हाथ लगाती है।

जलवा-

कम से कम इक्कीस दिन या सवा महिना में जिस दिन अच्छा मूरुत निकलता है, उस दिन बहु का जलवा पूजाते हैं। जलवा मे सर्वप्रथम ननद या जेठानी जच्चा को पीला पहना कर एवं बोरीया या माँगटीका लगा कर सिर गुर्थी करते हैं तथा लाख का चूड़ा हल्का गरम कर के पहनाते हैं। चूड़ा पहनाने वाली महिला एक चूड़ी खुद पहनती है। चूड़ा पहनने के पश्चात चांदी के लोटे पर स्वास्तिक बना कर उसमे पानी भर, आम का पल्लव रखकर, मोली बाँध कर एवं उस पर फल रख कर कलश तैयार करते हैं। उस कलश को जच्चा सर पर रख कर बाकी महिलाओं के आगे कुएं पर जलवा पुजने जाती है, कुएं से आते वक्त जच्चा पीछे व महिलाएं आगे रहती हैं। पहले से एक पोतड़े के चारों कोने व बीच में हल्दी से पीला कर के रखा जाता है, उसे अपनी साड़ी से टाँगकर जच्चा कुएं पर जाती है। गेहूं व चना उबाल कर घुघरी बनाते हैं व जलवा पूजने जाते वक्त थोड़ी सी घुघरी साथ लेकर जाते हैं। कुछ जगह भुवा के घुघरी ले कर आने का रिवाज है, भुवा घुघरी बनाती है तथा बच्चे के लिए सोने या चांदी के घुंघरु ले कर आती हैं।

कुआं पर नहीं जा सके तो नल के पास थोड़ा गोबर रख कर कुमकुम व मोली चढ़ाते हैं व कुएं या नल पर दूध की धार दिलवाते हैं।

इसके बाद घर की चार बड़ी औरतें ओढ़ने में कीड़ी डालकर उसे भुलाती हैं, फिर कीड़ी को निकाल कर उसमे बच्चे को रख कर सात बार भुलाते हैं।

सिरगुर्थी के पश्चात जच्चा के कमरे के द्वार के एक तरफ गोबर से स्वास्तिक व एक तरफ छाबड़ा बनाया जाता है, जिसपर चांदी का सिक्का चिपकाया जाता है, जो बाद में बच्चे की भुआ को दे दिया जाता है।

जच्चा घर में सभी बड़ों को प्रणाम करती है, जापे के गीत गाये जाते हैं।

शाम में जच्चा बच्चा किसी रिश्तेदार के यहाँ खाना खाने जाते हैं। जिनके घर खाना खाने जाते हैं वो बच्चे के सिर पर तेल लगा कर भेजते हैं व यथाशक्ति उपहार देते हैं।

सोने की सीढ़ी (निसरनी)-

सोने की सीढ़ी (निसरनी) बनवाते हैं। सीढ़ी घर के पण्डित को देते हैं। यह

दान पड़दादा-पड़दादी बनने पर चने की दाल सवा पाँच सेर एक पीतल की परात में रखते हैं। उसके ऊपर गुड़ की डली रखते हैं। पण्डित जी, पड़पोते द्वारा पूजा करवाते हैं। पड़दादा या पड़दादी का पाँच पड़पोते से निसरनी पर रखकर बीच में छुवाते हैं। गुरु या पण्डित यह दान लेता है। ऐसी मान्यता है कि सोने की सीढ़ी चढ़ने वाला व्यक्ति स्वर्ग में जाता है।

राती जोगा-

जिनके यहाँ रिवाज हो वे लोग बेटा होने पर श्री पितरजी महाराज का रातजोगा देते हैं, श्री पितरजी महाराज के पाँच कपड़ों को मोली बान्ध कर पाटे पर रखते हैं, मोली की बाट करके दिपक करते हैं, दिपक रात भर जगाते हैं। राती जोगे के गीत गाते हैं। कुछ गीत रात को गाते हैं, सुबह पाँच बजे प्रभाती के गीत गाते हैं। दूसरे दिन लापसी बनाकर पितरजी को भोग लगाकर खाना खाते हैं। राती जोगा लगभग चौदश की रात को देते हैं। कपड़े ब्राह्मण को देते हैं।

झड़ुला-

प्रथम, तृतीय या पंचम वर्ष में अपने अपने इष्टदेव के यहाँ बच्चे का झड़ुला उत्तरता है। उसके बाद ही कर्णध्रेदन किया जाता है। झड़ुला के बाद जब मुँड़न करे उसके पश्चात सिर पर स्वास्तिक का चिन्ह बनाया जाता है। तब नाई को गुड़ की डली व नेग देकर विदा करे। मुँड़न किये गए बाल, बहती नदी में विसर्जित करे।

दूँढ़-

दूँढ़ का नेग होलिका दहन के दिन होता है। बच्चे के ननिहाल से आये नए सफेद वस्त्र उसे पहनाये जाते हैं और पताशे से खोल भरा जाता है। अगर ननिहाल से कपड़े न आये तो अपने घर से नए वस्त्र पहना सकते हैं।

प्रसवोपरांत प्रसूता के कुछ स्वास्थ्यवर्धक आहार

प्रसवोपरांत नारी का शरीर काफी कमजोर हो जाता है। इसलिये दवा-टानिकों के अलावा हमारे बुजुर्गों ने कुछ विशेष पथ्य का वर्णन किया है



जिससे शरीर को ताकत एवं ऊर्जा मिल सके। इन पथ्य एवं घरेलू औषधियों का विशेष महत्व है। प्रसव के उपरान्त प्रसूता को दिये जाने वाली विशेष सामग्री की मात्रा :-

अजवाईन- ५०० ग्राम, गोंद- १ किलो, बादाम- २.५०० किलो, गिरी- ९ कि., सोंठ- १५० ग्राम, पीपला मूल- ५० ग्राम, खसखस, तालमखाना, मगज का बीज, जीरा, हींग, हल्दी, गुड, शुद्ध धी, साबदाना, राई, सिंगाड़े का आटा, चिकनी सुपारी, पान- १०० नंग।

तैयारी-

दशमूल का काढ़ा

इसकी १० पुड़िया पंसारी की दूकान से मंगा कर अच्छी तरह धूप में सूखा कर, कुटवा कर १० पुड़िया (बच्चा होने से पहिले ही) बना कर रख लें।

३२ मूलका काढ़ा:

इसे पंसारी की दूकान से मंगा कर अच्छी धूप दिखा कर दरदरा कूट लें और साफ पतले कपड़े में बांध कर इसकी ४० पोटली बनायें।

अजवाईन

१ किलो अजवाईन धो कर सुखा लें, चुन-बीन कर रख लें। २०० ग्राम रोटी, मठरी आदि में मिलाने को अलग रखें व बाकी बच्चा होने का बाद थोड़ी थोड़ी पीस कर काम में लें। इसे मिक्सी में पीस सकते हैं।

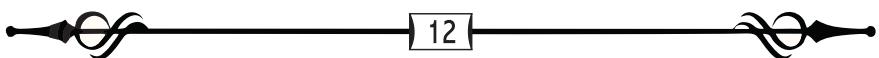
गोंद

१ किलो गोंद २-३ दिन तेज धूप में अच्छी तरह सुखा कर मोटा दरदरा कर लें। मोटा दरदरा व महीन अलग-अलग शीशी में भर ले।

बच्चा होनेके बाद

दशमूल का काढ़ा एवं हींग:-

इसे प्रसवोपरांत आरंभ के १०-१२ दिनों के अंदर सुबह पाँच बजे दिया जाता है। इससे रक्त का विकार शुद्ध होता है। यह काढ़ा दो रूपों में मिलता हैं- (१) तैयार काढ़े की शीशी आती है पूरी शीशी की मात्रा को दस दिन के हिसाब से बांट लें,



एक भाग काढ़े मे तीन गुना कुनकुना पानी मिलाकर सुबह सबसे पहले दो या तीन चम्मच शहद मिलाकर पिलायें।

(२) काढ़े की १ पुँडिया आधा लीटर पानी में उबल जाने पर मन्दी आँच पर पानी आधा रहने तक उबालें। इसे छान कर १ या डेढ़ चम्मच चीनी मिला कर गर्म ही जच्चा को पिलायें। यदि दोपहर में बच्चा हो तो रात को इसे धीरे-धीरे पी कर सो जायें। इस प्रकार काढ़ा तैयार कर १० दिन तक जच्चा प्रति सुबह खाली पेट इसे घूंट-घूंट पी कर चदर ओढ़ कर सो जायें।

काढ़े के साथ में चने के बराबर हींग की डली निगलने के लिये दें। हींग वायुनाशक होती है। काढ़ा पीने के बाद बादाम दें जिससे मुह का स्वाद ठीक हो जायेगा।

३२ मूल का काढ़ा:-

जच्चा के दिन भर पीने के पानी में १ पोटली डाल कर उबाल लें। पानी ठंडा हो जाने पर पोटली निकाल कर फेंक दें व पानी पीने के काम में लें या काढ़े के बदले १ पान का पत्ता, १/२ चम्मच अजवाइन, व १/२ चम्मच सौफ (पोटली बनाकर) डाल कर सुबह शाम पानी उबाल कर पीने के काम में लें।

अजवाइन :-

प्रसव के बाद आरंभ के १०-१५ दिनों मे अजवाइन दी जाती है। अजवाइन रक्त संबंधी विकार शुद्ध करती है। शरीर को गर्म रखती है। इसे विभिन्न प्रकार से दे सकते हैं।

(क) चीनी की अजवाईन- अजवाइन साफ करके बारीक पीस लें गर्म कड़ाही में शुद्ध धी ४-५ चम्मच डालें उसमें डेढ़ दो चम्मच पीसी अजवाइन डालकर सेंकें। स्वादानुसार बारीक कुटा नारियल, बादाम आदि भी मिला लें। आँच से उतार ३-४ चम्मच पीसी चीनी डालकर गर्म ही खाने को दें। इसे नाश्ते में सुबह शाम दोनों वक्त दे सकते हैं।

(ख) गुड़ की अजवाइन :- गुड़ पेट को साफ रखता है, कड़ाही में थोड़ा धी डालकर उसमें गुड़ को गलाकर अजवाइन, बादाम, सूखा नारियल मिलाकर तुरंत खाने को दें।

(ग) पेजी- दो बड़ा चम्मच धी १ छोटा चम्मच गोंद १ बड़ा चम्मच पिसी अजवाईन आधा चम्मच हल्दी, आधा चम्मच सौठ गुड़ स्वादानुसर

विधि : दो बड़ा चम्मच धी कढ़ाई में गरम कर एक छोटा चम्मच गोंद डालकर फुला बना लें। एक बड़ा चम्मच पिसी अजवाईन, आधा चम्मच हल्दी, आधा चम्मच सौठ वा गुड़ डालकर उबालें व गुनगुना होने पर पिला दें।

(घ) दो बड़ी चम्मच अजवाइन, १ बड़ी चम्मच बादाम, १ चम्मच दरदरा गोंद, २ बड़ी चम्मच पिसी चीनी, २ बड़ी चम्मच देशी धी।

विधि:- धी खूब गर्म कर गोंद डालें, फूलते ही निकाल लें। गैस बन्द कर तुरन्त बादाम डालें, जरा सा सेक कर अजवाइन डालें और अच्छी तरह मिला लें। थोड़ा ठंडा होने पर चीनी व गोंद डाल कर खिलायें।

कांकरी अजवाइन

सामग्री- २ बड़ी चम्मच अजवाइन, १ बड़ी चम्मच बादाम, १ बड़ी चम्मच दरदरा गोंद, १/२ बड़ी चम्मच कसा सूखा नारियल, ३-४ काली मिर्च, २ बड़ी चम्मच पिसी चीनी, २ बड़ी चम्मच धी।

विधि:- धी गर्म कर गोंद फुला कर तुरन्त निकाल लें। काली मिर्च व बादाम तल लें। बचे धी में धीमी आँच पर अजवाइन व नारियल सेक लें, फिर गोंद बादाम व काली मिर्च डाल कर १ मिनट सेक कर उतार लें, पहले दो दिन अजवाइन आधी मात्रा में दें। अजवाइन से जच्चा के कभी-कभी पतले दस्त होने लगते हैं, उस अवस्था में दिन में १ या २ बार बार्ली का पानी दें। अजवाइन दिन में २ बार सुबह ८-९ बजे व शाम को ४-५ बजे दी जाती है।

१० दिन बाद सुबह सोंठ दें। यदि इच्छा हो तो शाम को अजवाइन दी जा सकती है।

२०-२१ दिन में सारी अजवाईन दे देवे। पेजी खत्म होने के बाद पेजी की जगह रई देते हैं।

रई :- (सुबह जल्दी देनी चाहिए)

सामग्री : एक बड़ा चम्मच धी, १ बड़ा चम्मचा गोंद, ३ छोटा चम्मच शक्कर एक पाव पानी

विधि : धी में गोंद का फुला बनाकर उस में चीनी का पानी डालकर उबालें।



गुनगुना कर के पिला दें। इसमें महीन गोंद काम लें।

पीपला मूल :-

पीपला मूल प्रसूती ज्वर निवारक होती है। यह गर्भ होती है। प्रसव के ३-४ दिन बाद से दी जाती है। ६० ग्राम पीपलामूल कूट पीसकर कपड़े से छान कर ११ पूँडिया तैयार करें। एक स्याहु का निकालें। रोज रात को एक पूँडिया दूध के साथ दें। फिर ४-५ बादाम एवं थोड़ी मिश्री दें। पीपलामूल लेने के बाद चदर ओढ़कर सो जाना चाहिये। गर्भ में प्रसव हो तो पीपलामूल कम दी जाती है। जब तक पीपलामूल खाते हैं खटाई नहीं खानी चाहिये। इसे खुले कमरे में देना चाहिये।

लोदः-

आँखों की ज्योति के लिये १०० ग्राम लोद दी जाती है। यह आयुर्वेदिक जड़ी बूटी की दूकान में मिलता है। इसे कूट कर मलमल के कपड़े से छान कर १०० ग्राम पिसी चीनी व ५० ग्राम देशी धी मिला कर कड़ा गूंथ लें। इसकी काबुली चने की साइज की गोलियां बनायें। खाना खाते समय पांच गोलियां हलवे के साथ निगलें। यह बहुत कड़वी होती हैं।

कायफल:-

सिरदर्द के लिये कायफल का प्रयोग होता है। इसे धी के साथ सर मे दबाते हैं।

हल्दी का काढ़ा-

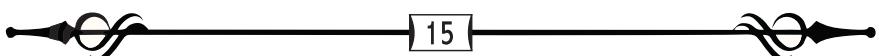
गुड़ का पानी बना कर अलग रख लें, उसके बाद धी गर्भ करके उसमे थोड़ी सी पीसी अजवाइन व हल्दी डालकर गुड़ का पानी मिला दें। यह काढ़ा सुबह दें।

बादाम की कढ़ी :-

यह प्रसव के दस दिन बाद से दी जाती है। यह शक्तिवर्धक, कफ नाशक एवं मस्तिष्क के लिये उत्तम होती है।

सामग्री : १५ बादाम १ बड़ा चम्मच खसखस, २ छोटा चम्मच शक्कर, एक बड़ा चम्मच धी, एक पाव दूध।

विधि :- खसखस, बादाम दोनों का भिंगोकर पीस लें। धी में पिसी इलायची एक





चुटकी, बादाम, खसखस डाल कर थोड़ा भून लें। फिर दूध व शक्कर डाल लें। इससे सिर में तरावट रहती है।

सौंठ :-

सौंठ गर्म होती है। जोड़ो के दर्द में लाभकारी होती है। प्रसूता को कम से कम १५० ग्राम सौंठ खिलाते हैं। इसे कूट पीसकर छानकर तैयार करें।

सौंठ खिलाते समय प्रसूता को बाहर की हवा न लगने दे। साधारणतः इसे प्रसव के १५ दिन बाद से ४० दिन या उससे भी अधिक दिन तक दे सकते हैं। यह कई तरह बनायी जा सकती है, अपनी इच्छानुसार बनाए।

सौंठ के लड्डु :-

सामग्री : धी २०० ग्राम, सौंठ ५० ग्रा. गोंद-१०० ग्राम, खसखस-१०० ग्राम, आटा-१०० ग्राम, मगज का बीज-१०० ग्राम, नारियल-१०० ग्राम, शकर (पीसी) ६०० ग्राम, बादाम-१०० ग्राम

विधि : एक बड़ी कढ़ाई में २०० ग्राम धी डालकर आटा डालें। थोड़ा सिकने पर खसखस डालें। फिर गोंद डालें। गोंद के फूले बन जाये, तब बादाम एवं मगज डालें। नीचे उतार कर खोपरा व सौंठ डालें। पिसी शक्कर मिलाकर लड्डू बना लें। यह जाड़े में दिया जाते हैं।

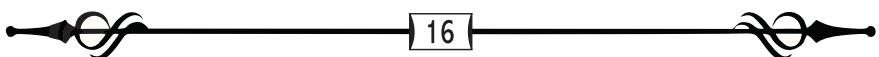
सौंठ-

सामग्री: १ पुड़िया सौंठ, डेढ़ चम्मच मोटा गोंद, डेढ़ बड़ी चम्मच बादाम डेढ़ बड़ी चम्मच कुटा पिस्ता, २ बड़ी चम्मच पीसी चीनी, ३ बड़ी चम्मच देशी धी

विधि-

(क) १ बड़ी चम्मच पानी से सोंठ नर्म सान लें। इसकी २-३ छोटी टिकिया हलेथी पर रख कर बना लें, धी गर्म कर धीमी आँच पर इन्हे तल कर रख लें, फिर आँच तेज कर गोंद तल लें। १ टोकरी में पहले गोंद बिछायें फिर पिश्ता व बादाम। इनके ऊपर गोंद सोंठ की टिकिया चूर कर बिछायें। बचा धी खूब गर्म कर चारों ओर डालें जिससे बादाम-पिश्ता सिक जायगा। चीनी मिला कर तुरन्त गर्म-गर्म खिलायें।

(ख) **सामग्री:-** १ पुड़ियां सोंठ, १ बड़ी चम्मच सिंधाड़े का आटा, १ बड़ी चम्मच



दरदरा गोंद, १ बड़ी चम्मच धनिया गिरी, १ ग्राम काली मिर्च, अढाई ग्राम पिसी छोटी पीपल, १ बड़ी चम्मच खसखस (पोश्ता दाना), १ बड़ी चम्मच बादाम, २ बड़ी चम्मच पीसी चीनी, २ बड़ी चम्मच देशी धी

विधि-

खसखस रात को भिगो दें। बादाम खौलते पानी से आधा घंटा रख कर छील लें, फिर दोनों साथ पीस लें। १ बड़ी चम्मच धी गर्म कर इसे हल्का बादामी सेक लें। १ बड़ी चम्मच धी से आटा व काली मिर्च सेकें, जब आटा सिकने को आ जाए तब थोड़ा-थोड़ा गोंद डाल कर फुलायें, फिर पीपल व सौंठ मिला कर १-२ मिनट चला कर उतार लें। १/४ बड़ी चम्मच धी में धनिया गिरी सेकें। सारा सामान मिला लें, ठंडा होने पर चीनी मिला कर खिलायें।

जीरे का लड्डू:-

यह लड्डू गर्मी में दिये जाते हैं।

सामग्री-१०० ग्राम जीरा, १०० ग्राम दरदरा गोंद, १०० ग्राम बादाम, १० ग्राम गोल मिर्च, ७५ ग्राम आटा, २०० ग्राम पिसी चीनी, १०० ग्राम देशी धी।

विधि-बादाम द घंटे भिगोकर, छील कर पीस लें। २५ ग्राम धी गर्म कर धीमी आँच पर बादाम हल्का बदामी सेकें। ७५ ग्राम धी में आटा व गोल मिर्च सेक लें। अब आटा सिकने को आ जाय तब थोड़ा गोंद डाल कर फुला लें, जीरा डाल कर १-२ मिनट सेक कर उतार लें इसमें सिका बादाम मिला लें। ठंडा होने पर चीनी मिला कर १० लड्डू बना लें। इससे माँ का दूध बढ़ता है।

गोंद गिरी की बर्फी :-

यह शक्तिवर्धक होती है। अजवाईन सौंठ, पीपलामूल ये सब गर्म तासीर के खाद्यपदार्थ होते हैं। इनसे उत्पन्न गर्मी को शांत करने के लिये ठंडी तासीर वाले खाद्य पदार्थ देते हैं।

सामग्री :- धी- २०० ग्राम, बादाम-१०० ग्राम, गिरी- १०० ग्राम, गोंद -१०० ग्राम खसखस-१०० ग्राम, आटा -सिंधांडा या गेहूँ -१०० ग्राम, शक्कर- ५०० ग्राम।

विधि :- सौंठ के लड्डू की विधि के अनुसार सारी सामग्री सेंके । ५०० ग्रा. शकर की एक तार की चासनी बनाकर उसमें सारी सामग्री मिलाकर बर्फी जमा दें । तुरंत ही बर्क लगायें वह ठंडी होने पर काट लें ।

गोंद के लड्डू -

सामग्री- १०० ग्राम मोटा गोंद, १०० ग्राम कटा बादाम (मोटे टुकडे), २०० ग्राम आटा, १२५ ग्राम पिसी चीनी, १२५ ग्राम देशी धी ।

विधि:-धी गर्म कर गोंद फुलाकर निकाल लें । इसी धी में धीमी आँच पर आटा सुनहरा होने तक सेंकें, फिर बादाम डालें, पांच मिनट दोनों चीज सेंकें । उतार कर ठंडा करें, गोंद व चीनी मिला कर नीबू की साइज के लड्डू बनायें । अजवाईन खत्म होने पर गोंद के लड्डू दें ।

बादाम का हलवा :-

सामग्री:- धी दो चम्मच, बादाम- २५ नग, खसखस-९ चम्मच, सूजी या आटा एक चम्मच, शकर २५ ग्रा. या स्वादानुसार

विधि: बादाम को भिगोकर थोड़ा मोटा पिसें व खसखस सूखी मिक्सी में पीसें । कड़ाही में धी गरमकर आटा या सुजी थोड़ा सेंकें फिर बादाम व खसखस डालें । शकर डालकर अदाज से थोड़ा गरम पानी डालें व पानी सूखने तक हिलायें । प्रसूता को गर्म गर्म खिलायें ।

चर्वण :-

केवल मीठे खाद्य पदार्थों को लेते रहने से प्रसूता के मुंह का स्वाद बदल जाता है । अतः स्वाद ठीक करने के लिये कुछ नमकीन की भी आवश्यकता होती है ।

बादाम को धी में तल कर उसमें नमक काली मिर्च लगाकर दें । गाय के धी में ताल मखाना तलें, गोंद फुलाकर, खरबूजे के बीज, चिरौजी सेंकें, आलू के लच्छे या चिप्स तलें, नारियल किसकर कड़ाही में सेंकें, स्वादानुसार नमक, कालीमिर्च मिलाकर दें ।

टिकला :-

आटे में ज्यादा धी का मोईन डालकर नमक अजवाईन डाल दें । आटा

उसन कर छोटी छोटी टीकड़ी बना लें। धी में तलें।

प्रसूता को खाने मे धी आसानी से खिलाने के लिये खिचड़ी, दलिया, काठी दाल चावल, मोयन की रोटी व चूरमा इत्यादि देना चाहिये। दाल में धी राई का छौंक दें। हरी सब्जी कम मसाले की धी मे बनाकर दें। खाने में कच्ची हल्दी की सब्जी अवश्य खिलायें।

पान :

प्रसूता को पान अवश्य खिलायें पान के पत्ते का रस अपने आप मे बहुत गुणकारी होता है यह पाचनक्रिया में सहायक होता है व इसको खाने से बदहजमी का डर नहीं रहता है। दिन भर मे चार-पाँच मीठा पान बादाम डालकर अवश्य खिलायें।

(प्रसूता के लिये परहेज)

- ❖ चना, चने की दाल, ईमली, अमचूर की खटाई न खिलायें। दही की खटाई दे सकते हैं।
- ❖ प्रसव के पन्द्रह दिन बाद सौंठ के लड्डु व रई चालू कर दें। जब तक सौंठ के लड्डु खायें तब तक आग के सामने व धूप में न बैठें। खटाई भी न देवें।
- ❖ जच्चा की बदपरहेजी से बच्चा के साथ साथ माँ का दूध पीने वाला बच्चा भी बीमार पड़ता है। अतः जच्चा के भोजन विशेष सावधानी आवश्यक हैं। जच्चा को गरम व ताजा भोजन ही खिलाये।
- ❖ सुबह-शाम दोनों समय जच्चा-बच्चा की तेल-मालिश करवायें।
- ❖ जच्चा के सिर मे धी लगायें। धी में बादाम, जायफल, सुपारी, सूखी गिरी, पीपलामूल घिसकर सिर में चालीस दिन तक मालिश करवायें। चालीस दिन के बाद बादाम का तेल लगायें।
- ❖ माँ के आंचल का पहला दूध बच्चे को आवश्यक पिलाना चाहिये। यह बच्चे मे रोग-प्रतिरोधक क्षमता पैदा करता है। यथा संभव बच्चे को माँ का दूध अधिक से अधिक पिलाना चाहिये।
- ❖ आजकल सबसे बड़ी दिक्कत आती है कि माता को दूध पूरी मात्रा में नहीं

आता इसके लिये आधा छोटा चम्मच कच्चा जीरा पीसकर पिलायें या आधी छोटी चम्मच राई थोड़े से आटे की लोई में मिलाकर रोटी के समान सेक कर खिलायें। सिंघाड़े के आटे की पूँड़ी या साबूदाने की खीर या साबूदाने की खिचड़ी इत्यादि दें। माँ का दूध बच्चे के लिये अमृत तुल्य होता है अतः यह बच्चे को मिलना ही चाहिये।

(नवजात शिशु की देखभाल)

सभी माता-पिता का एक सपना होता है, कि संतान स्वस्थ एवं बुद्धिमान हो तथा माता भी इस जटिल प्रक्रिया से निकलने के बाद स्वस्थ रहे। अतः हमने कुछ जानकारी देने की कोशिश की है। आशा है आप इसका एवं बुजुर्गों के अनुभवों से लाभ उठायेंगे।

बुखार आने पर जन्मघूटी आरामदायक होती है।

घासा-

सामग्री: बड़ी हरड़, जायफल, चिकनी सुपारी, मरोडाफली, अजवाईन, राई, आम की गुठली, काला नमक, बादाम, खारक।

विधि :- ६-७ दाना अजवाईन, ५-६ दाना राई व आधा चम्मच पानी डालें। फिर हरड़, जायफल, सुपारी, बादाम, मरोडाफली, खारक, आम की गुठली से घसकर बड़े चम्चे में निकाल लें। फिर गुनगुना करके बच्चे को दें।

- ❖ दस्त अधिक लगाने पर घासे में जायफल ज्यादा दें। माँ के दूध या कच्चे दूध में भी घिसकर दे सकते हैं। कब्जी रहे तो हरड़ अधिक मात्रा में दें।
- ❖ अस्पताल से घर लाने के बाद शिशु का नहलाकर उसके हाथ पांव व कमर में काला डोरा बांध दें, ताकि शिशु का नजर न लगे।
- ❖ शिशु की नस के नीचें सरसों का तकिया अवश्य दे ताकि उसका सिर गोल रहे।

पेट दर्द

- ❖ नाभि के चारों ओर हींग और पानी का पेस्ट बनाकर लेप कर दें।
- ❖ कहावत है यदि माँ बच्चे का पेट चाटें तो भी पेट दर्द से राहत मिलती है।
- ❖ एक मीठे पान को कूटकर अजवाईन के साथ थोड़े पानी में उबालें, थोड़ी

मिश्री मिलाकर छाने व १-१ चम्मच सुबह-शाम पिलाये ।

खाँसी

- ❖ सर्दी में अजवाईन एवं गुड़ का पानी बनाकर दें।
- ❖ खाँसी ज्यादा आये तो अनार के सूखे छिल्के को पानी में उबाल कर एक चम्मच दें।
- ❖ सौंफ, मिश्री, नमक उबालकर रखें। १-१ चम्मच सुबह-शाम दे।
- ❖ माँ के बाल अगर गीले हो तो बच्चे को अपना दूध न पिलाएं। इससे बच्चे को सर्दी-जुकाम होता हैं।

बच्चे को जन्मोपरांत उसको डाक्टर की सलाह से निम्नासार टीके समय-समय पर आवश्य लगवाएं।

२ सप्ताह पर:- बी. सी जी पोलियो (१) - हेपिटाइट्स बी (१)

६ सप्ताह पर:- डी. पी. टी (१)- पोलियो (२) - हेपिटाइट्स (२)

१० सप्ताह पर:- डी. पी. टी (२) पोलियो (३)

१४ सप्ताह पर डी. पी. टी (३) - पोलियो (४)

६-७ महीने पर हेपिटाइट्स बी (३)

६ महीने पर पोलियो (६)

१५-१८ महीने पर :- डी.पी.टी (बी २) - पोलियो (६) - एम. एम. आर

५ साल पर :- डी.पी.टी. (बी २) पोलियो (७)

खाद्य पदार्थ हमारे बुजुर्गों द्वारा बताये गये हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी थोड़े बहुत फेर बदल कर चलते आ रहे हैं। ये जच्चा व बच्चा दोनों के लिये फायदेमंद होता है।

विवाह संरक्षण



विवाह - एक पवित्र संस्कार

हिन्दू-विवाह एक पवित्र धार्मिक संस्कार है। मनुष्य पशु की भाँति अमर्यादित स्वेच्छाचारी न हो जाये, उसकी इन्द्रिय-चरितार्थ करने की वासना संयमित हो, भोग-लालसा मर्यादित रहे, भाव में विशुद्धि बनी रहे, संतानोत्पादन के द्वारा वंश की रक्षा और पितृ-ऋण का शोध हो, भोग का तत्व जानकर संयम के द्वारा मनुष्य कमशः त्याग की ओर अग्रसर हो सके, प्रेम को केन्द्रीभूत कर के उसे पवित्र बनाने का बल प्राप्त हो, स्वार्थ का संकोच और परार्थ-त्याग की बुद्धि जाग्रत होकर वैसे ही परार्थ-त्यागमय जीवन का निर्माण हो और अन्त में मानव जीवन की सफलता रूप भगवत्प्राप्ति हो जाये - इन्हीं सब पवित्र उद्देश्यों को लेकर हिन्दू-विवाह का पावन विधान किया गया है। विवाह से विलास-वासना का सूत्रपात नहीं होता, अपितु संयम-नियमपूर्ण जीवन का प्रारम्भ होता है।

इस जगत् की रचना पुरुष और प्रकृति के संयोग से हुई हैं और जब तक जगत् रहेगा, इस प्रकृति-पुरुष का संयोग-सम्बन्ध भी बना रहेगा। पुरुष और प्रकृति-दोनों अनादि हैं। पुरुष के संसर्ग से प्रकृति ही समस्त प्राणि जगत् को, समस्त विकारों और अखिल गुणों को उत्पन्न करती है -

प्रकृति पुरुषं चैव विद्ययनादि उभावपि ।
विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृतिसंभवान् ॥

(गीता 13/19)

प्रकृति शक्ति है, पुरुष शक्तिमान् है। शक्ति के बिना शक्तिमान् का अस्तित्व नहीं और शक्तिमान् के बिना शक्ति के लिये कोई स्थान नहीं। शक्ति-शक्तिमान् का अभिनव सम्बन्ध है। यही नारी और नर के सम्बन्ध का मूल तत्व है, नर पुरुष का और नारी प्रकृति का प्रतीक है। नारी का नाम ही प्रकृति है। एक के बिना दूसरा अपूर्ण है। दोनों के कर्तव्य तथा कर्मक्षेत्र पृथक्-पृथक् होने पर भी वे एक ही शरीर के दक्षिण और वाम, दो अङ्गों की भाँति एक ही शरीर के दो संयुक्त भाग हैं और इन दोनों के कार्य भी एक दूसरे के पूरक तथा एक ही शरीर की स्थिति, समृद्धि, सुव्यवस्थिति, पुष्टि और तृष्णि

के कारण हैं। एक के बिना दूसरे का काम नहीं चल सकता। अपने-अपने क्षेत्र में दोनों की ही प्रधानता और श्रेष्ठता है, पर दोनों की श्रेष्ठता एक ही परम श्रेष्ठ की पूर्ति में संलग्न है। दोनों मिलकर अपने-अपने पृथक् कर्तव्यों के पालन द्वारा परस्पर सुख प्रदान करते हुए जीवन के परम लक्ष्य-भगवान् को प्राप्त कर सकते हैं। नर भगवान् की प्राप्ति करता है- पतिव्रता नारी के दिव्य त्यागमय पवित्र आदर्श को सामने रखकर भगवान् की सहज ही प्राप्ति करती है - अपने अभिन्नस्वरूप स्वामी का सर्वाङ्गपूर्ण अनुगमन करके स्वामी को परमेश्वर मानकर, सहज ही भगवदाकार वृत्ति बनाकर। यह नर और नारीका स्वरूप, कर्तव्य और उनकी विवाह-साधना का परिणाम है। नारी पतिगतचित्ता तथा पतिगणप्राण होकर अपने क्षेत्र में ही अपने दृष्टिकोण से पति की सेवा करती है - भगवत्प्राप्ति के लिये और नर भी अपने क्षेत्र में रहकर अपने क्षेत्र तथा कार्य में भेद रहने पर भी दोनों का लक्ष्य एक ही है और दोनों के ही स्थान तथा कर्तव्य एक-दूसरे के लिये अत्यन्त प्रयोजनीय, महत्वपूर्ण तथा अनिवार्य अभिनन्दनीय हैं एवं दोनों ही अपने लिए परम आदर्श-स्वरूप हैं।

नारी नर की पत्नी होने पर भी नर नारी का सेवक, सखा स्वामी है। इसी प्रकार नर नारी का पति होने पर भी नारी नर की स्वामिनी, सखी और सेविका है। नारी पतिव्रता है और उसका यह पतिव्रत्य है - यथार्थ में परम पति परमात्मा की अथवा उनके परम प्रेम की प्राप्ति के लिये ही। यही नारी की विशेषता है और इसकी स्वीकृति में ही पुरुष की महत्ता है। नारी सेविका होते हुए भी स्वामिनी है और नर स्वामी होते हुए भी सेवक है। दोनों ही स्वतन्त्र और दोनों ही स्वेच्छा स्वीकृत परतन्त्र हैं। यह परतन्त्रता उनकी स्वतन्त्रता की शोभा है। अवश्य ही दोनों की स्वतन्त्रता के क्षेत्र और पथ पृथक्-पृथक् हैं। यही दोनों का स्वधर्म है। नारी घर की रानी है, साम्राज्ञी है, घर में उसका एकछत्र राज्य है, पर वह घर की रानी है - मूर्तिमान् परार्थ जीवनधारिणी, त्यागमयी आदर्श गृहिणी और स्नेहमयी माता के रूपमें। यही उसका नैसर्गिक पवित्र स्वातन्त्र्य है।

नारी की इस आर्दश स्वतन्त्रता का ही प्रथम सोपान है - यह विवाह संस्कार । यह विवाह - संस्कार पवित्र मङ्गलमय अनुष्ठान है । इसीसे इसमें सर्वत्र मङ्गल ही मङ्गल -उत्सव ही उत्सव दर्शन होते हैं ।

विवाह की प्रमुख विधियां तथा विवाह में पूजा सामग्री :-

भारतीय समाज में विवाह एक महत्वपूर्ण पवित्र कार्य है प्रायः लड़के लड़कियों के व्यस्क होने पर माता-पिता और घर के बड़े एवं अनुभवी सदस्य अपने अनुभव के आधार पर एक दूसरे के अनुरूप वर-बधू का चयन करते हैं । लड़के-लड़की की प्राथमिकता आवश्यक है ।

सगाई -

सगाई पक्की होने के बाद हम बहू या बेटी का नेक करते हैं । बेटी के नेक में हम सामने वाले सगों की रिवाज के अनुसार करते हैं । बहू के नेक में, बहू के साढ़ी कपड़ा, गहना, पायल, हम भेजते हैं, खोल में नगद भी डालते हैं व मिठाई फल व उनके घर के छोटे बच्चों के कपड़े भी भेजते हैं ।

नान्दी मुख -

हम शादी के पहले अच्छा दिन पंडित से पूछकर नान्दीमुख करवा लेते हैं जिससे शादी के समय परिवार में किसी का जन्म या मृत्यु की घटना होने से शादी वाले घर में सुआ-सूतक का दोष नहीं लगता ।

सामग्री:- लाल वस्त्र आधा मीटर, सफेद वस्त्र आधा मीटर धोती, गमधार, गेहुं ढाईसौ ग्राम, चावल ढाइसौ ग्राम, रोली, मोली, मिट्टी का कलश एक, नारियल, मिट्टी के दीपक सात, पत्तल पांच, डाब, हरा आँवला (अगर हरा ना हो तो सूखा हूवा), किशमिश, जौ सौ ग्राम, तेल सौ ग्राम, चावल सौ ग्राम, सोना की टीकड़ी चार, सर्वोषधि, सफेद पुष्प, ऋतु फल पांच, प्रसाद, पान पांच, लौंग पांच, इलायची पांच,

सुपारी पांच, पीली सरसो ।

गुड-मूंग खरीदना-

यद्यपि वैवाहिक तैयारियां पहले ही शुरू हो जाती हैं परं जिस दिन बरनी बंधाते हैं, उस दिन प्रतीक रूप से सवाये तौल से गुड- मूंग खरीदा जाता है । (सवाया तौल यानी सवा सेर, सवा पांच सेर इत्यादि) जिसे रसोई में रखा जाता है ।

कुंकुं पत्रिका-

पहली पत्रिका गणेशजी-कुलदेवता-इष्टदेवता के नाम की लिखी जाती है । रणथम्भोर के गणपति (गणेश जी) को प्रथम पत्रिका भेजने की पुरानी परम्परा है । वहां पर पुजारी द्वारा मंदिर में भगवान को पत्रिका पढ़कर सुनाई जाती है ।

रणथम्भोर का ठिकाना: श्री गणेश जी मन्दिर, रणथम्भोर सवाई माधोपुर (राजस्थान)

लग्न पत्रिका-

सामग्री:- छपी हुई लग्न पत्रिका, गणेश जी की पूजा की थाली । कन्या पक्ष: सबसे पहले पंडित जी कन्या के पिता से पूजा करवाते हैं । लग्न पत्रिका में वर-कन्या के नाम एवं मुहूर्त आदि लिखकर पत्रिका की भी पूजा करवाते हैं । पूजा के बाद कन्या का भाई और पंडितजी लग्न पत्रिका एवं गणेश जी की थाली लेकर वर के यहां जाते हैं ।

वर पक्ष:- लग्न आता है तब वर पक्ष के सम्बन्धियों की उपस्थिति में पंडितजी वर के पिता से गणेश पूजा करवाते हैं और लग्न पत्रिका पढ़ कर सुनाते हैं । कन्या का भाई पहले घर के बड़े बुजुर्गों को लग्न पत्रिका प्रदान करता है । वर पक्ष द्वारा उपस्थित व्यक्तियों को तिलक करके नारियल दिया जाता है । पंडितजी एवं कन्या के भाई को नेग देते हैं ।

बनावा-

सामग्री: मिठाई, माला, नकद रुपया

वर/कन्या की बुआ-बहनें अपने परिवार की औरतों के साथ विवाह में बनावा लेकर आती हैं। विनायक, घोड़ी, बन्ना-बन्नी, सुहाग एवं सगा-सगी के गीत गाती हैं। बहन बन्ना/बन्नी को तिलक लगाकर, माला पहनाती है, अपने घर से लाई हुई मिठाई से मुहं मीठा कराती है और रूपये देती है। घर वाले सगियों को नाश्ता करवाकर नेग देते हैं। वर और कन्या को आशीर्वाद देने के लिये ननिहाल पक्ष बनावा लाता है फिर भुवा बहनें बनावा लाती है।

टोट: बनावे के रूपये वर या कन्या को देते हैं।

बत्तीसी-

बत्तीसी का मतलब बहन अपने भाइयों को निमंत्रण देने जाती है। घर में भाणजे या भाणजी की शादी है आप को सभी बन्धू-बन्धव, इष्टमित्र घर के सभी भाई, भाभी, भतीजे - भतीजी सहित आना है। मायरा से पहले कभी भी बत्तीसी कार्यक्रम करें। बत्तीसी के लिए 5 किलो चावल, गुड़ की भेली 32 सुपारी, 32 लोंग, 32 इलायची, 32 छुहारा, 32 काजू, (32 सामान 32 चीज) नारियल गोटा, रूपैया भाई सबको देने के लिए, भाभी के लिये ब्लाउज तथा लड्डू बांटने के लिए।

बड़ी बनाना-

शादी के लिए मूँग की दाल की बड़ी बनाई जाती है। बड़ी बनाने के समय आस पड़ोस की सभी औरतें इक्कठी होती हैं। बना या बनी को टीका लगाया जाता है। सभी औरतें मिलकर मंगल गीत गाती हैं। जिस चीज पर बड़ी बनाये - कोयला, मूँग, दूब, चाँदी की कोई चीज एक कोने में रखें।

मूँग बखेरना-

पण्डितजी को मोहरत दिखाकर मूँग बिखेरे जाते हैं। लड़की व लड़के की शादी दोनों में बिखेरे जाते हैं। मूँग बिखेरने के लिए सवा किलो या 5 किलो मुँग लिये जाते हैं। बना या बनी को टीका लगाया जाता है। परिवार समाज की सभी औरतें मिलकर देवी देवता के और मंगल गीत गाती हैं। बना या बनी के मेहन्दी भी लगी होनी चाहिए।

मूँग बखेरे की सामग्री: कुंकुम, चावल, मोली, मुँग सवा किलो, चालनी, थाली में सखिया माँड़ना चाहिए।

धी पिलाना-पीला चावल-

पण्डितजी के बताए अनुसार धी पिलाने का नेग किया जाता जिसमें भगवान गणेशजी की पूजा होती है। सभी देवी देवताओं के लिए पत्रिका रखी जाती है। पीले चावल बनाए जाते हैं। जिनसे सभी देवी देवताओं और अपने समाज के सभी बन्धु इष्ट मित्र को न्यौता दिया जाता है। लड़की की शादी में न्यौता घर पर पधारे सभी बन्धु इष्ट मित्रों को दिया जाता है। लड़के की शादी में पीले चावल बारात में जाने वाले सभी बन्धुओं को दिये जाते हैं। धी हम 5/7/11 दिन पहले पिलाते हैं।

धी पिलाने के लिए गणेश पूजा की सामग्री:- कुंकुम, चावल, रोली, मोली, पान, सुपारी, फल, दूब, प्रसाद, आम की डाली, नारियल गोटा, गुड, लौंग, इलायची, अगरबत्ती, पाटा, गुलाबी कागज, पेन, चाँदी कि कटोरी, चाँदी का सिक्का, कलश, धी, पत्तासा, इत्यादि।

बंदोरा-

पीला चावल या धी पिलाने के दिन शाम को वर/वधु अपने अपने पुरोहित या सुहासिनी के यहाँ भोजन पर जाते हैं।

बिड़द बड़ा/ बिड़द विनायक/ मूँगधना-

इसमें भगवान श्री गणेश की विधीवत स्थापना की जाती है। सात सुहागन मिलकर गोबर व मिट्टी से चौका देती हैं, उस पर स्वास्तीक बनाकर, स्वास्तीक पर एक पाटा रखा जाता है जिस पर

एक सफेद कपड़े के चारों कोने हल्दी में रंग कर बिछाया जाता है। उस पाटे पर मूँग की दाल पीस के बिड़द बड़े दिये जाते हैं। 5 कुँवारी कन्याओं से यह बड़े लगवाये जाते हैं तथा नेग देने का रिवाज है। मंगल गीत गाए जाते हैं।

मूँगधना (विनायक) में घर के नौकर के सिर पर लकड़ियाँ और आम की डाली को मौली में बाँधकर बुलाया जाता है। घर के दरवाजे पर उसके टीका लगाकर धी पतासा से मुँह जुठाया जाता है फिर दक्षिणा देकर लड़के या लड़की की माँ उससे वह लकड़ियां लेकर छत या छत के कमरे में रखती है। फिर लड़के या लड़की की भूवा उसकी माँ की आरती करती है। इस समय में नृत्य भी करते हैं, घूमर भी डालते हैं। दूल्हे या दुल्हन की माँ के हाथ में स्वरितक बनाया जाता है।

तनी-

एक लाल कपड़े में नमक राई बाँधकर तनी में टाँगते हैं। राखी, सिकोरा, खाजा, तनी में बाँधकर तनी बाँधी जाती है।

पीठी-

सामग्री- गेहूँ, मूँग, जायफल, जावित्री, केशर, हल्दी, मेहन्दी, कस्तुरी। मूँग बखेरने के दिन एक सुहागन स्त्री जिसके सास, ससुर, माता, पिता चारों होते हैं टोपीया पर मौली बाँधती है, टोपीया में साँखीया बनाकर, टोपीया में मूँग डालकर पानी डालें एक मिनट के लिये हल्का गरम करें फिर उसे छानकर ढगरे में डाल दें। चना की दाल, गेहूँ जौ को मूँग के साथ सुखा दीजिये। यह सूखने के बाद पीसने के समय केशर, कस्तुरी, हल्दी, जायफल, जावित्री डालकर सात सुहागनें मिलकर पीठी पिसती हैं। मंगल गीत गाती हैं। फिर यह पीठी बन्ना या बन्नी को लगाई जाती है।

झोल या अटाल-

लड़के की माँ लड़की के माता पिता गंठजोड़ा बाँधकर खड़े हो जाते हैं। आगे पाटे पर बनड़ी या बनड़ा तथा बिनायक को बिठाया जाता है।

पहले विनायक को और तब बना या बनी को पहले पिता अटाल डालते हैं माँ रगड़ती है फिर माँ डालती है पिता रगड़ते हैं। ७ बार भोल डाला जाता है। फिर गरम पानी से नहलाते हैं। अटाल बनाने के लिए जिस महिला के सास, ससुर, माता, पिता चारौं होते हैं उससे काँसी के कटोरे में स्वास्तिक बना कर दही, हल्दी, पानी, पिसी हुई पिठी तथा बेलन आदि सामान से तैयार करते हैं। उसे थोड़ा सा निवाया कर के पल्ला से ढक कर लाते हैं।

बिरद विनायक के दिन सिर्फ माँ बाप भोल डालते हैं। भोल डालकर काँसी का कटोरा यूँ ही रख दिया जाता है।

दूसरे दिन उसे धोकर फिर से भोल बनायें।

रोलाडोला-

इसमें ५-७ सुहागनें मिलकर ७ किसिम के अनाज को दो डगरे (सूप) में एक दूसरे को देती-लेती है। दो दो औरते पीला ओढ़कर रोला-डोला करती है। (चावल, गेहूँ, मूँग, नमक, हल्दी गाँठ, सिक्का, दो डगरे, दो बेलन) महिलाएँ मंगल गीत गाती हैं। एक तरफ बन्ने या बन्नी की माँ ही बैठती है दुसरी तरफ सहागने बदलती रहती है। यह किया प्रत्येक औरत ७ बार करती है।

लक दन-

अटाल का काम होने के बाद बन्ना या बन्नी को नहला कर पाटे पर खड़ा किया जाता है। बना या बनी तथा विनायक दोनों पांच या सात सुहागन को लक देते लेते हैं। महिलाएँ मंगल गीत गाती हैं। फिर पिता द्वारा पहले विनायक को फिर बना या बनी को पाटे के आगे सिकोरा, सवा रुपया, मूँग रख कर, चप्पल पहना कर उस पर पाटा से उतारा जाता है। माया की पूजा की जाती है।

सामग्री:- गुड़, ताँबा का सिक्का, चांदी, जीरा, लाख, धनीया, अजवाइन सब सामान साथ में मिलाकर गोटा लगे लाल कपड़े में बाँध दें। इसे लकधन कहते हैं। इसको मूँग के दिन ही तैयार कर के रख लें।

विनायक-

विनायकजी की पूजा की जाती है। जिसमें लड़का या लड़की एवं विनायक, माँ, पिताजी सभी बैठते हैं। पण्डित जी द्वारा पूजा कराई जाती है। माया का पन्ना दीवार पर लगा कर धी के भारे लगते हैं। वर या वधु द्वारा मेहन्दी व पीठी के हाथ लगवाए जाते हैं। उस दिन लापसी, चावल की रसोई बनती है। एक थाली में सात जगह निकाल कर विनायक जी को भोग लगता है। मंगल गीत गाते हैं। वर-वधु की माता स्नान कर कोरे कपड़े पीली साढ़ी पहनती है, माया की स्थापना होती है, पहली राखी विनायक जी को बाँधकर सभी सुहागनों के राखी बान्धते हैं, मेहन्दी लगाकर बिहाणा गाते हैं।

विनायक की सामग्री:- - रोली, चावल, मोली, फल, प्रसाद, पान, पुष्प (लाल पीला), दूब, सुपारी, गणेश जी का पाना, नारियल डोरी, ७ मिट्टी का सिकोरा, ५ दिया, धी, मेंहदी, पीठी, ५-७ लकड़ी, २ आम की डाली, गुड़, २ डगरा, २ बेलन, १ कटोरी चावल, १ कटोरी गेहूँ, १ कटोरी नमक, १ कटोरी मूँग, ७ हल्दी गाँठ, ७ सिक्का, १-१ मीटर लाल-सफेद कपड़ा, मुँग की दाल थोड़ी पिसी हुई (बिड़द बड़ा के लिए), पापड़, खाजा, चूनड़ी की लाल साढ़ी तणी पर देने के लिए, २ पाटा, २ गड़ीया, रूई, अगरबत्ती, १ कटोरी धी।

विनायक बैठता है उस दिन से बियाणा गाते हैं।

सांझ- संझोकड़िया -

विवाह के घर में संध्या समय दीपक संजोकर औरतें सांझ-संझोकड़ियां के गीत गाती हैं। पितरों की आगवानी व आशीर्वाद के लिये यह दीपक करते हैं।

नोट:

- १) सभी पूजा में पूर्व पश्चिम दिशा में मुंह कर के बैठते हैं।
- २) हाथ-काम के बाद में शादी के दिन तक माया तथा गणेशजी को भोग लगाने के बाद सर्वप्रथम वर/कन्या भोजन करते हैं।

३) हाथ-काम पांच या तीन दिन का लिया जाता है।

४) सांभ संझोकड़ियां विनायक के दिन से फेरों दिन तक गाया जाता है।

बिहाणा-

शादी में हम तीन दिन पाँच दिन या एक दिन के बिहाणे गाते हैं, चौकी पर कलश रखते हैं कलश में पानी भर कर, स्वास्तिक बना कर, आम का पल्लव रख कर, उस पर फल रख कर नीचे गेहुँ बिछाकर २ दिन, पाँच या ७ बिहाणे गाते हैं, शादी वाले दिन पूरे १६ बिहाणे गाते हैं हर दिन मेहन्दी घालते हैं, पीठी भी घोल कर थोड़ा-थोड़ा हाथ पीला करते हैं। बिहाणा गाने वाली औरतें नाखुन में मेहन्दी लगाती हैं।

साँझ्या-

साँझ में गणेश जी के आगे धी का दिया जलाते हैं तथा सींज्या के गीत गाये जाते हैं।

आंगणा का कार्यक्रम-

शाम होने के बाद काम-काज निबटा कर घर की और बाहर की स्त्रियाँ मिलजुल कर बैठती हैं। देवी देवता, बनोला, बना-बनी, सुहाग-कामण बीरा सेवरा, झाला वारणा, हँसी मजाक के गीत आंगणा के गीतों में शामिल हैं।

बीरा सामाः:-

जब मायरेदार विवाह के घर आते हैं तो उन्हें बाजे गाजे से साथ बधाकर लिया जाता है। पूजा की थाली शर्वत के ग्लास, भाइयों को पेचा। भाई-भाई, बच्चे, मायरेदार घर के गेट पर खड़े होते हैं। वहाँ जाकर बहन भाई को टीका करती है। भाई गेट पर मोड़ की साढ़ी टाँग कर बहन को चुनड़ी ओढ़ता है। शर्वत पिलाया जाता है और आरती की जाती है। बीरा के गीत और बहन का गर्विलापन का स्वर वातावरण को अनूठी शोभा प्रदान करता है।

मायरा-

मायरा में बन्ना या बन्नी द्वारा विनायक जी की पूजा की जाती है। भाई अपनी बहन, बहनोई, भाणजे, भाणजी सगा सम्बन्धी सभी के वस्त्र आदि लाते हैं बहन के वस्त्र, आभूषण, चप्पल तथा सब तरह के श्रृंगार के सामान लाते हैं। बनड़ी को पायल, बिछिया, नथ, चूड़ा, चुन्दड़ी, चप्पल और श्रृंगार। बन्ना हो तो उसको कपड़े लाते हैं। फिर भाई रिश्तेदारों के बीच ससुराल के सभी लोगों को सामर्थ्य के अनुसार भेंट देता है, जिसे मायरा भरना कहते हैं।

कोरथ या बरणा-

लड़की वाले बरणा लेकर जाते हैं। जिसमें जंवाई की पोशाक, मिठाई, फलफूल मेवा, रूपैये आदि लेकर जाते हैं। बरणा में मिलनी की जाती हैं। जंवाई की खोल भरी जाती है व जंवाई के वस्त्र भी होते हैं।

बरी-

लड़के वाले लड़की के यहाँ बरी ले कर जाते हैं। जिसमें वधू के लिए गहने साड़ियाँ, श्रृंगार के सामान, मेवा, सुपारी, खोल का समान, छोटे भाई बहन के कपड़े इत्यादि होते हैं।

बरी का सामान:- बोरला या माँगटीका, लाल ब्लाउज में स्वास्तिक, मोली का चार गोला, गुलाबी कागज में बरी की लिस्ट, वस्त्रों का साढ़े तीन बेस, देवता का फुलड़ा, सावन सूत, पड़ला का सामान चार चांदीकी डिब्बी (मेन, रोली, मेंहदी, गुड़) सिन्दूर दानी, शीशा, कंघा, पायल, विछिया, इत्र, सुहागपूड़ा, तेल की शीशी, लाल चोटी या रिबन, चादी का सिक्का और आभूषण इत्यादि।

कुछ परिवारों में चिकनी कोथली भी बरी के साथ भेजने का प्रचलन है। बरी भेजने से पूर्व उसकी पूजा की जाती है।

बींद या बींदणी बनने से पहले-

बींद या बींदणी बनने से पहले पीठी सिर से नीचे उतारते हुए, और

झोल डाल कर नहलाते हैं। इस दिन सारा परिवार झोल डालता है। नहाने के पश्चात् पाटा पर विनायक व बनड़ा या बनड़ी खड़े हो जाते हैं। माथे पर टीका लगाकर लकदन लेते हैं। सुहागन स्त्री लकदन लेती है। तत्पश्चात मामाजी बनड़ा या बनड़ी और विनायक के हाथ में रूपैया देते हैं। पाटा के सामने सिकोरों में खोपरा, मूंग और सवा रूपैया डालकर उलटा रखते हैं। बनड़ा को जूती, बनड़ी को चप्पल पहनाकर मामाजी उससे सिकोरा बधरवाते हैं। उसके बाद मामा के घर के कपड़े पहन कर माया के सामने बनड़ी को चूड़ा, बिछिया पायल, नथ पहनाते हैं। माया की पूजा की जाती है, कुछ लोगों के यहां गोर भी पूजते हैं। दूल्हे को दही खाजा से मुँह जुठाते हैं। उसके बाद निकासी की तैयारी की जाती है।

तौरण निकासी-

वर जब विवाहार्थ घर से निकलता है उसे निकासी कहते हैं। नहा धोकर वर सजधज कर घोड़ी पर बैठता है। बींद के घोड़ी पर चढ़ने के बाद माँ घोड़ी की पूजा करती है और भीगी चने की दाल घोड़ी को खिलाती है। माँ द्वारा आँचल का नेग और भाभी-काकी द्वारा काजल घलाई, शीशा दिखाई, भुनभुना बजाई इत्यादी करवा कर नेग देने का रिवाज है। जँवाइयों द्वारा लगाम पकड़ाई करवा कर नेग दिया जाता है। घर के अन्य सदस्य रूपयों तथा लाडू से वारणा करते हैं। सुहासिनी द्वारा जल पात्र लेकर सामेला करने का भी रिवाज है। वर द्वारा कलश में रुपया डाला जाता है। वर के साथ घोड़ी के उपर कुँवारी कन्या बैठती है जो नमक और राई की पोटली से वर की नजर उतारती रहती है।

नोट: रास्ते में मन्दिर पड़ता हो तो बारात उस रास्ते से निकलती है।

टूटया -

बरात रवाना होने पर वर के घर की स्त्रियाँ शहर की स्त्रियाँ को बुलाकर फेरे के समय टूटया कार्यक्रम करती हैं। वर-वधु बनकर

विवाह करना, पंडया बनकर विवाह की बधाई लाना और वर्णन करना। कोई स्त्री चुड़ा वाली बन चुड़ा पहनाती और मजाक करती है। कई मजाक के कार्यक्रम होने के बाद बधावे गाये जाते हैं। दूसरे दिन पीले पेट का कार्यक्रम रखते हैं। (आजकल एक ही स्थान पर विवाह होने अथवा स्त्रियों के भी बारात में शामिल होने से यह प्रथा धीरे-धीरे समाप्त हो रही है।)

दुकाव एवं बारात स्वागत-

सामग्री: चन्दन चौकी (बाजोट), तोरण, कपासिया मिले हुवे पुष्प, वरमाला दो, पोखने के लिए चांदी का भालरा, बिलोवणे की रस्सी, काजल, चांदी का रूपैया, बँधा हुआ दही।

बारात पहुँचने पर कन्या पक्ष द्वारा बारातियों का स्वागत किया जाता है एवं स्त्रियां तालोटा गाती हैं। वर के मामा वर को घोड़ी से गोदी में उठाकर चन्दन चौकी (बाजोट) तक लाते हैं। वर बेरी या खेजड़ी की डाल से तोरण को छूकर दरवाजे के बायीं ओर टांग दिया जाता है। कन्या की माँ वर के आगे खड़ी होकर भालरा, डोरी और ओढ़ने के पल्ले से वर को पोखती (नापती) है।

सासू द्वारा जँवाई टीकने के बाद काकी या भाभी काजल डालती है। उसके बाद वरमाला होती है। वरमाला पश्चात् जँवाई की पीठी उतारी जाती हैं (प्रतिकात्मक रूप में)। लकदन लिया जाता है। फिर कँवर कलेवा का रिवाज है। इसके बाद मामा फेरा किया जाता है। दुल्हन मामा की गोद में दुल्हे के चारों तरफ घूम कर पुष्पों की पंखुड़ियां उछालते हुए चार फेरा देती हैं। तत्पश्चात् सासू दुल्हे की कमर में ओढ़ना डालकर माया के पास ले जाती है। माया की धोक के बाद फेरों में बैठाया जाता है।

चंवरी-

आजकल स्टेज कार्यक्रम को पहला स्थान दिया जाता है। फिर भी चंवरी के बिना विवाह सोचा भी नहीं जा सकता। शुभ मुहूर्त पर

वर-वधू, वधू के माता-पिता पुरोहित के आज्ञानुसार अपना स्थान ग्रह करते हैं। बीचो-बीच होम प्रज्वलित किया जाता है। अग्नि की साक्षी से बीरा सेवरा (बीरा सेवरा धान की फुल्ली से होता है), कन्यादान, मामा सेवरा (मामा सेवरा बेलन या होम करने के सर्वा से किया जाता है।) सप्तपदी पवित्र कार्य संपन्न होते हैं। चंवरी से उठते ही वधू परिजन सहित वर के डेरे तक जाती, वहाँ के लोग आरती कर खोल भरते हैं। बधावे के साथ विवाह की महती प्रक्रिया समाप्त होती है।

विवाह फेरा-

दुल्हा दुल्हन चंवरी में बैठते हैं, सामने दुल्हन के माता-पिता बैठते हैं पण्डित फेरे करवाते हैं।

हथलेवा-

सामग्री: लाल वस्त्र, मेहन्दी, पूजा की थाली, नगद रूपैया।

हथलेवा या हस्त मिलाप का मुहूर्त ही विवाह का असली मुहूर्त होता है, अतः तयशुदा शुभ मुहूर्त में हस्त मिलाप करवाया जाता है। हथलेवे में मेहन्दी काम में ली जाती है जिसे कन्या के बहन-बहनोई पीसते हैं जिसे रंग बाँटना कहते हैं। बहन को नेग एवं बहनोई को रूपैया दिया जाता है। हथलेवा जोड़ने के बाद कन्या दान में वर-वधू को कन्या के माँ बाप नेग देते हैं। सेवरा देने भाई एवं मामाजी आते हैं।

शास्त्र सम्मत विधि के साथ निम्नलिखित लोकाचार भी किये जाते हैं।

- (१) अन्तरपट लगाने का मतलब है कि घर की वात बाहर ना जाये।
- (२) गऊ दान जँवाई को।
- (३) कन्यादान का व्रत करने वालों द्वारा कन्या को चंवरी की मुंह दिखाई।
- (४) फेरों के बाद वर-कन्या पर वार-फेर।
- (५) माता-पिता पर घोल (नजर उतारण)
- (६) वर की बहन द्वारा वर-वधू का आरता करें तथा आरता पर नेग दें।
- (७) कन्या की भुवा द्वारा माता-पिता का आरता करें तथा आरता पर नेग

दें।

- (८) चंवरी की साड़ी ओढ़ाने वालों द्वारा बेटी को साड़ी व जँवाई को नेग तथा पान खिलाना। फेरे के बाद वर पक्ष और कन्या पक्ष वाले अपन बड़े बुजुर्गों को बधाई (विवाह की शुभकामना) देते हैं।
- (९) फेरों से उठते ही लड़के का बहनोई या कोई बुर्जुग ससुराल की तरफ से खोल भरते हैं। फेरो के खोल भरने के बाद वर-वधु को माया की धोक दिलाते हैं।
- (१०) जो फेरा का व्रत करते हैं (कन्यावल) फेरे के बाद वधु का मुँह देख कर नेग देते हैं एवं व्रत खोलते हैं।

पेरावणी-

पेरावणी में विदाई की तैयारी की जाती है। बेटी, जवाई को साथ बिठाकर बेटी को मेहन्दी लगाई जाती है तथा कोरी साड़ी ओढ़ाई जाती है। वर पक्ष के बुर्जुग को बाजोट पर बैठाकर काँसी एवं चांदी के दो बाटका में रूपैया डालकर दुशाला के साथ दिया जाता है। पेरावणी में बाटका के साथ सगाजी का श्रंगार करते हैं। कुकुं का छापा, मिठाई रूपैया की माला पहनाई जाती है। सगा सगी के रूप में गुड़ा-गुड़ी भेंट दी जाती है एवं सगाजी को पीला ओढ़ाया जाता है। समधी से तिलक लगाकर ५-७ या उससे अधिक मिलनी होती हैं।

फेर पाटा-

पंडित द्वारा फेर पाटा की रस्म अदा की जाती है। वर-वधुको पान के पत्ते का मोड़ लगाया जाता है। वर पक्ष वाले की तरफ से वधु के लिये फेर पाटा का बेस आता है जो वधु के गोड़ पर रखा जाता है। ससुराजी वह को गोड़े पर बैठाकर अगूँठी पहनाते हैं फिर विदाई होती है।

पेरावनी से उठने के बाद वर द्वारा तनी का, भट्टी का और बे के बर्तन (सात हाँडियों को बे का बर्तन कहा जाता है), का नेग होता है।



माया के पास वर-वधु को ले जाकर देवता का प्रसाद व नारियल बधारा जाता है। वर कन्या का दही-खाजे से मुंह जुठाकर घर के बड़े लोग बेटी जँवाई को विदाई देते हैं।

विदाई-

विदाई के बक्त रसोई घर या माया के कमरे की दहलीज की पूजा की जाती है। थोड़ा सा गोबर, गुड़ या लड्डू, सवा रूपैया रखकर कुंकुं मोली का छींटा देकर थली पूजाई जाती है। वर कन्या को तिलक लगा कर सीख देते हैं। वधु को वधु की माँ चांदी के प्याला में खोल व रूपैया डालकर लाल कपड़े से बाँधकर देती है, जो वधु ससूराल में गाड़ी से उतरते ही सासू या जो सुहागन महिला वर-वधु को बधारते हैं उन्हें पगा लागकर दे देती हैं।

सामा लेवणा-

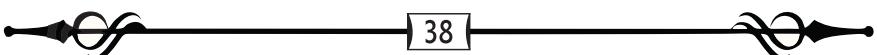
वधु के माथे पर चांदी के कलश में रूपैया डालकर, जल भरकर आम का पल्लव एवं फल के साथ रखें। वर आगे एवं वधु पीछे चलती है। वर वधु के उपर ओढ़ने से छत की जाती है जिसे जँवाई पकड़ते हैं। वधु की पटली में नथ लगाने की भी परम्परा है जिसको अन्दर आने के बाद खोल लिया जाता है।

बार रुकाई-

बहन बेटीयों द्वारा घर के मुख्य द्वार पर वर वधु की बार रुकाई का दस्तूर है। बहन बेटीयों को नेग देकर वर-वधु का गृह प्रवेश किया जाता है।

गृह प्रवेश-

घर के आँगन में हिरमिच व चूने से पगल्या एवं थाल माँड़ने का चलन है। थाली में सखिया माँड़कर, गुड़, पतासा, मूँग, चावल, पैसा, सुपारी, खारक डालकर माँड़ने के उपर रखा जाता है। प्रवेश के समय बहु को बाया पैर एवं वर को दाहिना पैर भीतर रखना चाहिए। बहु के पैर में कुंकुं लगाने का भी प्रचलन है। वर कटार से



एक-एक थाली वायें और दायें खिसकाते जाता है और बहु बिना आवाज किये वो थालीयां एक के अन्दर एक उठाते जाती हैं और सब थालीयां एकट्ठी कर के सासू को देती हैं। सासू बहु को नेग देती है और बहु की पटली में लगाई नथ खोल लेती हैं। तत्पश्चात् सास बहु से भण्डार घर में धी और गुड़ में हाथ लगवाती हैं। फिर एक बार गठजोड़ा बधार दिया जाता है। उसी दिन मन्दिर भी भेजा जाता है। मन्दिर जाने से पहले वधु द्वारा सिर धोने का प्रचलन है।

सिर गुथी -

सिर गुथी में बहु को गद्दी पर बैठाकर ननद या भुवा सासू पड़ले के सामान से सिर गुथी करती है। उसके बाद मोड़ नहीं बाँधा जाता है। सिर गुथी में सिन्दूर लगाकर बोर लगाया जाता है। लाख का चूड़ा (लखेसरी) मोमबत्ती या कोयला से हलका गरम कर के बहु को पहनाया जाता है। उसके बाद जल का ढींटा देकर चूड़ा में मोली बाँधते हैं। बहु को तिलक लगाकर गुड़ से मुँह जुठा दें।

पग-पकड़ाई -

सिर गुथी के बाद पग पकड़ाई होती है, पग पकड़ाई में घर के बुर्जुग बहु से पैसों और रूपैयों की कोथली में हाथ डलवाते हैं और बहु जितना रूपैया निकाले उसी रूपया को नेग स्वरूप देते हैं। उसके बाद घर के बड़े चौकी पर बैठते हैं। बहु उन्हें प्रणाम करती है और वो बहु को नेग देते हैं। अन्तिम में देवर भाभी के गोद में बैठता है और भाभी कान खींचकर नेग देती हैं। पग पकड़ाई के बाद घुमाने का नेग भी किया जाता है। जिसमें जोड़े से पुरुष वर को एवं महिला वधु को नेग देकर घुमाती है। फिर जुआ-जुई खिलाकर मनोरंजन करते हैं।

सुहाग थाल-

एक थाल में लापसी चावल, बड़ी की सब्जी पुरस कर सात सुहागन वधु के साथ बैठती हैं। वर उसमें धी डालता है और बहु रोकती हैं।

फिर सब सुहागनें चांदी के रूपैये से वधु का मुंह जुठाती हैं अन्त में वर-वधु भी एक दूसरे को खिलाते हैं।

शाम में वर की माँ (सिर धोकर)-पिता, वर-वधु माया के सामने बैठकर पूजा करते हैं। वर-वधु एक दूसरे का काँकड़ डोरा खोलते हैं। कहीं-कहीं रात में राती जोगा देने का भी प्रचलन है।

मन्दिर से आने के बाद एवं पग पकड़ाई आदि नेग के बाद घर के देवता को भी नारियल बधारते हैं।

शादी के बाद गणेशजी का प्रसाद किया जाता है। तोरण-तणी, बे का वर्तन सब घर में ले आते हैं।

इस प्रकार हंसी खुशी के वातावरण में विवाह का कार्य सम्पन्न होता है।

फिर आए हुए मेहमानों को विदाई दी जाती है, साल भर तक के सारे त्यौहारों में उपहार भेजे जाते हैं, पहले श्रावण में बहू पीहर रहती है, पूनम के दिन बेटा लेने जाता है, भादो के एकम के दिन बहू तीज के सत्तू व मिठाई, फल, कपड़े वगैरह लेकर आती हैं। बहू को तीज का सिन्जारा भेजा जाता है। दिपावली में लड़की के ससुराल मिठाई, कपड़े पटाखे भेजे जाते हैं, बहू को साड़ी गहने दिए जाते हैं। संकान्ति में फीनी, घेवर, गौद, मेथी के लड्डू बेटी के ससुराल भेजे जाते हैं। बेटी व समधिन के कपड़े भी भेजे जाते हैं।

बहू द्वारा सक्रान्ति पर किए जाने वाले नेग

ससुरजी को दाख का प्याला देना -

प्यालो भरियो दाखा को सुसरो म्हारो लाखा को, किशमिश से भरकर चांदी का प्याला ससुरजी को देते हैं। सास-ससुर, जेठ-जेठाणी, ननद-ननदोई आदि की सूती सेज करते हैं, पुरुषों को नारियल व रूपैया देते हैं, औरतों को साड़ी-ब्लाउज।

ननद ननदोई की सूती सेज-

ननद के कपड़े, ननदोई के कपड़े, गहने श्रृंगार का समान, मिठाई आदि । ननद ननदोई को जोड़े से बैठाकर, भाभी टीका लगाकर समान व रूपैया देती है । वापस ननदोई द्वारा रूपैया दीए जाने का रिवाज है ।

खूटी चीर-

भाभी-ननद को चावल जिमाकर साड़ी ओढ़ती है, बहन भाई को पास में खड़ा रखती है, फिर पूछती है “जिस्या चावल ओढ़या चीर बताओ बाइजी कठे थारो बीर”, फिर ननद कहती है, “जिस्या चावल ओढ़या चीर, ए ऊभा भाभी म्हारा बीर” ।

पीर का गेला पेराना-

सासुजी को पगे लगकर साड़ी पहनाते हैं ।

सरवर स्नान-

सासूजी को स्नान करवाकर साड़ी पहनाते हैं ।

पेढ़ी उतारना-

सासूजी-दादी सासूजी को 7 या 11 सीढ़ीयों से हाथ पकड़कर उतारते हैं, हर सीढ़ी में रूपैया रखते हैं, बाद में पगे लगाकर रूपये देते हैं ।

देवर-जेठ को घेवर-फीणी पुरसना-

थारे स्नेह री सुगंध भीनी-भीनी जीमो म्हारा जेठजी (देवरजी) घेवर-फीणी ।

भगवान के पट खोलना-

ठाकुरजी के परदा, नारीयल व रूपये चढ़ाकर भगवान के पट खुलवाते हैं ।

सासु साड़ी बाग-बाड़ी-

बाग में आकर सासूजी को साड़ी पहनाते हैं ।

काजल टीकी-

बारह महिना तक ननद को काजल टीकी, लगाकर माथे की टीकी

के रंग बिरंगे पत्ते के साथ में सोने चांदी की मीने की बनी टीकी,
मेकअप का सामान, कपड़े एवं नगदी रूपया देते हैं।

नोट - माथा चुपड़ कर मांग टीका भी देते हैं।

मेहन्दी लगाना-

ननद के बारह महिना मेहन्दी लगाकर कपड़े वगैरह देते हैं। चाँदी का
प्याला, अंगुठी, मेहन्दी, नगदी रूपया अपनी इच्छानुसार देते हैं।

चप्पल पहनाना-

बारह महिना ननद को चप्पल पहना कर चप्पल, साथ में पायल
विछिया व कपड़े देते हैं।

आंवती लक्ष्मी साड़ी लेण्-

सक्रान्ति के दिन सासूजी आपकी बहू को दरवाजे के पास खड़ी
करके तिलक लगाती हैं, साड़ी ओढ़ाती हैं।

ससुरजी को गुड़ की भेली व रूपये देते हैं, आ लो सुसराजी गुड़ की
भेली बताओ थांकी हेली।

गुजिया भरना-

कुंवरी जेठुती को बारह महीने तक हर महीने पाव चीज (जैसे
काजु, किशमिश, मिसरी, मखाणा) आदि देना, बाद में डेस देना।

पग पुजाई-

संक्रान्ति पर घर की बहु ससुर जी, दादा ससुर जी या जेठ जी की
पग पुजाई करती है। एक चांदी के बाटके या प्याले में कच्चे दूध
से पैर धोती है। घोटी हुई केशर से पैर में टीका लगाते हैं। साथ में
नेग के रूपये और चांदी का प्याला या बाटका जिसमें पैर धोते हैं।
उसे भी देते हैं।

मेथी के लड्डु-

दादी ससुर या ससुर किसी को मेथी के लड्डु परोसते हैं, टीका
काढ़कर हाथ में रूपया देते हैं। यदि दादी सासु, सासु को परोसते
हैं, तो नगदी रूपया पगे पड़नी का दे देते हैं।

गौंद गिरी के लड्डु या चक्की-मिठाई मेथी के लड्डु की तरह ही परोसते हैं।

मेवा- लड्डु या चक्की की जगह मेवा भी परोसते हैं।

श्रृंगार पेटी-

यह सुहासनी का होता है। इसमें साढ़ी, लहंगा, ब्लाऊज, रूमाल, चप्पल, गहना, चांदी के समान, शाल, चदरा, खोली, जंवाई का कपड़ा एक जोड़ी, श्रृंगार के सारे समान एक पेटी में डालकर देते हैं।

चीर ओढ़ाना-

साढ़ी, लहंगा, ब्लाऊज, रूमाल, चप्पल, साथ में अपनी इच्छानुसार गहना सुहासनी को देते हैं।

स्नान फ्लाना-

तीन साढ़ी, लहंगा, ब्लाऊज, रूमाल, तैल, सेन्ट, साबुन, मग, बाल्टी, धामा, तौलिया, चांदी का एक बर्तन सुहासनी को देते हैं।

नाश्ता-

चाँदी की प्लेट में मिठाई भरकर साथ में इच्छानुसार नगदी रूपया सुहासनी को देते हैं।

पान सुपारी-

चाँदी के प्याले में पान के साथ नगदी रूपया देते हैं। यदि सुपारी देते हैं तो साथ में सरोता और नगदी रूपया भी देते हैं।

दूध-

देवर, नानदा, जेठुता को चांदी का लोटा या गिलास दूध भरकर देते हैं साथ में रूपया भी देते हैं।

गुन्जा-

मेवा, लड़के का कपड़ा एवं नगदी रूपया लड़कों को देते हैं। इसमें घड़ी, बटन कुछ भी अपनी इच्छानुसार दे सकते हैं।

पुरसावणी-

ससुर, काकी ससुर, मामी ससुर, मासी ससुर, जेठ, देवर, ननदोई

आदि को मिठाई परोसते हैं, साथ में रुपया भी देते हैं।
इत्यादि कई नेग किये जाते हैं।

होली पर बेटी के ससुराल मिठाई कपड़े वा रंग पिचकारी भेजते हैं, बहू को साड़ी देते हैं। गणगौर पर बहू 16 दिन गणगौर पूजने पीहर जाती है, सिन्जारा के दिन बेटा लेने जाता है, बहू के सिन्जारा भेजा जाता है, बहु मिठाई, फल मेवा व कपड़े लेकर आती है। इस प्रकार हर त्यौहार में, जन्मदिन, शादी के दिन, व विशेष दिनों में यह आदान-प्रदान होता है।

गृह-प्रवेश



नए घर में प्रवेश से पूर्व वास्तु शांति अर्थात् यज्ञादि धार्मिक कार्य अवश्य करवाने चाहिए। वास्तु शांति कराने से भवन की नकारात्मक ऊर्जा समाप्त हो जाती है तभी घर शुभ प्रभाव देता है। जिससे जीवन में खुशी व सुख-समृद्धि आती है। वास्तु-शास्त्र के अनुसार मंगलाचरण सहित वाद्य ध्वनि करते हुए कुलदेव की पूजा व बड़ों का सम्मान करके और ब्राह्मणों को प्रसन्न करके गृह प्रवेश करना चाहिए।

आप जब भी कोई नया घर या मकान खरीदते हैं तो उसमें प्रवेश से पहले उसकी वास्तु शांति करायी जाती है। जाने अनजाने हमारे द्वारा खरीदे या बनाये गये मकाने में कोई भी दोष हो तो वास्तु शांति करवा के दोष को दूर किया जाता है। इसमें वास्तु देव का विशेष पूजन किया जाता है, जिससे हमारे घर में सुख शांति बनी रहती है।

वास्तु का अर्थ है मनुष्य और भगवान का रहने का स्थान। वास्तु शास्त्र प्राचीन विज्ञान है जो सृष्टि के मुख्य तत्वों के द्वारा निःशुल्क देने में आने वाले लाभ प्राप्त करने में मदद करता है। ये मुख्य तत्व हैं-आकाश, पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु। वास्तु देव वास्तव में दिशाओं के, प्रकृति के पांच तत्वों के, प्राकृतिक स्त्रोतों और उसके साथ जुड़ी हुई वस्तुओं के देव हैं। हम प्रत्येक प्रकार के वास्तु दोष दूर करने के लिए वास्तु शांति करवाते हैं। उसके कारण जमीन या बांधकाम में, प्रकृति अथवा वातावरण में रहा हुआ वास्तु दोष दूर होता है। वास्तु दोष हो वैसी बिल्डिंग में कोई बड़ा भांग तोड़ करने के लिए वास्तु शास्त्र के अनुसार पूजा करने में आती है। उर्पयुक्त हिसाब से परिस्थिति में प्रकृति या वातावरण के द्वारा होने वाली खराब असर को टालने के लिए आपको एक निश्चित वास्तु शांति करनी चाहिए।

वास्तु शांति (गृह प्रवेश के पूजन) की विधि-

स्वस्तिवचन, गणपति स्मरण, संकल्प, श्री गणपति पूजन, कलश स्थापन और पूजन, पुनःवचन, अभिषेक, शोडेशमात्रेर का पूजन, वसोधरा पूजन, औशेया मंत्रजाप, नान्दी श्राद्ध, आचार्य आदि का वरेन, योग्ने

पूजन, क्षेत्रपाल पूजन, अग्नि स्थापन, नवग्रह स्थापन और पूजन, वास्तु मंडला पूजन और स्थापन, गृह हवन, वास्तु देवता होम, बलिदान, पूर्णाहुति, त्रिसुत्रेवस्तेन, जलदुग्धारा और ध्वजा पताका स्थापन, वास्तुपुरुष-प्रार्थना, दक्षिणा संकल्प, ब्राह्मण भोजन, उत्तर भोजन, अभिषेक, विसर्जन उपयुक्त वास्तु शांति पूजा के हिस्सा है।

गृह-प्रवेश के आरंभ में गृह-वास्तु की शांति अवश्य कर लेनी चाहिए। यह गृह मनुष्य के लिए ऐहिक एवं पारलोकिक सुख तथा शान्तिप्रद बने इस उद्देश्य से गृह वास्तु शांति कर्म का प्रतिपादन ऋषियों द्वारा किया गया है। कर्मकाण्ड में वास्तुशांति का विषय अत्यधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि जरा सी भी त्रुटि रह जाने से लाखों एवं करोड़ों रूपये व्यय करके बनाया हुआ गृह अनिष्टकारी अथवा गृह निर्माणकर्ता, शिल्पकार अथवा गृह वास्तु शांति कराने वाले विद्वान् के लिए घातक हो सकता है। वास्तु शांति करवाने वाले योग्य पंडित का चुनाव अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है, कारण कि वास्तु शांति का कार्य यदि वैदिक विधि द्वारा पूर्णतः संपन्न नहीं होता तो गृहपिण्ड एवं गृहप्रवेश का मुहूर्त भी निरर्थक हो जाता है। अतः गृह निर्माण कर्ता को कर्मकाण्डी विद्वान् का चुनाव अत्यधिक विचारपूर्वक करना चाहिए।

गृहशांति पूजन करवाने से लाभ

- यदि गृहस्वामी गृह-प्रवेश के पूर्व गृह-शांति पूजन संपन्न करता है, तो वह सदैव सुख को प्राप्त करता है।
- लक्ष्मी का स्थाई निवास रहता है, गृह निर्माता को धन से संबंधित ऋण आदि की समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ता है।
- घर का वातावरण भी शांत, सुकून प्रदान करने वाला होता है। बीमारीयों से बचाव होता है।
- घर में रहने वाले लोग प्रसन्नता, आनंद आदि का अनुभव करते हैं।
- किसी भी प्रकार के अमंगल, अनिष्ट आदि होने की संभावना समाप्त हो जाती है।
- घर में देवी-देवताओं का वास होता है, उनके प्रभाव से भूत-प्रेतादि की

बाधाएं नहीं होती एवं उनका जोर नहीं चलता ।

- घर में वास्तुदोष नहीं होने से एवं गृह वास्तु देवता के प्रसन्न होने से हर क्षेत्र में सफलता मिलती है ।
- सुसज्जित भवन में गृह स्वामी अपनी धर्मपत्नी तथा परिवारीक जनों के साथ मंगल गीतादि से युक्त होकर यदि नवीन गृह में प्रवेश करता है तो वह अत्यधिक श्रैष्ठ फलदायक होता है ।

नींव पूजा-

नया घर बनाने से पूर्व पंडित से अच्छा मुहूर्त दिखा कर नींव पूजा की जाती है । नींव पूजा में छोटे-छोटे ताम्बे के पांच कलश (सभी कलश में छोटी-छोटी सोने की टिकड़ी डाल कर), चाँदी का नाग-नागिन का जोड़ा-१, चाँदी का कछुआ-१, पंडित द्वारा पूजा कर के नींव में रखा जाता है ।

नींव के ऊपर तीन दिन संध्या समय धी का एक दीपक जलाया जाता है । इस समय काम आने वाली तगारी, औजार तथा इंटें आदि घर मालिक द्वारा नए लाने चाहिए ।

गृह प्रवेश की विधि-

पंडित से मुहूर्त निकलवा कर नए घर में ३ दिन-५ दिन-७ दिन, जैसे पंडित जी कहे उस अनुसार पूजा विठाई जाती है । जिसे गृह-शान्ति या देवी देवता प्रसन्न करने की पूजा कहते हैं ।

यह पूजा नए घर में होती है । इस घर में मुहूर्त होने तक खाना नहीं पकाया जाता । पंडितों का खाना भी आप पहले जहाँ रह रहे हों वहीं से आता है ।

तत्पश्चात पुराने घर से पंडित जी विधिवत गणेश पूजन कर के, मंगल कलश में शुद्ध जल भरकर उसमें आम के पांच या ग्यारह पत्तों के बीच नारियल रखें । कलश व हरा नारियल पर कुमकुम से स्वस्तिक का चिन्ह बनाएं । नए घर में प्रवेश के समय घर की स्वामिनी अपने सर पर यह कलश रखे और गृह स्वामी अपने पुराने भगवान् को लेकर नए घर में

प्रवेश करना चाहिए।

गृह प्रवेश एक जोड़ा, दो जोड़ा, चार जोड़ा या ७ जोड़ा से प्रवेश करना चाहिए। घर की स्त्रियाँ, कोई चांदी के प्याले में दही ले कर, कोई गहना का डब्बा लेकर एवं पुरुष हरा नारियल या हरे फल ले कर घर में प्रवेश करते हैं। कोई भी खाली हाथ प्रवेश नहीं करता है।

भगवान गणेश की मूर्ति, दक्षिणावर्ती शंख, श्री यंत्र को गृह प्रवेश वाले दिन घर में ले जाना चाहिए।

गृह प्रवेश से पहले घर के बाहर, बाढ़ी की माँ गाय की पूजा कर के उसे साड़ी-ब्लाउज ओढ़ा कर व गाय ले कर आने वाले को रूपैया दिया जाता है, वहीं पांच कुंवारी ८/९ वर्ष उम्र की कन्याओं की भी पूजा की जाती है और उन्हें रूपैया या कपड़ा दिया जाता है।

घर के गेट पर केले के थांब लगाना चाहिए और घर को बंदनवार, रंगोली, फूलों से सजाना चाहिए।

मंगल गीतों के साथ नए घर में प्रवेश करना चाहिए। पुरुष पहले दाहिना पैर तथा स्त्री बांया पैर बढ़ा कर नए घर में प्रवेश करें।

गृह प्रवेश के बाद, अन्दर घुसते ही पहले तोरण की, सुआ (तोता) की पूजा करते हैं।

घर में घुसते समय धान का लावा और दूब छिड़कते हुए प्रवेश करते हैं। तत्पश्चात तनी की पूजा कर के तनी बाँधी जाती है।

तनी बाँधने के बाद घट्टी या मिक्सी की पूजा, भाड़ू की पूजा और चूल्हा या गैस की पूजा कि जाती है।

रसोई की पूजा-

किचन में गैस चूल्हा, पानी रखने के स्थान और स्टोर की जगह धूप, दीपक के साथ कुमकुम, हल्दी, चावल आदि से पूजन कर स्वस्तिक चिन्ह बना देने चाहिए। पहले दिन रसोई में गुड़ व हरी सब्जी रखना चाहिए। चूल्हे पर दूध उफानना चाहिए। दूध उफानने का टोपिया, कुकर व कढ़ाई नई लानी चाहिए। कोई मिठाई बनाकर उसका भोग लगाना चाहिए। पील

चावल या लापसी व बड़ी की सब्जी बनाई जा सकती है। घर में बनाया भोजन सबसे पहले भगवान को भोग लगाएं। गौग्रास निकाल कर अपने परिवार, मित्रों के साथ ब्राह्मण भोजन कराएं।

गृह के आन्तरिक कक्ष

घर के भीतर किस दिशामें कौनसा कक्ष होना चाहिये इसको विभिन्न ग्रन्थों में इस प्रकार बताया गया है-

- „पूर्व में- स्नानगृह ।
- „आग्नेय में- रसोई ।
- „दक्षिण में- शयनकक्ष, ओखली रखने का स्थान ।
- „नैऋत्य में- शस्त्रागार, सूतिकागृह, वस्त्र रखने का स्थान, गृहसामग्री, शौचालय, बड़े भाई अथवा पिता का कमरा ।
- „पश्चिम में- भोजन करने का स्थान ।
- „वायव्य में- अन्न-भण्डार, पशुगृह, शौचालय ।
- „उत्तर में- देवगृह, भण्डार, जल रखने का स्थान, धन-संग्रह का स्थान ।
- „ईशान में- देवगृह (पूजागृह), जल रखने का स्थान ।
- „पूर्व-आग्नेय में- मन्यन-कार्य करने का स्थान ।
- „आग्नेय-दक्षिण में- धूत रखने का स्थान ।
- „दक्षिण-नैऋत्य में- शौचालय ।
- „नैऋत्य-पश्चिम में- विद्याभ्यास ।
- „वायव्य-उत्तर में- रतिगृह ।
- „उत्तर-ईशान में- औषध रखने तथा चिकित्सा करनेका स्थान ।
- „ईशान-पूर्व में- सब वस्तुओं का संग्रह करनेका स्थान ।

- १) तहखाना पूर्व, उत्तर अथवा ईशानकी तरफ बनाना चाहिये ।
- २) भारी सामान नैऋत्य दिशामें रखना चाहिये । पूर्व, उत्तर अथवा ईशान में भारी सामान यथासम्भव नहीं रखना चाहिये ।

- ३) जिस कार्य में अग्नि की आवश्यकता पड़ती हो, वह कार्य आग्नेय दिशा में करना चाहिये ।
- ४) दीपक का मुख यदि पूर्व की ओर करके रखा जाये तो आयु की वृद्धि होती है, उत्तर की ओर करके रखा जाये तो धनकी प्राप्ति होती है, पश्चिम की ओर करके रखा जाये तो दुःख प्राप्त होता है और दक्षिण की जगह बल्ब, ट्यूबलाइट आदि समझने चाहिये ।
- ५) बीच में नीचा तथा चारों ओर ऊँचा आँगन होने से पुत्रका नाश होता है ।
- ६) यदि घर के पश्चिम में दो दरवाजे अथवा दो कमरे हों, तो उस घर में रहने से दुःख की प्राप्ति होती है ।
- ७) दुकान, आफिस, फैक्ट्री आदि में मालिक को पूर्व अथवा उत्तर की ओर मुख करके बैठना चाहिये ।
- ८) दुकान की वायव्य दिशा में रखा गया माल शीघ्र विक्री होता है । फैक्ट्री में भी तैयार माल वायव्य दिशा में रखना चाहिये । भारी मशीन आदि पश्चिम-दक्षिण में रखनी चाहिये ।
- ९) दुकान का मुख वायव्य दिशा में होने से विक्री अच्छी होती है ।
- १०) ईशान दिशा में पति-पत्नी को शयन नहीं करना चाहिये, अन्यथा कोई बड़ा रोग हो सकता है ।
- ११) पूजा-पाठ, ध्यान, विद्याध्ययन आदि सभी शुभ कार्य पूर्व अथवा उत्तर दिशा की ओर मुख करके ही करने चाहिये ।
- १२) नृत्यशाला पूर्व, पश्चिम, वायव्य और आग्नेय दिशा में बनानी चाहिये ।
- १३) घर के नैऋत्य भाग में किरायेदार या अतिथि को नहीं ठहराना चाहिये, अन्यथा वह स्थायी हो सकता है । उन्हें वायव्य भाग में ठहराना ही उचित है ।

इनका ध्यान रखें अपने नए या पुराने घर में—

रुरसोई घर में पूजा की आलमारी या मंदिर नहीं रखना चाहिए ।

रुबेडरूम में भगवान के कैलेंडर, तस्वीरें या फिर धार्मिक आस्था से जुड़ी वस्तुएं न रखें ।

रुधर में ट्रायलेट के बगल में देवस्थान नहीं होना चाहिए ।

रुअपने घर में ईशान कोण अथवा ब्रह्मस्थल में स्फटिक श्रीयंत्र की शुभ मुहूर्त में

स्थापना करें। यह यन्त्र लक्ष्मीप्रदायक भी होता है, साथ ही साथ घर में स्थित वास्तुदोषों का भी निवारण करता है।

रुधर के सभी प्रकार के वास्तु दोष दूर करने के लिए मुख्य द्वार पर एक ओर केले का वृक्ष दूसरी ओर तुलसी का पौधा गमले में लगायें।

रुदुकान की शुभता बढ़ाने के लिए प्रवेश द्वार के दोनों ओर गणपति की मूर्ति या स्टिकर लगायें। एक गणपति की दृष्टि दुकान पर पड़ेगी, दूसरे गणपति की बाहर की ओर।

रुहल्दी को जल में धोलकर एक पान के पत्ते की सहायता से अपने सम्पूर्ण घर में छिड़काव करें। इससे घर में लक्ष्मी का वास तथा शांति भी बनी रहती है।

रुधर में उत्पन्न वास्तुदोष घर के मुखिया को कष्टदायक होते हैं। इसके निवारण के लिये घर के मुखिया को सातमुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

रुयदि आपके घर का मुख्य द्वार दक्षिणमुखी है, तो यह भी मुखिया के लिये हानिकारक होता है। इसके लिये मुख्यद्वार पर श्वेतार्क गणपति की स्थापना करनी चाहिए।

रुअपने घर के पूजा घर में देवताओं के चित्र भूलकर भी आमने-सामने नहीं रखने चाहिए इससे बड़ा दोष उत्पन्न होता है।

रुपूजाकक्ष की दीवारों का रंग सफेद हल्का पीला अथवा हल्का नीला होना चाहिए।

रुयदि भाड़ के बार-बार पैर का स्पर्थ होता है, तो यह धन-नाश का कारण होता है। भाड़ के ऊपर कोई वजनदार वस्तु भी नहीं रखें। ध्यान रखें की बाहर से आने वाले व्यक्ति की दृष्टि भाड़ पर न पड़े।

रुधर की पूर्वोत्तर दिशा में पानी का कलश रखें। इससे घर में समृद्धि आती है।

रुजो मकान बहुत वर्षों से रिक्त हो उसको वास्तु-शांति के बाद में उपयोग में लेना चाहिए। वास्तु-शांति के बाद उस घर को तीन महिने से अधिक समय तक खाली मत रखें।

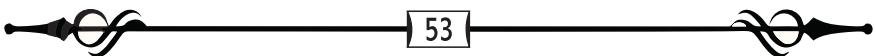
रुभंडार घर कभी भी खाली मत रखें।

रुधर में पानी से भरा मटका हो वहां पर रोज सांझ को दीपक जलाएं।

रुशिला न्यास सर्वप्रथम आग्नेय दिशा में करना चाहिए।



अन्त सुधार



॥ श्री हरि: ॥

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारुतः।

आत्मा अजर अमर अविनाशी है । जीव का नाश नहीं होता है । शरीर का चोला बदलता रहता है । अतः हमें निष्काम होकर जीव की मुक्ति के लिए सतत कर्म करते रहना चाहिए । कहा गया है - अंत भला तो सब भला। बड़े-बड़े ऋषिमुनि यह आकांक्षा करते हैं कि जब उनका देहावसान हो तो गंगा का टट हो, मुख में तुलसी दल हो, ध्यान परमपिता के चरणारविन्द में रहे । मरणासन्न अवस्था में व्यक्ति जैसा चिन्तन करता है उसी के अनुरूप जीव की गति होती है ।

अन्तः-

व्यक्ति की मृत्यु के समय एवं मृत्यु के उपरान्त जीव के कल्याण हेतु पितरों के निमित्त कौन-कौन से कर्म करने चाहिए, किस विधि से करने चाहिए ताकि जीव का कल्याण हो, उसे मोक्ष मिले तथा पितरों का आशीर्वाद भावी पीढ़ी पर बना रहे, घर फलता-फूलता रहे, वंश-वृद्धि होती रहे।

हिन्दू शास्त्रों के प्रमुख संस्कारों में मृत्यु संस्कार अंतिम है किन्तु अति महत्वपूर्ण है । देह और आत्मा की सद्गति के लिए विधान पूर्व इस संस्कार को सम्पन्न करना चाहिए ।

इस संस्कार में मुख्यतः -

पवित्र अग्नि द्वारा दाहकिया से लेकर द्वादशा तक के कर्म सम्पन्न करवाये जाते हैं ।

मृत्यु के समय क्या करें ?

मृत्यु के समय सबसे बड़ी सेवा है, किसी भी उपाय से मरणासन्न रोगी का मन संसार से हटाकर भगवान् में लगा देना ।

इसके लिए

- उसके पास बैठकर घर की, संसार की, कारोबार की, किन्हीं में राग या द्वेष हों तो उसकी, ममता के पदार्थों की तथा अपने दुःख की चर्चा बिल्कुल

ही न करें।

- जब तक चेतना रहे भगवान् के स्वरूप की, लीला की तथा उनके तत्व की बात सुनावें। श्रीमद्भगवद्गीता के सातवें, नवें, बारहवें, चौदहवें, पन्द्रह अध्याय का विशेष रूप से अर्थ सुनावें। भागवत के एकादश स्कन्ध, योवसिष्ठ का वैराग्य प्रकरण, उपनिषदों के चुने हुए स्थलों का अर्थ सुनावें। जगत् के प्राणी-पदार्थ की, रागद्वेष उत्पन्न करने वाली बात, ममता-मोह को जगाने तथा बढ़ाने वाली चर्चा बिल्कुल ही भूलकर भी न करें।
- रोगी भगवान के साकार रूप का प्रेमी हो तो उसको अपने इष्ट-भगवान विष्णु, राम, कृष्ण, शिव, दुर्गा, गणेश किसी भी भगवद रूप का मनोहर चित्र सतत दिखाते रहे। निराकार-निर्गुण का उपासक हो तो उसे आत्मा या ब्रह्म के सच्चिदानन्द अद्वेत तत्व की चर्चा सुनावें।
- उस स्थान को पवित्र धूप, धुएँ, कर्पूर से सुगन्धित रखें, कर्पूर या घृत के दीपक की शीतल परमोज्जल ज्योति उसे दिखावें।
- समर्थ हो और रूचि हो तो उसके द्वारा उसके इष्ट भगवत्स्वरूप की मूर्ति पूजन करवावें।
- रोगी की क्षमता के अनुसार गंगाजल का अधिक या कम पान करावें। उसमें तुलसी के पत्ते अलग पीसकर छानकर मिला दें या तुलसी मिश्रित गंगाजल पिलाते रहें।
- गले में रूचि के अनुसार तुलसी या रूद्राक्ष की माला पहना दें। मस्तक पर रूचि के अनुसार त्रिपुण्ड या उर्ध्वपुण्ड तिलक पवित्र चन्दन से, गोपीचन्दन आदि से कर दें।
- रोगी के निकट रामरक्षा या महा मृत्युंजयस्त्रोत का पाठ करें। एकदम अन्तिम समय पवित्र नारायण नाम की विपुल ध्वनि करें।
- मृत्यु के समय तथा मृत्यु के बाद भी नारायण नाम की या अपने इष्ट भगवान्नाम की तुमुल ध्वनि करें। जब तक उसकी अर्थी चली न जाये, तबतक यथाशक्य कोई घरवाले रोवें नहीं।

अष्टमादान

अगर हो सके तो अंत समय पर अष्टमा दान करना चाहिए।

सामग्री -

१. काला कपड़ा(१ मीटर), २. खड़ाऊ, ३. सोने की टिकड़ी, ४. चाँदी की टिकड़ी, ५. लोहे की कड़ाही, ६. रुई, ७. काला तिल, ८. काला उड्ड, ९. गुड़, १०. नमक, ११. धी, १२. सरसों तेल आधा लीटर, १३. सप्तधान (चना दाल, चावल, गेहूं, उरद दाल, अरहर, मोठ दाल) तथा गाय यथा शक्ति ।

अंत समय की तैयारी

तीर्थों का जल, मथुरा जी की डोरी जमुना जल से धो के, भगवान का वस्त्र, गीता जी की पुस्तक, गोपी चन्दन, ब्रजरज, रुई, माचीस, तुलसी जी की शांख, गोबर की गोयठी, काला तिल, जौ, सोना, चाँदी, मूंगा, मोती (पंचरत्न), ओढ़ाने का रेशमी मुगाटा (राम नाम की चदर) ।

अंत समय का सीधा

पीतल की थाली या परात, कटोरी, १ किलो गेहूं या आटा, धी, गुड़ की डली । प्राणी का हाथ लगाकर चौरस्ते पर रखा देते हैं या शिव मन्दिर में रख कर आ जाते हैं ।

अंत समय का स्नान

जब देखते हैं कि प्राणी ऊपर का सांस लेने लगा हैं और पल्स देखते-देखते पता चलता है कि अब प्राणी कुछ ही मिनट का है, तब थोड़ा सा गर्म पानी करके प्राणी को नहला देना चाहिए और नया कपड़ा पहना कर गोपी चन्दन लगाकर तुलसी माला पहना दें । तीर्थों का जल बार-बार देते रहे । दही-मिश्री चटा दें । विस्तर से नीचे ले लें । गीता जी का पाठ सुनावे कीर्तन करें । अगर औरत है तो चोटी खोल देते हैं । कमर की डोरी एवं सभी प्रकार के गांठ खोल देते हैं (यानि बंधन खोल देते हैं) । इसे जीवन्त स्नान कहते हैं । अंतिम अवस्था आने के पूर्व स्वर्गीय होने वाले का सिर उनके लड़के या पोते के घुटने पर रखना चाहिए ।

मरणोपरान्त

मृत्यु के बाद व्यक्ति को स्नान कराया जाता है तथा जल में गंगाजल मिलाया जाता है। साथ ही समस्त तीर्थों का आह्वान भी करना चाहिए। स्नान परिवार के सदस्यों को करवाना चाहिए। स्नान के बाद अगर जनेऊ नहीं हो तो जनेऊ धारण करवाते हैं तथा नीचे का वस्त्र पहनाया जाता है। गोपीचंदन का तिलक लगाया जाता है, अगर संभव हो तो द्वादश तिलक लगाना चाहिए। उसके पश्चात पुष्प माला से अंलकृत करना चाहिए। घर की बहु या बेटा या घर का कोई सदस्य नीचे गोबर का चौका लम्बाई में लगाते हैं। उसपर ब्रजरज, छिड़क कर मृतक का सिर दक्षिण की तरफ करके पसार देते हैं। सिर की तरफ तुलसी का बिडला रख कर अगरबत्ती जला देते हैं। मृतक के पास कीर्तन करना चाहिए सांसारिक बातें नहीं करनी चाहिए।

मृतक का सिर दक्षिण की तरफ रहता है। मृत्यु शैया के ऊपर सूखा घाँस बिछाना चाहिए, घाँस के उपर बिछाने के लिए ढाई मीटर वस्त्र मंगाना चाहिए, पुरुषों के लिए सफेद वस्त्र व स्त्रियों के लिए लाल वस्त्र होना चाहिए, बांसों को बान्धने व फिर शव को बान्धने के लिए नारियल डोरी होनी चाहिए, थोड़ा कच्चा सूत होना जरूरी हैं। मृतक को दुशाला ओढ़ाते हैं व राम नाम की चढ़र भी ओढ़ाते हैं। स्नानोपरान्त वस्त्र कोरे पहनाने चाहिए, किसी भी उम्र की स्त्री होवे, उसमें तांबे का सिक्का रखकर एक स्त्री के योनिद्वार पर रखें, स्त्री से सन्तान उत्पन्न होती है इसीलिए उसकी योनि खाली नहीं रहनी चाहिए जिससे शव दाह के समय आवाज नहीं होगी। एक-एक दोनों कांख में एवं एक-एक दोनों जंधा पर रखा जाता है। फिर कपड़े पहनाने चाहिए।

सुहागन स्त्री के लिए सुहागन स्त्री को चुन्डडी की साड़ी पहनाकर, माथा ढकै, बाल बनाकर रिबन डालें (या मोली) लेकिन गाँठ नहीं लगावें, नथ, मंगलसूत्र, चुड़ी, बिंदिया आदि गहने पहनाएं। लेकिन चिता पर रखने से पहले गहने खोल लेवें, पहले नहीं खोलें, गहनों के साथ दाह संस्कार नहीं करें। मुँह में सोना की तुष, एक आँख में मूँगा, एक आँख में मोती रखें, देवी के

चढ़ी कुमकुम से बिन्दी लगावें हथेलियों पराथलियों मे कुमकुम की मेहन्दी लगावे, मेहन्दी अशुद्ध मानी गई है इसके प्रयोग से सदगति नहीं होती है अतः इसका प्रयोग न करें। गले में मोती बाँधे, हाथ में मोली बाँधे, लेकिन किसी चीज में गांठ न लगावे, तुलसी की माला पहनावे इस प्रकार शृंगार करके पति से मांग भरावे, स्नान कराने के बाद अपने परिवार की स्त्रियों के सिवाय दूसरी स्त्रियों की दृष्टि से बचावे।

विधवा स्त्री के लिए

इस कार्य में वो पहनती है वैसे कपड़े पहनावें राम नाम की चढ़र व दुशाला ओढ़ावें, बाकी कार्य स्त्रियों के जैसे ही होते हैं।

स्त्री को पहले ससुराल की साड़ी उसके बाद पीहर की साड़ी और तब बेटा पोता के ससुराल की साड़ी या दुशाला ओढ़ाने का रिवाज है।

पुरुष को पहले घर के वस्त्र उढ़ाने के बाद राम नाम की चढ़र ओढ़ाइ जाती है तब बेटा पोता के ससुराल की दुशाला ओढ़ाने की रिवाज है।

इसके बाद अन्त्येष्टि संस्कार करने वाला दीक्षण दिशा की तरफ मुख करके बैठे। पवित्री (कुशा की अंगुठी) धारण करें हाथ में जौ चावल, पुष्प, जल, कुशा लेकर संस्कार का संकल्प करें। कियाकर्म कराने का ज्येष्ठ पुत्र को ही अधिकार है, उनकी अनुपस्थित में उस वक्त जैसा योग बने वैसा करें।

पिण्डदान

सर्व प्रथम पिण्ड देने से पहले शवस्थान पर, पिण्ड को भूमि के उपर कुशा पर रखें। मृतक के घर के सदस्य जो मृतक से छोटे हैं हाथ में नारियल लेकर चार परिकमा करें।

प्रथम पिण्ड:- घर के अन्दर शव संस्कार करके संकल्प के बाद दिया जाए, यह पिण्ड मृतक के पेड़ (कटि प्रदेश) पर रखा जाए।

दूसरा पिण्ड:- मृतक शैया पर शव स्थापना के बाद दिया जाए, यह पिण्ड मृतक के पेट पर रखा जाय इस पिण्ड से वास्तु देवता को प्रसन्नता होती है।

तीसरा पिण्ड:- इस पिण्ड को पेट और वक्ष की सन्धि पर रखा जाए, इस

पिण्ड को देने से भूतादिक गगनचारी देवतागण प्रसन्न होते हैं, यह पिण्ड जहाँ पर चार रास्ते मिलते हो ऐसे चोराहे स्थल पर रख दिया जाए।

चोथा पिण्डः- शमशान पर शव रखकर छाती पर अर्पित करे, इस पिण्ड को देने से दसों दिशाओं को सन्तुष्टि होती है।

पांचवा पिण्डः- चितारोहण के बाद इस पिण्ड को सिर पर रखा जाए। कोरे वस्त्र पहने, जूते नहीं पहने, औरत की सुहाग की चीजें मृतक के सिर के नीचे रखें।

शवयात्रा

परिवारजनों के परिक्षमा करने के बाद घर की एक महिला तेल का दीपक हाथ मे लेकर बाहर बायाँ तरफ खड़ी रहें। जिस समय पुरुष मृतक शैया को उठाकर भगवान् का नाम लेते हुए शमशान के लिए प्रस्थान करें। उस समय घर की बहुएं पल्ले से पंथ बुहारती हैं।

सबसे पहले चरण तरफ से शव को बाहर करें मध्य के पिण्ड के बाद सिर आगे रहता है। शव के दोनों हाथ तथा दोनों पैर बाँध देना चाहिए तथा शव को अकेला नहीं छोड़ना चाहिए। शव के पास श्री भगवान् का नाम रटते रहना चाहिए जिससे भूत-बेतालादि शव पर कब्जा करने की चेष्टा न करें।

कुछ लोकाचार में यदि मृतक के प्रपौत्र हो चुका है तो पहले शव उठाने में उसके हाथ, फिर पौत्र हो चुका हो तो उसके हाथ लगावें। इसके बाद पुत्रगण, छोटे भाई परिवारी जन शव उठायें।

दौहित्र का कंधा लगाना भी लोकाचार में बहुत महत्व रखता है।

शव को ले जाने के बाद मृतक के जो कपड़े पहने हुए थे वो घर की बहुएं घर के बाहर बाई तरफ रख देवें। आंगन घर की बहुएं धोएं, सबसे पहले मृतक की पत्नि हो तो पत्नि अन्यथा घर की बड़ी बहु स्नान करे, बाद में सभी स्नान करें।

अग्नि संस्कार

घर से निकलते वक्त पैर आगे रहते हैं तथा विश्राम के बाद सिर आगे रखकर ले जाते हैं। शमशान घाट पर जहां अग्नि संस्कार करना हो वहां पानी से धोकर स्थान साफ करना चाहिए। उसके बाद गोबर से लीपकर जौ, तिल विखेरकर कुशा को रखकर फिर लकड़ी जमाते हैं। बाद में मृतक शरीर को चिता पर लिटाते हैं। मृतक के पैर उत्तर तरफ तथा सिर दक्षिण की तरफ रखा जाता है। मृतक के शरीर के आभूषण तथा ऊपर के वस्त्र निकाल लेना चाहिए। उसके बाद मृतक शरीर पर धी लगा दिया जाता है। साथ में तुलसी की सुखी लकड़ी, चंदन का चूरा, चंदन का मुठिया, अगरबत्ती एवं कपूर चिता पर रखा जाता है। धी देने के बाद कपूर को दोनों आंखों पर तथा मुंह आदि पर रखते हैं। तुलसी की लकड़ी कमर के ऊपर ही रखना चाहिए। बचे हुए दो पिण्ड वायु नाम यम के लिए दिये जाते हैं। पिण्ड को हमेशा अंगूठे की ओर से छोड़ना चाहिए। यह देकर फिर मुखाग्नि दी जाती है है इसके बाद कपाल किया करते हैं। कपाल किया के बाद पंच लकड़ी दी जाती है आजकल कंडे के टुकड़े कर वो पंच लकड़ी की जगह देते हैं। इसके बाद मुखाग्नि देने वाला तथा साथ में जाने वाले दागिये भी स्नान करते हैं। परन्तु वर्तमान में सिर्फ मुखाग्नि देने वाला ही स्नान करता है तथा स्नान के बाद तिलांजलि देते हैं। मुखाग्नि देने के पहले मुखाग्नि देने वाला उसका सम्बोधन कर दहाड़कर (जोर से) आवाज देता है। जिस लोटे में अग्नि लाते हैं उसे मांजकर उसमें जल भरा जाता है तथा आगे जाकर कार बांधी जाती है। घर पहुंचने पर मृतक को संबोधन कर आवाज देते हैं। उसके बाद सब दागिये रवाना हो जाते हैं।

अर्थी जाने के बाद पूरे घर को धुलवाना चाहिए। उस दिन घर का अन्न नहीं खाते हैं बेटों या पोतों के ससुराल से खिचड़ी ले के आते हैं, उससे सामान मँगवाकर खिचड़ी व बड़ी का साग बनता है उसे कड़वा ग्रास कहते हैं। वही सगे घरवालों को थाली पर बिठाते हैं। भोजन के पूर्व नित्य गऊग्रास निकालना चाहिए।

शाम के समय जहाँ पर शव रखा गया था, वहाँ पर बालू या आटा विछाकर ऊपर से ढक देते हैं शाम को उसके उपर तेल का दीपक जलाकर फिर से ढक देते हैं दूसरे दिन सुबह ढक्कन उठाकर देखते हैं। उस मट्टी पर जैसा चित्र अंकित होता है कहते हैं मनुष्य उसी योनि में जायेगा ऐसा लोकाचार है। उस मट्टी को फैंक देते हैं। दस दिन तक रोज रात को तेल का दीपक जहाँ आटा या बालू रखा गया था वहाँ तथा एक घर के आगे जलाते हैं। मृतक को ले जाने के बाद आंगन धुलने के बाद जो सतरन्जी विछाते हैं वो ग्यारहवें दिन ही उठती है। पहले नहीं उठती है। बेटे-बहुएं वहीं सतरन्जी पर विस्तर डालकर सोते हैं, बारह दिन ब्रह्माचर्य का सभी पालन करें। किया कर्म करने वाला पुत्र एक समय अन्न खाता है व नियम पूर्वक रहता है। लेकिन उसको भूखा नहीं रखना चाहिए। फलाहार देते रहना चाहिए। कारज करने वाले को बिल्कुल शुद्ध संत की तरह रहना चाहिए। अपना अलग आसन विछाकर बैठना चाहिए। उसके खाने के बर्तन भी अलग रखते हैं।

गरुड पुराण तीये के दिन शुरू होती है।

नोट- अगर शनि, अमावश्या तीसरा दिन ही आ जाती है तो चौथे दिन से तिये का काम शुरू करते हैं।

तीये (तीसरा) कि रसोई

तीसरे दिन मिठाई, पूरी-साग बनाते हैं। बाद में नौ दिन तक नित नई रसोई बनाते हैं। तिये से ही घर के बाहर एक अभ्यागत (भिखारी) जिसे तारकिया भी कहते हैं, को खाना खिलाते हैं। दसवें दिन उसको एक जोड़ी कपड़ा, रुपया, बर्तन देकर उसको विदा दे देते हैं।

तीसरे दिन से ही गाय की पत्तल दस दिनों तक बराबर निकालते हैं।

तीये की सामग्री -

गोपी चन्दन, भोज पत्र, कच्चा सुत, सफेद ऊन, सफेद वस्त्र आधा मी., तिल १०० ग्राम, जो ५० ग्राम, सुपारी ५, पेड़ा १०० ग्राम, फल ५ पीस, जोका आटा २.५ केजी, भोटा की छोटी कांटी १५ पीस, थैली पिली यालाल साटन की १, पिली सरसौं, मृग छाला टुकड़ा, सोने का तुस, अगरबत्ती, रुई, सलाई, मिट्टी का दिया १०० पीस, कलश २ पीस, कुण्डा २ पीस, कुशा आसन २ पीस, कुशा, दुध

कधा १ पांव, दही थोड़ा, शहद, धी ५० ग्राम, चिनी, गोबर, गंगाजल, पत्तल ५ पिस, दोना ५ पीस, खुदरा पैसा, थाली, भोटा, बाल्टी, कुदाली, चिमटा, भाडु बाँस का

तीसरे दिन मृतक की पत्नी हो तो, पहले पत्नी अन्यथा घर की बड़ी बहू पहले सिर धोकर स्नान करती हैं। बाद में अन्य ग्राम बहुएं व पारिवारिक औरतें स्नान करती हैं। अन्जली देने का तरीका - पानी में तिल व जौ डालकर डाब को अंगूठे में पिरोकर धोंबे भर भर कर सात-सात अन्जलियाँ देते हैं। यही प्रक्रिया ग्यारहवें दिन भी करते हैं।

जहाँ पर अन्तिम संस्कार होता हैं वहाँ पर किया कम करने वाला बेटा पानी से सिंचने जाता है। वहाँ से अस्थियां लेकर आते हैं। भस्मी को पास ही की नदी या तालाब में ले जाते हैं। अस्थियां घर पर लाकर लाल कपड़े की कोथली में डालकर घर के बाहर के भाग में टांग देते हैं। जिस दिन हरिद्वार जाते हैं, बेटा गले में अस्थियां पहनता है। एक पेड़ के नीचे पूजा होती है। फिर जो बेटा-बहू हरिद्वार जाते हैं वो अस्थियाँ लेकर हरिद्वार के लिए रवाना हो जाते हैं बाकी सभी घर आ जाते हैं।

दसवें दिन उड्ड के आटे का पिण्ड लगता है।

ग्यारहवें दिन का कार्य

ग्यारहवें दिन घर की शुद्धि होती है। परा घर धोया जाता है। सिर धोकर नहाने की प्रक्रिया तीसरे दिन जैसी ही होती है। यानि सूतक निकालते हैं। पूरे घर को चौका, बर्तन सभी छूत के सारे समान शुद्ध करना चाहिए। छूत के सारे समान कंगाली या भिखारी को देते हैं। सुबह से चूल्हा नहीं चलता है।

ग्यारहवें दिन घाट की पूजा में खाट, पुराना बिस्तर तकिया चढ़र, पुराने बर्तन, कपड़ा घर से जाता है बाकि सभी बाजार से खरीदते हैं। जब घाट पर ग्यारहवें दिन पूजा होकर शान्ति की छींटा आता है। तब पूरे घर में छींटा दे कर शुद्ध करते हैं। शोक सूचक चददर या पोतिया सभी गले से उतार कर घाट पर ही छोड़ कर आते हैं। किया का छींटा आने के बाद रसोई बनाई जाती हैं। उसके बाद चूल्हा जलता है। उस दिन साग, कढाई की पूँड़ी और बुंदिया-भुजिया बनता है।

नारायण बलि का कार्य ग्यारहवें दिन किया जाता है। नारायण बलि से पहले क्रिया कर्म करने वाले व्यक्तिका सर्वप्रथम मुँडन होता है, मूँछ, दाढ़ी व काँख के बाल हटाए जाते हैं। हाथ व पैर के नाखुन काटे जाते हैं। बाकी सभी भाई बन्धु मुँडन नहीं करवाते। लेकिन मूँछ, दाढ़ी, काँख के बाल हटाते हैं। नाखुन भी काटते हैं।

नारायण बलि का सामान

रोली, मोली, पान-३१, सुपारी-६०, लौग-६०, इलाइची-६०, सफेद-पीला फूल, दूर्वा, अविर, पीली सरसो १०० ग्राम, सर्वोषधि, पञ्चरत्न, सरतमृतिका, अगरबत्ती, रुई, माचिस, सरसो का तेल १/२ लिटर, गंगा जल, कुशा, जनेऊ १ मुठा, गोटा उड़द १०० ग्राम, पापड़ २ पीस, गोपी चन्दन २ पीस, कच्चा दुध २ किलो, धृत १ किलो, शहद १ शीशी, चिनी १/२ किलो, गोबर, गोमुत्र, कर्पुर १ डीब्बा, नारियलगट-७, आम की डाली-७, चावल ५ किलो, गेहू-१० किलो, दही १ किलो, फल ४ दर्जन(केला, सेब इत्यादी), पेड़ा १ किलो, गोटा मुँग १०० ग्राम, तुलसी पत्ता, लाल कपड़ा १ मीटर, सफेद कपड़ा १ मीटर, पीला कपड़ा आधा मीटर, हरा कपड़ा आधा मीटर, काला कपड़ा आधा मीटर, पीला रेशमी कपड़ा १ मीटर, तिल १ किलो ५०० ग्राम, जौ आधा किलो, पत्तल १ बण्डल, दोना ५० पीस, मिट्टी का दिया ७५ पीस, मिट्टी का नदिया २ पीस, मिट्टी का छोटा कलश ६ पीस, ताम्बा का लोटा छोटा (ढक्कन सहित) १ पीस, लोहाका कड़ाही छोटी १ पीस, पीतल का टोपिया १ पीस, चम्मच १ पीस, कच्चा सूत, ऊन सफेद ५० ग्राम, जौ का आटा २ किलो ५०० ग्राम, सिन्दुर, हवन करने व खिरान्न बनाने वास्ते सूखी लकड़ी १० किलो, नवग्रह समीधा, स्वर्ण बिष्णु प्रतिमा १, ताम्बा का शंकर प्रतिमा १, चांदी का ब्रह्म प्रतिमा १, लोटा यम १, शीशा प्रेत १, स्वर्ण की टीकड़ी २, चांदी की टीकड़ी ५, भोजपत्र, शुद्ध बालू, पंचपात्र १ सेट, आसन ६ पीस।

महापात्र को देने के लिए सीधा का सामान-

मिर्च, हल्दी, नमक, जीरा, तेल, आलु ५ किलो, दाल इत्यादी श्रद्धा अनुसार।

महापात्र भोजन (५ ब्राह्मण)

पुड़ी, सब्जी, जलेबी, दही इत्यादी।

महापात्र को देने वास्ते

भुक्त बस्त्र, धोती, दरी, मच्छरदानी, बेडसीट, तकिया, चादर, छाता, चप्पल,

वर्तन, सोडिया, रजाई इत्यादी यथा शक्ति

बारहवें दिन का कार्य

सुबह घर पर द्वादशा सपिण्डी श्राद्ध होता है। इस श्राद्ध में घर के छोटे एकादशी व्रत एवं दान का संकल्प लेते हैं।

द्वादशा में बारह घड़े भरे जाते हैं, अगर पुरुषोत्तम मास हो तो एक घड़ा अधिक भरा जाता है। यह पीतल का कलश या मिट्टी का घड़ा होता है।

द्वादशा में कुल पन्द्रह पद चढ़ते हैं, तेरह सपिण्डी श्राद्ध में एक शैया दान में, एक गरुड़ पुराण पर।

सपिण्डी श्राद्ध में तेरह ब्राह्मण को पद दिया जाता है।

पद का सामान (पुरुष)-

वस्त्र (धोती कुर्ता), स्वर्ण, चांदी का गोलीया, गोमुखी, गीता, माला, कुषा का आसन, छाता, कपड़े का जूता (चप्पल), जनेउ, पीतल की थाली (या कोई वर्तन), फल, पंच पात्र, चम्मच एवं रूपैया।

पद का सामान (स्त्री)-

वस्त्र (साड़ी, ब्लाउज), सिन्दूर, काजल, स्वर्ण, चांदी, कांच, तेल, कंधा, टिक्की, चप्पल, छाता, पीतल की थाली (या कोई वर्तन), फल एवं रूपैया। यह पूजा एवं हवन तुरन्त उठती है।

सपिण्डी श्राद्ध के बाद अपने गुरुको शैया दान या सुख शैया का कार्य किया जाता है। अगर गुरु ना मिले तो कोई भी ब्राह्मण को शैया दान दिया जाता है।

शैया दान का सामान-

पाँच वरतन, सभी प्रकार के अन्न, धी, तेल, मसाले, चीनी, गुड़, टोर्च, साबुन, पेस्ट, तेल, लालटेन, माचिस, पलंग, रजाई, बिस्तर, तकिया, मच्छर दानी, चद्दर, ओढ़ने की चद्दर, छाता, जूता, चांदी का प्याला, सोने की भगवान की मूर्ती, सोना-चांदी यथाशक्ति आभुषण, गुरु गुरियाणी के कपड़े आदि दिये जाते हैं। लालटेन या इमरजेन्सी लाइट जला कर दें। गुरुजी को पलंग पर बिठा कर मुँह में लड्डू एवं हाथ मे रूपैया देते हैं, फिर उन्हें सुलाते हैं। बेटा सिर की तरफ, बहुए पांव की तरफ से पलंग पकड़कर गुरुजी को झुलाते हैं? पूछते हैं गुरुजी सोरा की दोरा। गुरुजी कहते हैं घणा ही सोरा। वो सारा सामान

गुरुजी को देते हैं।

गौदान

गौदान में गाय बाढ़ी की माँ हो तो अति उत्तम। गाय बाढ़ी की रस्सी गौदान करने वालेको स्वयं देना चाहिए।

गौदान देते समय गोबर या मिट्टी से बेतरनी बनाकर पंडीत जी द्वारा पूजा होती है। गाय की पूँछ से सब छींटा लेते हैं एवम् गाय के कान मे एकादशी व दान धरम बोलते हैं।

गौदान का सामान-

गाय की साड़ी (जरी वाली), बाढ़ी को ब्लाउज, सोना का सींग, चांदी का खुर, तांबा की पीठ, मोती की पूँछ, दाना देने के लिए धामा, बाल्टी, घण्टी, चारा, फूल की माला, दूध दुहने के लिए बाल्टी, गिलास, टोपिया, बड़ा चम्मच, दान में दिया जाता है।

ब्राह्मण भोजन

गौदान के पश्चात् ब्रात्पाण व परिवार तथा समाज का भोजन होता है। ब्राह्मण भोजन के लिए ब्राह्मणों को निमन्त्रण अपनी श्रद्धा अनुसार दें। भोजन पश्चात् दक्षिणा दें कर विदा करें।

शाम को गरुड़ पुराण उठाने एवं पगड़ी का दस्तुर होता है।

गरुड़ पुराण की पूजा

ब्राह्मण भोजन के पश्चात् गरुड़ पुराण उठाने का कार्य होता है। जिसमे पंडित द्वारा गरुण पुराणका अन्तिम अध्याय पढ़कर सुनाया जाता है। गरुड़ पुराण वाचक की पूजा की जाती है एवं गरुड़ पुराण पर एक पद व आभुषण चढ़ाया जाता है।

मृतक की पत्नी के पीहर से कपडे आते हैं और चूड़ी आती हैं, वो मृतक की पत्नी पहनती हैं, बाद में गंगा जी जाने के बाद यह कपडे गंगाजी में डाल देते हैं। बाद में दूसरे कपडे पहनने शुरू करते हैं। सभी बेटा पोता के ससुराल से ज़ंवाई बेटी को कपडे व टोपी या तौलीया दिया जाता है एवं तिलक लगाया जाता है। बाद में आँखे खोलाई होती है। नेवगण या कामवाली लोटे में पानी व हरी डाली लेकर रखती है। घर की औरतें व समधनें तथा अन्य औरतें बाएं हाथ से आँखे धोती हैं, व रूपये देती हैं। सभी मन्दिर जाते हैं।

बहन भाई की आरती करती है। तत्पश्तात् नजदीक के मन्दिर में चावल दाल

का सीधा एवं धनिया पोदीना तथा फल भेजा जाता है फिर उसी मन्दिर में जाकर गरुड़ पुराण समर्पण की जाती है। पंडित जी हरी सामग्री घरवालों को देते हैं।

गरुड़ पुराण के पश्चात् गुड़ लापसी, बड़ी की सब्जी, फुल्का से मुंह जुटाते हैं। घर आने के बाद बेटे माँ से मिलते हैं, बहनें भाइयों को खाना खिलाती हैं। उस दिन सभी बेटे बहुएँ अपने अपने शयन कक्ष में सोते हैं।

क्रिया कर्म करने वाला, गरुड़ पुराण समर्पण करने के बाद सभी को प्रणाम करता है, व सब बड़े उसे शगुन का रूपैया देते हैं।

कोई तेरहवें या चौदहवें दिन गंगा प्रसादी करके गंगाजली खोलते हैं। बहन-बेटियों को सीख देकर एक बार बिदाकर देते हैं। साढ़े पाँच महीनों के अन्दर-अन्दर कभी भी छः माही कर सकते हैं व साढ़े ग्यारह महीनों के अन्दर-अन्दर कभी भी बारा मासी कर सकते हैं।

भोजन जीमाना

पखी का घड़ा का काम होने के बाद, उसी दिन से ब्राह्मण या ब्राह्मणी जीमते हैं। वह दोनों समय नाश्ता खाना सभी करते हैं। साढ़े पाँच महीना तक खाने के बाद भोजन की सीख निकालते हैं। यदि ब्राह्मण को जीमने आने में असुविधा होती है तो सवा महीना जिमाकर बाकी के साढ़े पाँच महीने के हिसाब का धान चून अन्न उनके घर में भेज देते हैं।

जीमने वाले का पांचों कपड़ा, चप्पल या जूता, कछु गहना, चांदी के बर्तन देते हैं। कपड़े पहनाकर टीका निकालकर विदा करते हैं।

पितर भेला

बारह महीने के सारे काम पूरे होने के बाद पितर भेला का काम पंडित द्वारा होता है। एक श्राद्ध निकलने के बाद पित्रभेला होने के बाद प्राणी का श्राद्ध होना शुरू होता है। उसके बाद ही कागोल और गौग्रास निकलता है। प्रथम श्राद्ध में दूध व शक्कर का दान देते हैं। बाद में श्राद्ध होना शुरू होता है। ऐसे तो पिता अपनी बेटी के घर का कभी नहीं खाता है। लेकिन मरने के बाद अगर बेटी, जवाई व दोहिता हो तो बेटी अपने पिता का आसोज सुदी एकम के दिन, नान श्राद्ध करती है।

साल भर तक करने वाले कर्म

१. बारह महीने तक प्राणी के निमित्त दान धर्म करते रहना चाहिए।
२. भागवत यदि प्राणी के नहीं सुना हुआ है। तो उसके निमित्त भागवत पाठ करवाना चाहिए।
३. गीता जी का पाठ ब्राह्मण द्वारा करवाना चाहिए।
४. साढे ग्यारह महीने पर घड़ा भरा जाता है। ब्राह्मण और परिवार भोजन करता है।
५. मरने वाले के बारह दिन के अन्दर ही यदि परिवार का कोई गुजर जाता है तो पहले सारे काम उसके होते हैं। पहले मरने वाले के बाद में।
६. मरने वाले की जब पहली तिथि आती है। तब घर की बहन बेटी को भोजन पर बुलाते हैं।
७. औरत के मरने पर उसके पीहर की भी रस्म होती है। गरुड़ पुराण पर साड़ी, धर्म पूण्य के रूपैये चढ़ाते हैं।

विशेष निवेदन -

प्रायः यह देखा गया है कि मृतक के रिश्तेदारों द्वारा मृत्यु होने पर शाल अथवा साड़ी लाते हैं। कहीं-कहीं तो इसकी संख्या दस से बीस हो जाती है। आज के युग में इतने महंगे वस्त्र लाकर शव पर रखते हैं, यह वस्त्र मात्र एक घटे भी नहीं रहते और शमशान पर जाते ही कोना फाड़कर फेंक देते हैं। इसका कोई औचित्य नहीं है। शव पर मात्र एक ही वस्त्र रखना चाहिए। अन्य रिश्तेदार वस्त्र न लावें और अगर ले भी आवे तो शव पर नहीं रखें। उस वस्त्र को घर पर ही एक ही स्थान पर रख देवें और बाद में किसी गरीब परिवार को बुलाकर देवें। ताकि वह उसका उपयोग कर आपको दुआ दे। इससे मरने वाले की आत्मा को भी शांति मिलेगी। जहां तक हो सके नया वस्त्र बाजार से लावें ही नहीं, बल्कि उतनी राशि उस परिवार को दे देवें। एकत्रित राशि से गाय का चारा, ब्राह्माणों को वस्त्र या किसी विद्यालय को यह राशि दी जावे जो वास्तविक धर्म होगा।

सुआ-सूतक -

भारतीय संस्कृति एवं सनातन धर्म में आचार-विचार को सर्वोपरि महत्व प्रदान किया गया है। मनुष्य के जीवन में कुछ अवस्थाएं ऐसी भी होती हैं, जब

व्यक्ति आशौचावस्था में अर्थात् सुआ-सूतक में रहता है। सुआ-अपने परिवार में नवशिशु के जन्म होने पर वह परिवार निकटतम गौत्री बंधुओं को सुआ लग जाता है। जो दस दिन का माना जाता है। इन दिनों में घर में भगवान की पूजा, मंदिर में देवदर्शन, पित्र कार्य आदि शुभ कार्यों का निषेध किया गया है। यहां तक कि देव मंदिर में प्रवेश तथा पूजन आदि करना भी वर्जित है, किन्तु प्रायः यह देखा गया है कि इस ओर ध्यान नहीं रखते हुए मंदिर परिसर में जाकर परिक्रमा लगाई जाती है जो कि उचित नहीं है। मंदिर में दर्शनादि बाहर से ही किये जाते हैं।

सूतक -

परिवार में (सगौत्र) किसी भी व्यक्ति की मृत्यु/स्वर्गवास होने पर उपरोक्तनुसार देवार्चन पवित्र कार्य आदि शुभ कार्यों का निषेध किया गया है। द्वादशा तथा पगड़ी के कार्यक्रम सम्पन्न होने के बाद अर्थात् बारह रात्रि के उपरांत ही सूतक समाप्त होता है किन्तु देवदर्शन हेतु मंदिरों में जाने के लिए सोलह रात्रि का विधान है। इसके पश्चात् शुद्ध होते हैं। चौथी पीढ़ी में दस रात्रि तक, पांचवी पीढ़ी में छः रात्रि तक एवं छठवीं पीढ़ी में चार दिन तक सूतक माना गया है। शास्त्रानुसार जन्म सूतक (सुआ) और मरण सूतक हेतु नियम एक ही है, किन्तु जन्म सूतक में मंदिर परिसर में तो जा सकते हैं परन्तु मंदिर के अंदर प्रवेश निषेध है। जबकि मरण सूतक में तो पूर्ण रूप से ही मंदिर जाने का निषेध है।

सूतक में भगवान् या किसी बड़े को प्रणाम नहीं करना चाहिए, छोटो को आशीर्वाद भी नहीं देना चाहिए।

विशेष -

आज के युग में इस बात को नजर अंदाज किया जा रहा है जो कि उचित नहीं है वरन् अनिवार्य रूप से इसका पालन किया जाना चाहिए।

बड़े व्रत



मनुष्य को पुण्य के आचरण से सुख और पाप के आचरण से दुःख होता है। संसार का प्रत्येक प्राणी अपने अनुकूल सुख की प्राप्ति और अपने प्रतिकूल दुःख की निवृत्ति चाहता है। मानव की इस परिस्थिति को अवगत कर त्रिकालज्ञ और परहित में रत ऋषिमुनियों ने वेद, पुराण, स्मृति और समस्त निबंधग्रंथों को आत्मसात् कर मानव के कल्याण के हेतु सुख की प्राप्ति तथा दुःख की निवृत्ति के लिए अनेक उपाय कहे हैं। उन्हीं उपायों में से व्रत और उपवास श्रेष्ठ तथा सुगम उपाय हैं। व्रतों के विधान करनेवाले ग्रंथों में व्रत के अनेक अंगों का वर्णन देखने में आता है। उन अंगों का विवेचन करने पर दिखाई पड़ता है कि उपवास भी व्रत का एक प्रमुख अंग है। इसीलिए अनेक स्थलों पर यह कहा गया है कि व्रत और उपवास में परस्पर अंगागि भाव संबंध है। अनेक व्रतों के आचरणकाल में उपवास करने का विधान देखा जाता है।

व्रत, धर्म का साधन माना गया है। संसार के समस्त धर्मों ने किसी न किसी रूप में व्रत और उपवास को अपनाया है। व्रत के आचरण से पापों का नाश, पुण्य का उदय, शरीर और मन की शुद्धि, अभिलषित मनोरथ की प्राप्ति और शांति तथा परम पुरुषार्थ की सिद्धि होती है।

वैदिक काल की अपेक्षा पौराणिक युग में अधिक व्रत देखने में आते हैं। उस काल में व्रत के प्रकार अनेक हो जाते हैं। व्रत के समय व्यवहार में लाए जानेवाले नियमों की कठोरता भी कम हो जाती है तथा नियमों में अनेक प्रकार के विकल्प भी देखने में आते हैं। उदाहरण रूप में जहाँ एकादशी के दिन उपवास करने का विधान है, वहाँ विकल्प में लघु फलाहार और वह भी संभव न हो तो फिर एक बार ओदनरहित अन्नाहार करने तक का विधान शास्त्रसम्मत देखा जाता है। इसी प्रकार किसी भी व्रत के आचरण के लिए तदर्थ विहित समय अपेक्षित है। “वसंते ब्राह्मणोऽग्नी नादधीत” अर्थात् वसंत ऋतु में ब्राह्मण अग्निपरिग्रह व्रत का प्रारंभ करे, इस श्रुति के अनुसार जिस प्रकार वसंत ऋतु में अग्निपरिग्रह व्रत के प्रारंभ करने का विधान है वैसे ही चांद्रायण आदि व्रतों के आचरण के निमित्त वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण तक का विधान है। इस पौराणिक युग में तिथि पर आश्रित रहनेवाले व्रतों की बहुलता है। कुछ व्रत अधिक समय में, कुछ अल्प समय में पूर्ण होते हैं।

नित्य, नैमित्तिक और काम्य, इन भेदों से व्रत तीन प्रकार के होते हैं। जिस व्रत का आचरण सर्वदा के लिए आवश्यक है और जिसके न करने से मानव दोषी होता है वह नित्यव्रत है। सत्य बोलना, पवित्र रहना, इंद्रियों का निग्रह करना, कोध न करना, अश्लील भाषण न करना और परनिंदा न करना आदि नित्यव्रत हैं। किसी प्रकार के पातक के हो जाने पर या अन्य किसी प्रकार के निमित्त के उपस्थित होने पर चांद्रायण प्रभृति जो व्रत किए जाते हैं वे नैमित्तिक व्रत हैं। जो व्रत किसी प्रकार की कामना विशेष से प्रोत्साहित होकर मानव के द्वारा संपन्न किए जाते हैं वे काम्य व्रत हैं स यथा पुत्रप्राप्ति के लिए राजा दिलीप ने जो गोव्रत किया था वह काम्य व्रत है।

पुरुषों एवं स्त्रियों के लिए पृथक् व्रतों का अनुष्ठान कहा है। कतिपय व्रत उभय के लिए सामान्य है तथा कतिपय व्रतों को दोनों मिलकर ही कर सकते हैं। श्रवण शुक्ल पूर्णिमा, हस्त या श्रवण नक्षत्र में किया जानेवाला उपाकर्म व्रत केवल पुरुषों के लिए विहित है। भाद्रपद शुक्ल तृतीया को आचारणीय हरितालिक व्रत केवल स्त्रियों के लिए कहा है। एकादशी जैसा व्रत दोनों ही के लिए सामान्य रूप से विहित है। शुभ मुहूर्त में किए जानेवाले कन्यादान जैसे व्रत दंपति के द्वारा ही किए जा सकते हैं।

प्रत्येक व्रत के आचरण के लिए थोड़ा या बहुत समय निश्चित है। जैसे सत्य और अहिंसा व्रत का पालन करने का समय यावज्जीवन कहा गया है वैसे ही अन्य व्रतों के लिए भी समय निर्धारित है। महाव्रत जैसे व्रत सोलह वर्षों में पर्ण होते हैं। वेदव्रत और ध्वजव्रत की समाप्ति बारह वर्षों में होती है। पंचमहाभूतव्रत, संतानाष्टमीव्रत, शकव्रत और शीलावाप्तिव्रत एक वर्ष तक किया जाता है। अरुंधती व्रत वसंतऋतु में होता है। चैत्रमास में वत्सराधिव्रत, वैशाख मास में स्कंदपष्ठीव्रत, ज्येठ मास में निर्जला एकादशी व्रत, आषाढ़ मास में हरिश्यनव्रत, श्रावण मास में उपाकर्मव्रत, भाद्रपद मास में स्त्रियों के लिए हरितालिकव्रत, आश्विन मास में नवरात्रव्रत, कार्तिक मास में गोपाष्टमीव्रत, मार्गशीर्ष मास में भैरवाष्टमीव्रत, पौष मास में मार्त्तंडव्रत, माघ मास में षट्टितलाव्रत और फाल्गुन मास में महाशिवरात्रिव्रत प्रमुख हैं। महालक्ष्मीव्रत भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को प्रारंभ होकर सोलह दिनों में पूर्ण होता है। प्रत्येक संक्रांति को आचरणीय व्रतों में मेष संक्रांति को सुजन्मावाप्ति व्रत,

किया जाता है। तिथि पर आश्रित रहनेवाले व्रतों में एकादशी व्रत, किया जाता है। तिथि पर आश्रित रहनेवाले व्रतों में एकादशी व्रत, वार पर आश्रित व्रतों में रविवार को सूर्यव्रत, नक्षत्रों में अश्वनी नक्षत्र में शिवव्रत, योगों में विष्णुभयोग में धृतदानव्रत और करणों में नवकरण में विष्णुव्रत का अनुष्ठान विहित है। भक्ति और श्रद्धानुकूल चाहे जब किए जानेवाले व्रतों में सत्यनारायण व्रत प्रमुख है।

किसी भी व्रत के अनुष्ठान के लिए देश और स्थान की शुद्धि अपेक्षित है। उत्तम स्थान में किया हुआ अनुष्ठान शीघ्र तथा अच्छे फल को देनेवाला होता है। इसलिए किसी भी अनुष्ठान के प्रारंभ में संकल्प करते हुए सर्वप्रथम काल तथा देश का उच्चारण करना आवश्यक होता है। व्रतों के आचरण से देवता, ऋषि, पितृ और मानव प्रसन्न होते हैं। ये लोग प्रसन्न होकर मानव को आशीर्वाद देते हैं जिससे उसके अभिलिखित मनोरथ पूर्ण होते हैं। इस प्रकार श्रद्धापूर्वक किए गए व्रत और उपवास के अनुष्ठान से मानव को ऐहिक तथा आमुष्मिक सुखों की प्राप्ति होती है।

संक्रान्ति

महिने की महिने संक्रान्ति व्रत करते हैं और तेरह-तेरह चीजों दान भी करते हैं।

महीने की संक्रान्ति दान

हर महिने की संक्रान्ति का व्रत करते हैं और १३ चीजों का दान करते हैं। कौन से महिने में, क्या दान करना है एवं कौन सी संक्रान्ति है। यह ध्यान करने योग्य है।

१. चैत्र मास - मीन संक्रान्ति - सौभाग्य की वस्तु अन्न-जल दान।
२. बैशाख मास - मेष संक्रान्ति - सत्तु दान एवं अन्न दान।
३. ज्येष्ठ मास - वृष संक्रान्ति - जल दान, शीतल पेय दान।
४. आषाढ़ मास - मिथुन संक्रान्ति - दूध, दही, फल दान।
५. श्रावण मास - कर्क संक्रान्ति - दूध की मिठाई घी दान।
६. भाद्रपद मास - सिंह संक्रान्ति - वस्त्र, गुड़ दान।
७. आश्विन मास - सिंह संक्रान्ति - वस्त्र, गुड़ दान।
८. कार्तिक मास - कन्या संक्रान्ति - दूध, गुड़, तिल दान।

९. मिंगसर मास - वृश्चक संक्रान्ति - घर के समान अन्न दीपक दान।

१०. पौष मास - धनु संक्रान्ति - वस्त्र, तेल दान।

११. माघ मास - मकर संक्रान्ति - तिल, सोना चाँदी धी तेल दान।

१२. फाल्गुन मास - कुंभ संक्रान्ति - जल दान।

पूर्णिमा

पांच धान २५ पूर्णिमा का व्रत करना चाहिए। यह व्रत वैशाख या मिंगसर मास से शुरू करते हैं। पहले पांच पुण्यों को चावल, फिर गेहूँ, फिर मुँग, फिर चना दाल, फिर बाजरी खाकर करते हैं। २५ ब्राह्मण को खाना खिलाते हैं और दक्षिणा देते हैं।

नोट- जो चीज खाते हैं। वहीं ५-५ सेर दान देते हैं।

अमावस्या

तेरह धान की अमावस्या व्रत करना चाहिए। हर एक अमावस्या को चावल, आटा, जौ, बाजरी, अरहर, मूँग, मोठ, हवेजी, उड्ड, जंवार, गवार, मकई, मटर कोई एक धान खाते हैं। जिस धान को खाते हैं वहीं धान एक किलो दान करते हैं। तेरह ब्राह्मण को भोजन कराते हैं साथ में दक्षिणा देते हैं।

नोट - अधिक मास की अमावस्या से यह व्रत शुरू करते हैं।

बावन जी का बेला

पांचों वस्त्र या धोती, उपरणाद्व, एक छाता, गोमुखी माला, कमण्डल, खड़ाऊ, झोली और कन्टोप साथ में सन्ध्या के बर्तन भी देते हैं। एक छींका जिसमें पांच हांडी, किसी भी धातु की चाँदी या पीतल की अपनी इच्छानसार उसमें दूध, दही, धी, चीनी, चावल भरकर देते हैं। चाँदी बाँटते हैं। जिसमें १३ प्याला बनाते हैं। छींका भी बनाते हैं।

बारह प्याला बहन बेटियों को बाँटते हैं। एक प्याला मन्दिर में देते हैं या बावन जी को देते हैं। ब्राह्मण को बावन जी के रूप में वस्त्र एवं छींका देते हैं। मन्दिर में भगवान के वस्त्र देते हैं। साथ में मिश्री देते हैं। एक माला का होम करके १२ ब्राह्मण जिमाते हैं। साथ में दक्षिणा देते हैं।

बारह मास

चैत्र महिने की शुक्लपक्ष की दशमी से आरम्भ करते हैं। बारह महिने पूरा एक समय खाना खाकर यह व्रत करते हैं। गणगौर की पूजाकर के इस व्रत का प्रारम्भ करते हैं।

चैत्र - गणगौर की पूजा करते हैं।

वैशाख - बड़, पीपल सींचना, सोने चाँदी का पत्ता चढ़ाते हैं।

ज्येष्ठ - कोई पछ्ये, तभी पानी पीते हैं। चप्पल नहीं पहनते। किसी के घर नहीं जाते हैं। पानी और चप्पल दान करते हैं।

आषाढ़ - विस्तर पर नहीं सोते हैं। सेज का दान करते हैं। पंखा अपने हाथ से नहीं चलाते हैं। पंखे का दान करते हैं।

सावन - हरा साग नहीं खाते हैं। हरे साग का दान करते हैं।

भादो - दही नहीं खाते हैं। दही का दान करते हैं।

आसोज - दूध के बने पदार्थ नहीं खाते हैं। दूध का दान करते हैं।

कार्तिक - तेल, दाल नहीं खाते हैं। धी-दाल का दान करते हैं। कार्तिक में गंगा स्नान करते हैं।

मिगसर - मुँग नहीं खाते हैं। मुँग का दान करते हैं।

पौष - पूरे महीने बिना नमक से खाना खाते हैं। नमक का दान करते हैं।

माघ - मटके में जल भर कर उस जल से सुबह ४ बजे नहाते हैं। नहाकर सबसे पहले सूर्य भगवान का मुँह देखते हैं। एक माला का हवन करते हैं। तीन वस्त्र ही ओढ़ते, पहनते, बिछाते हैं।

फाराण - होली खेलते हैं। गुलाल भर कर प्याला मन्दिर में देते हैं।

चैत्र - गणगौर की पूजा १६ दिनों तक करके बारस को गवर ईशर की पैरावणी, गहने, कपड़े, श्रृंगार छाबड़ी, खोला भरकर गणगौर को घुमाते हैं। फिर अपने घर के गुरु महाराज या पण्डित जी को गणगौर दे देते हैं। एक माला का होम होता है। ३६५ ब्राह्मण को भोजन करवाते हैं।

नोट - एक साथ सम्भव न हो तो रोज एक ब्राह्मण भी जीमा सकते हैं।

पूरे बारह महीने पण्डित से महीनों का महात्म्य सुनते हैं। उसी अनुसार दान व्रत करते हैं।

जयन्ती व्रत

वैष्णवों के चार जयन्ती व्रत होते हैं। जो वैष्णव जयन्ती व्रत करते हैं। उन्हें इसका उद्यापन अवश्य करना चाहिए।

नरसिंह चतुर्दशी-

१४ ब्राह्मण को खाना खिलाते हैं। दक्षिणा देते हैं। नरसिंह भगवान के मन्दिर में वस्त्र धराते हैं। भेंट धराते हैं। सामग्री के रूप में पताशा या मिश्री भेंट करते हैं।

रामनवमी -

नौ ब्राह्मण को खाना खिलाते हैं। दक्षिणा देते हैं। रामचन्द्र जी के मन्दिर में भगवान के वस्त्र देते हैं। भेंट धराते हैं। पताशा या मिश्री भेंट करते हैं।

बामन द्वादशी -

१२ ब्राह्मण जिमाते हैं। शुक्ल पक्ष की एकादशी और द्वादशी का व्रत करते हैं। बामन भगवान के वस्त्र पहनाते हैं। मिश्री देते हैं।

नोट - सभी जयन्ती व्रतों में फलिहार लेने का नियम है। फिर अपने स्वास्थ्य के अनुसार एवं गुरु घर की आज्ञा अनुसार करते हैं।

जयन्ती व्रत का उद्यापन -

जन्माष्टमी को आठ ब्राह्मण जिमाते हैं। ठाकुर जी का वस्त्र, कुण्डल चांदी की बाँसुरी एवं पाँच किलो फल एवं पंजीरी देते हैं।

कृष्ण पक्ष की अष्टमी को व्रत कर उद्यापन करते हैं।

बुधपूजा -

पण्डित के कहे अनुसार यह व्रत शुरू करते हैं। यह व्रत सुआ, सूतक, अशुद्धता और अन्धेरे पखवारे में नहीं कर सकते हैं। बुधवार को जब अष्टमी तिथि आती है तब यह व्रत शुद्धता से किया जाता है।

इसमें एक धान की आठ वस्तु बनती है। जैसे - कसार, पेड़ा, जगन्नाथ जी के खाजा, गुलगुला, पंधारी के लाडु, पुड़ा, फीणी और कोई भी एक तरह फल आठ नग दान करते हैं। आठ नग ही खाते हैं।

दान करने का नियम - कांसे की छन्नी में आठ नग रखकर लाल कपड़े से बाँधकर ब्राह्मण को या मन्दिर में देते हैं। साथ में दक्षिणा के रूपये भी दिये

जाते हैं।

नोट: खाने के आठ नग शक्तिनुसार जितना बड़ा खा सके यह पूरा व्रती को खाना पड़ता है। दान करने वाले बड़े भी बना सकते हैं।

पञ्चपर्वी

संक्रान्ति, व्यतिपात, बैधृत, पूर्णिमा, अमावस्या, इन तिथियों का व्रत एक साल तक करते हैं और तेरह वस्तु का दान करते हैं। दान में छोटी या बड़ी कोई वस्तु दे सकते हैं। जैसे - मिठाई, फल, मेवा आदि।

पयो व्रत

फाल्गुन बढ़ी एकम से तेरस तक यह व्रत करते हैं। इसमें प्रतिदिन सिर्फ दूध ही पीते हैं और एक माला का हवन करते हैं। प्रतिदिन दो ब्राह्मण को खीर (पय) का भोजन कराकर दक्षिणा देते हैं।

स्वर्गद्वारी के नियम

स्वर्गद्वारी महिने में पाँच व्रत होते हैं। अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति एवं दो ग्यारहस | अमावस्या को जौ का आटा खाते हैं। पूर्णिमा को चावल खाते हैं। संक्रान्ति और एकादशी को फलिहार का व्रत करते हैं।

दान-

इसमें ५ किलो चावल, चाँदी का प्याला, साड़ी, लहंगा, ब्लाउज, रूमाल सुहासणी को देते हैं।

नोट- यह व्रत कई वर्षों बाद आता है। पण्डित के द्वारा पूरी जानकारी करके ही इसका प्रारम्भ करते हैं। कहते हैं कि एक वर्ष में जब तीन सोमवती अमावस्या आती है तब स्वर्गद्वारी होती है।

चैत्र मास

नया सम्वत्

भारतीय धर्मशास्त्रों के अनुसार चैत्र शुक्ल (एकम) से नये वर्ष का आरंभ माना जाता है। इसी दिन से विक्रम सम्वत् का आरंभ होता है। पौराणिक तथा ऐतिहासिक दोनों दृष्टियों से इस तिथि का बड़ा महत्व है।

१. नए वर्ष के प्रारंभ से सबसे पहले सुबह उठते ही भगवान गणेश एवं देव का सुमिरन कर नए वर्ष का हृदय से स्वागत करना चाहिए।

२. सर्वप्रथम प्रातः काल ठाकुरजी के नीम और मिश्री भोग लगाकर हमें प्रसाद रूप में ग्रहण करना चाहिए ।
३. हमें इस दिन चन्द्रमा का दर्शन अवश्य करना चाहिए ।
४. पानी की मटकी, पंखी, जल-व्यवस्था हेतु रुपये दान देना चाहिए । इस दिन पंचांग का दान करते हैं व अपने घर में भी नए वर्ष का पंचांग रखते हैं ।

गणगौर

चैत्र सुदी तीज को गणगौर का व्रत आता है । गणगौर कुँवारी और सुहागने सभी करती हैं । कुवारियाँ अच्छे वर की प्राप्ति हेतु एवं सुहागनें अखण्ड सौभाग्य के लिए यह व्रत करती हैं ।

पूजन विधि

कन्याएँ सोलह दिन तक सुबह माँ गणगौर का पूजन करती हैं और बासिडा के दिन से मिट्टी की गणगौर बनाकर उस की पूजा करते हैं और शाम को दूध पिलाते हैं व धूप खेते हैं । गौर का बंदोरा निकालते हैं व गीत गाते हैं ।

उद्घापन

उद्घापन में करने योग्य बातें -

१. गणगौर के व्रत का उद्घापन शादी के बाद करते हैं ।
२. १६ औरत को भोजन करवाकर एक-एक ब्लाउज पीस व सुहाग पीटारी दी जाती हैं ।
३. गणगौर को वेश पहनाते हैं एवं उसका खोल भी भरते हैं ।

चैत्र उत्तरते एकम मे नवरात्रि प्रारंभ हो जाती है व नवमी को रामनवमी का उत्सव होता है । पूर्णमासी को हनुमान जयन्ती होती है ।

बैशाख

सब महिनों में बैशाख दान, धर्म, जप, हवन इत्यादि शुभ कार्यों के लिए श्रेष्ठ माना जाता है ।

आखा तीज -

१. तीज को नया घड़ा डाल लें। घड़े के साथिया करके मोली बांध दें।
२. दूज की शाम को पांच या सात अनाज का खीचड़ा व अम्लवाना, बड़ी की सब्जी बनाते हैं।
३. तीज की सुबह गेहूं व पाँच या सात अनाज का खीचड़ा अम्लवाना व बड़ी की सब्जी और दुपरतिया फलका बनाते हैं।
४. इस दिन घड़ा व खीचड़े का सीधा, हल्दी, खरबूजा, मतिरा, पंखा, छाता, चप्पल, चीनी व दक्षिणा ब्राह्मण को देवें।
५. इस दिन नए कपड़े पहनने का प्रचलन है।

नरसिंह चौदस

बैशाख सुदी चौदस को बारह बजे भगवान की आरती करके एक समय खाना खाकर यह व्रत किया जाता है।

ज्येष्ठ मास

महेश नवमी

जेठ शुक्ला नवमी को महेश नवमी आती है। पौराणिक कथाओं अनुसार भगवान महेश और माता पार्वती के आर्शीवाद से इसी दिन माहेश्वरी वंशों की उत्पत्ति हुई थी। इसलिए हम माहेश्वरी इस दिन भगवान महेश की पूजा अर्चना कर उत्सव मनाते हैं।

निर्जला एकादशी

१. जेठ शुक्ला एकादशी को निर्जला एकादशी आती है। इस दिन व्रत करना चाहिए।
२. ब्राह्मण को घड़ा, चीनी, पंखा, फल, दक्षिणा आदि देनी चाहिए।

उद्घापन

२६ ब्रात्सण जोड़े को भोजन व सब को घड़ा (गिलास या लोटा भी दे सकते हैं), दक्षिणा पंखी, श्रद्धा अनुसार कपड़े दे। ये बारस को करते हैं।

आषाढ़ मास

देवशयनी एकादशी

आषाढ़ शुक्ला एकादशी को देव शयनी एकादशी आती है। आषाढ़ से कर्तिक की एकादशी तक चौमासा रहता है। चार्तुमास में भगवान विष्णु क्षीर सागर में

शेष शयन करते हैं और इसके बाद कार्तिक शुक्ला देवोत्थनी एकादशी को उठते हैं। इस कारण प्रभु के सोने वाली एकादशी को हरिशयनी और उठने वाली एकादशी को प्रवोधनी एकादशी के नाम से जाना जाता है।

जो देव उठनी एकादशी करें तो लगातार चार महिने एकादशी करनी चाहिए। चौमासे का चार महिने का व्रत करना चाहिए और कार्तिक की एकादशी को उद्यापन करना चाहिए। हो सके तो थाली छोड़कर पत्तल में भोजन करना चाहिए।

चौमासा

आषाढ़ शुक्ला दशमी से कार्तिक शुक्ला द्वादशी तक चौमासा का व्रत करते हैं। इसमें सावन में हरा साग नहीं खाते, भादो में दही नहीं खाते, आसोज में दूध नहीं खाते, कार्तिक में दाल-घी नहीं खाते हैं। कार्तिक में गंगा स्नान भी करना चाहिए।

इसमें व्रत करने वाला एक धान या तीन धान या अपनी स्वास्थ्य के अनुकूल भोजन ग्रहण करते हैं। विद्वान पण्डित के द्वारा पूर्णाहृति पर हवन करते हैं। पैरावणी, सुहाग-छावड़ी, गहना, सुख-सैया आदि देते हैं।

१२५ ब्राह्मण को भोजन करवाते हैं साथ में दक्षिणा देते हैं।

पूजन सामग्री की सूची पण्डित द्वारा मिलती है।

नोट - एक साथ सम्भव न हो तो रोज एक ब्राह्मण भी जीमा सकते हैं।

वैतरणी

वैतरणी का व्रत वैशाख या मिंगसर या माघ की शुक्ल पक्ष की दशमी से शुरू करते हैं। बारह महीने दशमी, एकादशी, द्वादशी का व्रत करते हैं।

एकादशी कोई निकोट करता है कोई दूध फल लेकर करता है। दशमी और बारस को एक धान की रसोई सेंधा नमक की खाते हैं। दूध-घी गाय का ही खाते हैं। पीहर में छोड़कर किसी के घर का एक वर्ष तक नहीं खाते हैं।

पूरे वर्ष तीन धान ही (जौ, चावल, गेहूँ) खाते हैं, चार महीने गेहूँ की रोटी, चार महीने जौ और चार महीने चावल खाते हैं। तेल भी नहीं खाते हैं। दशमी बारस को हाथ से पीसा आटा खाने का नियम है। गेहूँ में जौ नहीं होना चाहिए।

फिर जिसके जैसा सम्भव हो। जमीकन्द का समान भी नहीं खाते हैं, सब्जी आलू, मेरी, सांगरी आदि खा सकते हैं। जो खाना खाते हैं। उसके चार भाग

करते हैं। एक-एक भाग गाय, कुत्ता, भिक्षु एवं स्वयं खाते हैं। पण्डित द्वारा होम होता है। पेरावणी, सुहाग छाबड़ी, गहने, सुख-सेज्या आदि के साथ गौ दान भी देते हैं। ५१ ब्राह्मण जिमाते हैं। दक्षिणा देते हैं।

इसमें पाँचो जयन्ती व्रत भी दूध-फल लेकर करना पड़ता है।

पूजन सामग्री की सूची पण्डित जी द्वारा मिलती है।

नोट - व्रत के समय रजस्वला स्त्री को नमक या चीनी का सेवन नहीं करना चाहिए।

गुरु पूर्णिमा

आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा आती है। भारतीय संस्कृति में गुरु पूर्णिमा की बहुत महत्ता है। आज केंद्रिय दिन गुरु की पूजा करते हैं।

श्रावण मास

मंगला गौरी

मंगला गौरी का व्रत श्रावण मास में शुरू होता है। सुहागन स्त्रियां श्रावण के प्रत्येक मंगलवारको यह व्रत करती हैं। पांच वर्ष तक यह व्रत किया जाता है।

मंगला गौरी की मिट्टी की मूर्ति बनाकर उसे कपडे पहना कर श्रृंगार करे एक सोने की नथ एवं चांदी की पायल विघ्निया पहनाए। बिन्दी, चूड़ी, सिन्दूर, काजल आदि सामान से सुहाग छाबड़ी तैयार करें एवं साड़ी ब्लाउज का बेस तैयार करें।

पूजा की सामग्री -

१६ पत्ता अमरुद, १६ बेल पत्र, १६ आमका पत्ता, १६ आपा मार्ग (चिङ्गचिङ्गी), १६ आक, १६ गूलर, १६ जामुन, १६ पिपल, १६ रुद्राक्ष, १६ शम्पी, १६ बड़, १६ अनार, १६ पलाश, १६ अपराजिता, १६ शैनी इन सभी वृक्षों के १६ पत्ते, १६ तरह के १६-१६ फुल, १६ पान पत्ते, १६ सुपारी, १६ लौंग, १६ इलायची, १६ आटा गहूँ के लड्डू, आटा की शिलालोड़ी, आटा का डमरू, आटा का १६ दीया बनाये व १६ तार की बत्ती बनाकर जलाये। उजमन में १६ जोड़ों को पुरुष का पेन्ट सर्ट व स्त्री को साड़ी, ब्लाउज एवं

सुहाग छावड़ी देकर जिमाए ।

शिव-पार्वती का कपड़ा, सुहाग छावड़ी, स्वर्ण आभूषण एवं पायल विश्विया
पूजा में चढ़ाए ।

छोटी तीज व हरियाली तीज

एक धान खा कर यह व्रत करते हैं और दोपहर में ही भोजन करते हैं ।

सावन सुदी तीज को छोटी तीज का व्रत करते हैं । घर की बहन बेटीयों को
दूज के दिन सिन्धारा करवाते हैं । उन को पीहर बुलाकर मेहंदी लगवाते हैं ।
नई व्याही हुई लड़कियां पहले सावन पीहर में रहती हैं ।

उजमन -

१६ सुहागने, एक ब्राह्मणी, एक विनायक जीमाते हैं या उसकी जगह थाली दे
सकते हैं व दक्षिणा देते हैं ।

नाग पंचमी

१. श्रावन शुक्ल पंचमी को नाग पंचमी आती है । नाग देवता की
पूजा करते हैं ।
२. दिवार पर गोबर से पांच नाग बनाते हैं, एक की पूँछ नहीं बनाते । मोठ,
बाजरी व कच्चे दूध से पूजा करते हैं और कुछ लोग ठण्डी रसोई
खाते हैं ।
३. मीठी पुड़ी नाग देवता को चढ़ाते हैं ।

श्रावण पूर्णिमा / जनेऊ पूर्णिमा / रुक्षा बन्धन

श्रावण सुदी पूर्णिमा को राखी पूर्णिमा भी कहते हैं । इस दिन पंडितजी से राखी
बंधवाकर रुपया दिया जाता है ।

इस दिन जिन लोगों ने जनेऊ लिया होता है वो गंगा नदी, या कुवा पर जाकर
गौ मूत्र, गोबर, गंगा जल, गंगाजी की मिट्टी, गोपी चंदन आदि लगाकर
स्नान करते हैं तथा श्रवणी करता है । उसके बाद जनेऊ और सप्त ऋषियों
की पूजा कर नई जनेऊ धारण करता है ।

भाद्र भास

कजली तीज व बड़ी तीज

१. भाद्र व्रत कृष्ण पक्ष की दूज का सिंधारा व तीज का व्रत होता है ।

२. शादी के पहले चार साल गेहूँ का सवासेर का पिण्डा, अगले चार साल चने का सवा सेर का पिण्डा और फिर चार साल चावल का पिण्डा होता है। सग्गों का पिण्डा भी इसी तरह होता है जो सासु जी (सवा सेर) का व ब्रात्पण (सवा सेर) का देते हैं। पासने वाले पिण्डे से ही कहानी की छोटी बटड़ी बनाते हैं।

आदसेरी

(यह इच्छानुसार है)

शादी के सोलहवे साल में आदसेरी होती है। जो सवा पांच सेर की गेहूँ की होती हैं। कांसे की थाली में जमा कर सुंदर सजाते हैं। चाँद उगने पर गठजोड़ा से बधारे। इसी तरह चने व चावल की भी आदसेरी होती है। तेरहवे साल फिर गेहूँ की करें। इस तरह १६ बरस पूरे होते हैं। इसके बाद जो इच्छा हो उस का बारा बना सकते हैं।

१. ब्रात्पणी की आदसेरी - १६ वर्ष तक हर साल आधसेरी नारियल के साथ जो नई थाली में जमा कर, एक साड़ी ब्लाऊज के साथ दें।
२. आदसेरी अगर कम करना चाहे तो सवा किलो की गट समेत कर सकते हैं व ब्रात्पणी की १/२ केजी की गट समेत करें।
३. कुंवारी कन्या का गेहूँ का बारा बनाते हैं।

नीमड़ी पूजा के लिए

एक पाटे पर आक के पत्ते (कुछ लोग आक के पत्ते लगाते हैं) बिछा कर मिट्टी के दो खाने बना लें। उसमें डाली लगा दें।

पूजा- रोली, काजल व मेहंदी की सात टिकी निकाले। दीया जला कर पूजा करें। कच्चे दूध, जल सें नीमड़ी को सीचें। सब तरह के फल व सातु रख के नीमड़ी में देख लें। नथ, गोटा, दिया, नीमड़ी, मोती, सब जल में देखें व कहानी सुनें।

चाँद को अरग देते हुए बोले, चाँदड़लो उफ्वासियो, कुल में हूयो उजास, मैं सुहागन सीचियो, सें चौथ की रात, सोने के रो काठलो, गल मोतियन को हार चढ़ूँमा के अरग देवता, जीयो वीर भरतार।

व्रत खोलते समय प्रथम आक के पत्ते का दोना बनाकर उसमें फिदल परोसते हैं। फिदल - कच्चा दूध, दही, चीनी को मिलाकर बनाते हैं। आक के पत्ते पर सातु रखकर सात बार उसकी चिटकी लेते हैं। कोई गर्म खाना खाते हैं कोई

नहीं।

उबछूठ

भादव के कृष्ण पक्ष में उबछूठ आती है। मासिक धर्म के दोष निवारण के लिए यह व्रत करते हैं। सताइस वर्ष तक इस व्रत को करने का महात्म्य है। शाम को सूर्यास्त से पहले नहा ले तथा लाल फुल, लाल चंदन, काला तिल, एवं लाल फल ले कर तांबा के लोटे से सूर्य एवं चन्द्रमा को अरग देवे। एक धान (गेहूँ) खाना चाहिए नमक नहीं खाते। चाँद को देखकर भोजन करते हैं।

कृष्ण जन्माष्टमी

भगवान् श्री कृष्णचन्द्र का जन्म भादव की अष्टमी (कृष्णपक्ष) में आता है। कृष्ण भगवान् का जन्म अष्टमी बुधवार रोहिणी नक्षत्र की अर्द्धरात्रि के समय हुआ था। इस रात्रि में सब लोग हर्षोल्लास के साथ जन्मोत्सव मनाते हैं। जन्माष्टमी वाले दिन भगवान् को भूले में बैठाते हैं। नये केशरिया वस्त्र पहनाते हैं।

बछ बारस

भादव कृष्णा पक्ष कि द्वादशी को बछ बारस मनाते हैं। एकादशी के दिन मोठ बाजारी भीगा कर रख दे, भैंस के दूध का दही जमाये। बारस के दिन कुमकुम चावल, साबुत सुपारी, मेहंदी, दिया, गाय को ओढ़ने के लिए लाल ब्लाउज, भीगे मोठ, बाजारी से गाय और बाढ़ा सहित गाय की पूजा की जाती है। फिर भैंस के गोबर की पाल जमीन पर बना कर उस में पानी भर कर, उस की पूजा की जाती है, बूदिया के लड्डू (जितने लड्डू के होते हैं उतने) पाल पर चढ़ाए जाते हैं। फिर लड्डू के (बेटे) के पैर के अंगूठे से एक साइड से पाल को काट देते हैं तब वो लड्डू उठा कर बच्चों को खिलाये जाते हैं। इस दिन औरतें चाकू से काटा हुआ, ढक कर पकाया हुआ एवं गेहूँ का आटा नहीं खाते। गाय के दूध से बनी कोई चीज भी नहीं खाते।

गणेश चौथ

इस दिन गणेश जी को दूर्वा एवं मोदक चढ़ा कर पूजा की जाती है।

ऋषि पंचमी

भाद्र शक्ल पंचमी की ऋषि पंचमी आती है। सारी माहेश्वरी जाति इसी दिन

रक्षाबंधन का त्यौहार मनाते हैं। ऋषि पंचमी के दिन बहिन भाई के लिए व्रत करती हैं।

ऋषि पंचमी का व्रत भी कुछ लोग करते हैं। यह व्रत आठ बरस कर के उज्मन किया जाता है।

आश्विन मास

श्राद्ध

भाद्र सुदी पूर्णिमा से आश्विन कृष्णा अमावस्या तक पितृ पक्ष या श्राद्ध होते हैं। इन दिनों अपने पितरो के दिन श्राद्ध किया जाता है। पितृ पक्ष में रोजाना स्नान करने के बाद एक माला महामृत्युन्जय मंत्र का जाप करे। सूर्यदय से दिन के १२ बजे की बीच श्राद्ध करे तर्पण में तिल व तुलसी का प्रयोग अति आवश्यक है। चना, मसूर, उड्ड, कुल्थी, सत्तू, मुली, काला जीरा, कचनार, खीरा, काला उड्ड, लौकी, काला नमक, बड़ी सरसों, काला सरसों की पत्ती, श्राद्ध में निषेध है।

श्राद्ध पक्ष या पितृ पक्ष में जब श्राद्ध करते हैं उस वक्त गोग्रास, श्वान बलि, काक बलि, अतिथि बलि, कीट बलि आदि देते हैं, इनके मंत्र निम्न हैं।

गौग्रास

सौरभेथ्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराश्यः ।

प्रतिगृहन्तु मे ग्रांस, गावस्त्रैलोक्यमातरः ।

यदमन्नं गोभ्यो न मम ॥

श्वानबलि

द्वौ श्वानौ श्याम-शबलौ वैवस्वतकुलोभ्दवौ ।

ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्यातामेतावहिंसकौ ॥

इदमन्नं श्वभ्या न मम ॥

काकबलि

केन्द्र-वारुण वायव्याः सौम्या वै नैर्घृतास्तथा ।

वायसाः प्रतिगृहन्तु भूमावन्नं मर्यार्पितम् ॥

इदमन्नं वायसेभ्यो न मम ॥

अतिथि-बलि

देवा मनुष्याः पश्वो वयांसि,
सिद्धाश्च यक्षोरगदैत्यसंघाः ॥
प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ताः
ये यान्नमिच्छान्ति मया प्रधत्तम् ॥
इदमन्नं देवादिभ्यो न मम ।

पिपीलिका कीट पतंग बलि

पिपीलिकाः कीटपतंगकाद्याः बुभुक्षिताः कर्मनियोगबद्धाः ॥
प्रयायन्तु ते तृप्तिमिद मयाऽन्नं । तेव्योऽवसृष्ट मुदिताः भवन्तु ॥
इदमन्नं पिपीलिकादिभ्यो न मम ।

नान श्राद्ध

आसोज शुक्ला एकम् का नान श्राद्ध आता है । जहाँ बेटी, जंवाई, दोहेता तीनों होते हैं वहीं पर नान-श्राद्ध मनाया जाता है । नान श्राद्ध करने का विशेष महत्व है ।

दुर्गा पूजा-नवरात्रा

आसोज शुक्ला एकम् से शरदीय नवरात्रा आरंभ होती है । इस नवरात्रा में चैत्र की नवरात्रा की तरह पूजा पाठ का विद्यान है । नौ दिन नवरात्रा के बाद दशमी को दशहरा आता है । इसे विजयादशमी कहते हैं ।

शरद पूर्णिमा

आसोज शुक्ला पूर्णिमा को शरद पूर्णिमा रहती है । इस दिन भगवान श्रीकृष्ण का रासोत्सव मनाया था । शरद पूर्णिमा से कार्तिक मास प्रारंभ होता है । इस दिन भगवान को खीर या खीरान्न भोग लगाने का विशेष महत्व है । गंगा स्नान, तारा स्नान, आकाश दीया आज ही से शुरू करते हैं । सफेद वस्त्र ठाकुर जी को धराते हैं । स्वयं भी श्वेत वस्त्र पहनते हैं । शरद पूर्णिमा वाले दिन चन्द्रमा पूर्थी के काफी नजदीक रहता है । इसलिए उसकी किरणों से अमृत और आरोग्य की प्राप्ति सुगमता से होती है, ऐसी मान्यता है । चन्द्रमा की रोशनी में १०८ बार सुई पिरोते हैं, कहते हैं इससे नेत्र की रोशनी तेज होती है ।

कार्तिक मास

अन्य महिनों से श्रेष्ठ मास कार्तिक मास माना गया है। कार्तिक मास में स्नान, देव पूजा, तुलसी पूजा होती है। कार्तिक मास में स्थानों पर स्त्रियाँ एकत्रित हो गंगा स्नान करती हैं। तुलसी पथवारी की पूजा करती है। परिकमा लगाती है।

आकाशदीप

कार्तिक मास में दीपदान करने का विशेष महत्व है। आकाश मार्ग से देवताओं को रोशनी मिलती है और वे प्रसन्न होते हैं। पित्तरों को भी रोशनी मिलती है। वे भी प्रसन्न रहते हैं। एक बांस में लालटेन या बल्ब बांध कर आकाशदीप जलाते हैं। कार्तिक मास में दीपदान देने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

करवा चौथ

कार्तिक कृष्ण चतुर्थी को करवा चौथ आती है। सुहागिन स्त्रियाँ इस व्रत को करती हैं। चन्द्रमा को अरग देकर व्रत करते हैं। पूजा करने के पहले माथा धोती हैं। सुहाग के गहने कपडे पहनती है। फिर पूजा करती है। जल भरा हुवा करवा को चालनी के अन्दर रखकर सुहागीनी आपस में करवा बदलती है।

करवो ले एक करवो ले
भायोरी बेन करवो ले
चालनी में चाँद देखती करवो ले
सर्व सुहागण करवो ले
बरत भानानी करवो ले
ऊवा सुवा करवो ले
दिन में चाँद उगाणी करवो ले।

नोट: चालनी में गेहूँ, गुड, काचर, बोडी या फली, पैसा रखा जाता है।

चन्द्रायण व्रत

कार्तिक मास के प्रारम्भ में आसोज पूर्णिमा से चन्द्रायण व्रत शुरू करते हैं। पण्डित के द्वारा घोड़स मात्रिका, नवग्रह, ब्रह्माजी का कलश आदि बैठकर

अखण्ड दीपक जलाते हैं। पण्डित के द्वारा यह पूजा होती है। दीपक एक धी का और एक तेल का जलाते हैं। प्रतिदिन एक माला का हवन ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय मंत्र से करते हैं।

पहले दिन एक रूपये के सिक्के के वजन के बराबर बादाम का हलवा बनाते हैं। दूसरे दिन दो रुपया के वजन बराबर इस प्रकार पन्द्रह दिन चन्द्रमा की कला के अनुसार बढ़ाते हैं और फिर घटाते हैं। पहले वजन बढ़ता है उसी क्रमानुसार घटता है। जितनी मात्रा का बनाते हैं। पण्डित के कहेनुसार उसी में गाय कुत्ता अन्य का हिस्सा निकालते हैं, और परासते हैं। चान्द्रायण के व्रत में एकादशी, पूर्णिमा, अमावस एवं व्यतिपात के दिन निगोठ करते हैं।

व्रत की पूर्णाहृति पर हवन, पेरावणी, गहने, कपड़े, सुहाग छाबड़ी, सिरख, पथरना, देते हैं। ३३ ब्राह्मण को भोजन कराते हैं। दक्षिणा देते हैं।

नोट - हो सके तो एक महिने गंगाजी नहाते हैं।

नारायण तारायण व्रत

कार्तिक मास में यह व्रत करते हैं आसोज पूर्णिमा से व्रत का प्रारम्भ करते हैं। पहले दिन निकोट, दूसरे दिन दोपहर में, तीसरे दिन तारा देखकर भोजन करते हैं। यह क्रम एक महिने तक चलता है। अन्त में पूर्णिमा को ३३ ब्राह्मण को भोजन कराकर दक्षिणा देते हैं। व्रत करके चाँदी की नारायण भगवान की छोटी मुर्ती (फुलड़ा) बनाकर देते हैं।

नोट - एक साथ सम्भव न हो तो रोज एक ब्राह्मण भी जीमा सकते हैं।

तारा भोजन

कार्तिक मास में यह व्रत आसोज पूर्णिमा से प्रारम्भ करते हैं। रात में तारा देखकर पारणा करते हैं। पूर्णाहृति पर ३३ ब्राह्मण जिमाते हैं दक्षिणा देते हैं। ३३ तारा मन्दिर में चढ़ाते हैं। एक साथ सम्भव न हो तो प्रतिदिन एक ब्राह्मण को जीमा कर दान कर सकते हैं।

छोटी सांकली

कार्तिक मास में यह व्रत करते हैं आसोज पूर्णिमा से व्रत का प्रारम्भ करते हैं। पहले दिन निकोट दूसरे दिन तीसरे दिन भोजन करते हैं। वापस एक दिन निगोठ करते हैं। अगर एकादशी या रविवार पड़ जाए तो उस दिन भी निगोठ करते हैं। यह क्रम एक महिने तक चलता है। अन्त में पूर्णिमा को ३३ ब्राह्मण को भोजन कराकर दक्षिणा देते हैं।

बड़ी सांकली

कार्तिक मास में यह व्रत करते हैं आसोज पूर्णिमा से व्रत का प्रारम्भ करते हैं। पहले दिन निकोठ दूसरे दिन भोजन फिर दो दिन निगोठ करते हैं। अगर एकादशी या रविवार पड़ जाए तो उस दिन भी निगोठ करते हैं। यह क्रम एक महिने तक चलता है। अन्त में पर्णिमा को होम कराकर ३३ ब्राह्मण को भोजन कराकर दक्षिणा देते हैं। यथा शक्ति दान पुन्य करते हैं।

पंचभीखा

यह व्रत कार्तिक मास में किया जाता है। कार्तिक की शुक्ल पक्ष की एकादशी से पाँच दिन बराबर होने पर करते हैं। इस व्रत को पण्डित के द्वारा संकल्प ले कर अखण्ड धी का दीपक जलाया जाता है। इसमें रोज सुबह सिर्फ तुलसी चरणामृत लेते हैं। दो दिन निगोठ, एक दिन फलाहार जिसमें नमक नहीं खाते व फिर से दो दिन निगोठ किया जाता है। परिवार के लोग दीपक का दर्शन करने आते हैं और व्रती को अपनी इच्छानुसार रूपया देकर जाते हैं। पूर्णाहुति पर पण्डितजी एक माला का हवन करते हैं। पांच जोड़ा जोड़ी ब्राह्मण को जिमाया जाता है। इसमें जोड़े से श्रद्धानुसार दक्षिणा दी जाती है।

तुलसी तेला

यह व्रत कार्तिक मास में किया जाता है। नवमी, दशमी, एकादशी और द्वादशी चारों तिथियाँ बराबर होने पर ही यह व्रत होता है। नवमी, दशमी, एकादशी को व्रत होता है एवं द्वादशी को पालना होता है।

इस व्रत में भी पण्डित को बुलाकर संकल्प लेते हैं। अखण्ड दीपक जोड़े से जलाते हैं। बारस को तीन जोड़ा-जोड़ी जीमाते हैं और दक्षिणा में रूपया, नारियल देते हैं।

तुलसी विवाह

इसमें ग्यारहस का व्रत करके तुलसी जी की शादी करवाते हैं। गन्ने से मण्डप बनाकर शालिग्राम जी से गठजोड़ा जुड़वा देते हैं। इसमें एक माला का हवन भी होता है और कन्या दान की तरह परा विवाह करवाते हैं और बारस को ११ ब्राह्मण को जिमाकर जान जिमाने का रिवाज भी है। कपड़ा, गहना, श्रृंगार का सामान कन्या को जिस तरह देते हैं। वैसे ही दान देते हैं।



धनतेरस

कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को धन त्रयोदशी के नाम से जाना जाता है। इस दिन धनवन्तरि वैद्य का जन्म दिवस मनाया जाता है। धरतेरस के दिन नये कपड़े पहनते हैं। चाँदी का समान खरीदते हैं। रात में दीपक जलाते हैं। दिये ११, २१ इस प्रकार जलते हैं। धनतेरस, रूप-चौदस, दीपावली को नये दिये जलाते हैं। दिये तिल या सरसों के तेल के जलाने चाहिए।

रूप चौदस

कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को रूप चौदस रहती है। इसे हम छोटी दीपावली कहते हैं। रूप चौदस को घर के स्त्री पुरुष सुबह जल्दी उठकर अपना रूप श्रृंगार करते हैं। उबटन लगाते हैं। दीपदान भी रूप चौदस को करते हैं।

शुभ दीपावली

दीपों की कतार को दीपावली कहते हैं। दिवाली अमावस्या को रहती है। यह त्यौहार अन्धकार को दूर कर प्रकाश की ओर चलने का संदेश देता है। दीपावली वाले दिन छीरसागर से लक्ष्मी जी प्रगट हुई थी और भगवान् विष्णु को प्राप्त हुई थी।

गोवर्धन पूजा

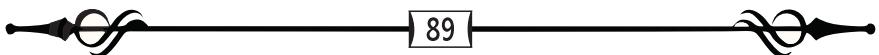
दीपावली के दूसरे दिन गोवर्धन पूजा रहती है। घर के सब लोग जब सो जाते हैं तब घर की कोई भी बूढ़ी बड़ेरी अन्धेरे-अन्धेरे सुबह चार बजे उठकर अलक्ष्मीका निसारण करती है।

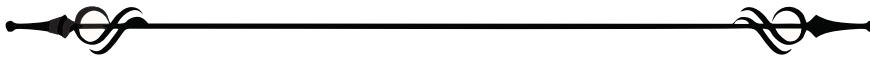
घर के मुख्य-मुख्य स्थान पर दिये वापस जलाती है। पूजन किए हुए भाड़ू सें मुख्य-मुख्य स्थान भाड़ती है और मन ही मन लक्ष्मी जी से प्रार्थना करती है। कुलक्ष्मी जाओ सुलक्ष्मी आओ घर में वास करो। लक्ष्मी घूमती हुई घर के उजाले को देख स्वच्छता को देख वास करती है।

बासी कुड़ा जब उठाकर ले जाते हैं तब उसे कुड़े के डिब्बे या कुड़ा घर में डालकर वापस मुड़कर नहीं देखते हैं। सूप को बजाते हुए वापस आते हैं।

आज के दिन से अन्नकूत शुरू होता है। तरह तरह के व्यंजन बना छप्पन भोग ठाकुरजी को भोग लगाते हैं।

गोवर्धन मांडना





घर के बाहर के दरवाजे के सामने गोवर्धन जी माँडते हैं। गोवर्धन जी गोबर से माँडते हैं। गोवर्धन बनाना हमें न आता हो तो स्वास्तिक बनाकर पूजा करते हैं। रात में जो लक्ष्मी पूजन की सामग्री रहती है वो ले जाते हैं उसी थाली से पूजा करते हैं।

भईया दूज

कार्तिक शुक्ला दूज को भईया दूज मनाते हैं। इसे यमदुतिया भी करते हैं। बहन भाई के टीका लगाती है। अपने घर भोजन पर बुलाती है। बहन के हाथ से खाने पर उम्र बढ़ती है। आज के दिन बहन की अंगुली से अमृत बरसता है।

गोपाष्टमी

कार्तिक शुक्ला अष्टमी को गोपाष्टमी रहती है। गाय की पूजा आज के दिन बड़ी श्रद्धा भावना से करते हैं। गाय माता को गुड खिला कर, गाय की पूजा करते हैं। सारे देवताओं की पूजा करने का जो फल मिलता है। वह गाय माता की पूजा से मिलता है।

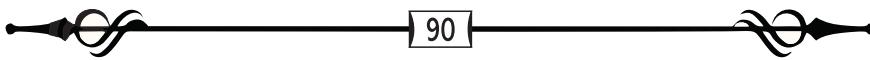
आंवला नवमी या कुम्हाण्ड नवमी

कार्तिक शुक्ला नवमी को आंवला नवमी रहती है। कुम्हडा दान देते हैं। सावुत कुम्हडा का छोटा सा टुकड़ा काट कर उसमें श्रद्धानुसार सोने चांदी की टिकड़ी या रुपया, लाल कपड़ा में बाध कर दान को ब्राह्मण का दान बताया गया है। आंवले के वृक्ष की पूजा करते हैं। आंवला दान देते हैं। द्वापर युग का आरंभ इसीदिन हुआ था। आज के दिन में जो भी दान देते हैं। वह अक्षय रहता है। आंवला वृक्ष की पूजा कुंकुम, चावल, कच्चा दूध, लाल वस्त्र, प्रसाद, धूप-दीप, ऋतुफल आदि से करते हैं।

देवोत्थान एकादशी

चौमासा की एकादशी को भगवान विष्णु शंखासुर नाम के राक्षस को मार कर अपनी थकान को दूर करने के लिए क्षीर सागर में शयन करने चले जाते हैं। उसके बाद देवोत्थान एकादशी कार्तिक शुक्ला एकादशी को आती है। तब भगवान जागे थे।

आज के दिन गंगा स्नान दान, धर्म करने का विशेष महत्व है। तुलसी जी का विवाह शालीग्राम भगवान के साथ आज के दिन हुआ। मंदिरों में गन्ने, तुलसी विवाह के लिए भेजते हैं।



मंगसिर मास

मार्गशीर्ष मास गोपमास है। यह गोप महिना भगवान को अति प्रिय है। इस पूरे महिने भगवान् को मंदिर में पंचमृत का भोग लगता है। मंगसिर शुक्ल पक्ष में भगवान् कि थाली करने का प्रचलन है।

विवाह पंचमी

मार्गशीर्ष पंचमीके दिन श्री रामजानकी विवाह पंचमीका उत्सव मानाया जाता है। प्रत्येक साल रामजानकी मन्दिर तथा जनकपुर थाम स्थित जानकी मन्दिर में विशेष उत्सव होता है। शुभ कार्य करने के लिए यह दिन अबूझ मुहूर्त है।

गीता जयंती

मार्गशीर्ष शुक्ला एकादशी को गीता जयंती रहती है। यह मोक्षदा एकादशी के नाम से प्रसिद्ध है। श्री कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश इसीदिन कुरु क्षेत्र के मैदान में दिया था।

पौष मास

पौष मास में एक महिने का मल लगाता है। १४ दिसम्बर से १४ जनवरी तक मलमास रहता है। कोई भी शुभ-काम हम लोग इस महिने में नहीं करते हैं। सुर्योदय से पूर्व उठकर गंगा स्नान करते हैं। मंगल या शनिवार को मल उतारते हैं। मल उतारने के लिए बड़ा गुलगुल (इस दिन तेल जलाने का महत्व है) बनाकर ब्रात्पण, चील, डाकौत और कागला-कुत्ता को भी खिलाते हैं। मल उतारने के बाद ही घर में कोई भी शुभ काम करते हैं।

मकर संक्रान्ति

सूर्य जब धनुराशि को छोड़कर मकर राशि में प्रवेश करता है तब मकर संक्रान्ति होती है। संक्रान्ति कभी पोष मास कभी माघ मास में आती है। भारत में अंग्रेजी तारिख के अनुसार १४ जनवरी को एवं नेपाल में माघ एक गते को संक्रान्ति रहती है। संक्रान्ति के दिन ब्रात्पण एवं भिखारियों को दान देते हैं। तिल

से बड़ा कोई दान नहीं है। इच्छानुसार कोई भी चीज ब्राह्मण को चौहद जगह दें सकते हैं। आज के दिन खीचड़ी, मूली, तिल खाना और दान देना चाहिए।

माघ मास

माही चौथ

माघ कृष्ण पक्ष चतुर्थी को माई चौथ का व्रत रहता है। इस दिन चौथ का व्रत कर रात में चन्द्रमा को अर्ध्य देते हैं। व्रत करने वाले सुवह माथा धोते हैं। मेहदी लगाते हैं। तिल कुटा बनाते हैं। तिलकुट सफेद तिल और गुड़ का बनता है। महिने की चौथ में यह बड़ी चौथ मानी जाती है। चौथ की कहानी भी बोलते हैं सुनते हैं।

मौनी अमावस

माघ कृष्ण पक्ष अमावस को मौनी अमावस आती है। इस दिन मौन रहना चाहिए, ब्रह्मजी की पूजा करनी चाहिए, काले तिल के लड्डू में सोना डालकर कपड़े में बांधकर ब्रह्मण को देना चाहिए।

बसन्त पंचमी

बसन्त पंचमी माघ शुक्ल पंचमी को आता है। यह दिन भी शुभ कार्य के लिए बहुत ही शुभ माना जाता है। यह दिन ऋतुराज के आगमन की सूचना देता है। केशरिया रंग के चावल की रसोई बनाते हैं। मीठा भात, चरका भात पीले रंग का बनाते हैं। केशरिया पीला वस्त्र पहनते हैं। पत्नी आज के दिन पति को अपने हाथ से खिलाती हैं। पत्नी की अंगुली में अमृत बरसता है। यह पर्व हमें उत्साह के साथ मनाना चाहिए।

फाल्गुन मास

फाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की शिवरात्रि आती है। शिव भक्त भगवान शंकर की पूजा करते हैं। एवं व्रत करते हैं। शिवरात्रि के व्रत से सभी पापों का नाश होता है। भोले शंकर को प्रसन्न करने के लिए रात्रि में जागरण करना एवं धूमधाम से शिव की उपासना करनी चाहिए।

होली

फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी से होलिका लग जाती है। होलीका

लगने के बाद होली तक कोई भी शुभ काम नहीं करते हैं। फालुन शुक्ल द्वादशी को खाटू श्याम का उत्सव मनाया जाता है।

बड़ी होली (छारंडी)

होली के दूसरे दिन चैत्र की एकम को छारंडी कहते हैं। आज के दिन केशरिया गलाबी रंग से होली खेलते हैं। कुँवारी लड़किया सुहागिन स्त्रियाँ आज के दिन से सोलह दिनों तक गवर की पूजा करती है। पालसिये में सोलह पिण्डी गवर की रखकर लाल गुलाल, कुंकुं, केशर, दूब से पूजा करती हैं।

सूरज रोटा

होली के बाद चैत्र महिने का जो पहला रविवार होता है। उसमें सूरज रोटे का व्रत रहता है। सूरज रोटे का व्रत कुँवारी सुहागिन सभी रखते हैं। भाई की मंगल कामना एवं आयु वुद्धि के लिए बहन यह व्रत करती है।

विधि: भगवान् सूर्य नारायण की पूजा करने के लिए हम कुंकुं, चावल, लाल पुष्प एवं रोटे के छिद्र से भगवान् के दर्शन करते हैं। यह रोटा गाय को खिलाते हैं और अपने लिए एक साबुत रोटा बनाते हैं। कहानी सुनकर व्रत करते हैं।

शीतला अष्टमी

चैत्र कृष्ण अष्टमी को शीतला अष्टमी व बासेडा आता है। आज के दिन शीतला माता की पूजाकर ठण्डी रसोई खाते हैं। शीतला माता की पूजा चेचक, आकड़ा-काकड़ा, ओरी के प्रकोप से बचने के लिए करते हैं। अष्टमी के दिन घर में चूल्हा नहीं जलाते हैं। माता जी को ठण्डी (पहले दिन बनी) राब रोटी मीठा भात, तरह-तरह के व्यंजन से रसोई ले जाकर शीतला मां के मंदिर में पूजा करते हैं। पानी चढ़ाते हैं। छोटे टाबरों की माँ को सारा दिन ठण्डा खाना-खाना चाहिए।

अधिक मास

हर तीन वर्ष के बाद जब एक मास बढ़ता है तब उसको अधिक मास या पुरुषोत्तम मास कहते हैं। जब दो मास आवें तब एक अमावस से दूसरी अमावस तक के समय को अधिक मास मनाते हैं।

इस मास में कोई भी शुभ-मांगलिक कार्य नहीं करते हैं। इस मास में भगवान् के मंदिरों में सालभर के सब त्यौहारों के उत्सव मनाते हैं।

इस मास में मासभर गंगा स्नान करना या घर में ठंडे पानी से स्नान करना, मास भर नहीं कर सके तो, आखिर पांच दिन पुरुषोत्तम भगवान की पूजा करना, पुरुषोत्तम मास की कथा सुनना चाहिए। श्रीमद्भागवत का पाठ करना और भागवत सप्ताह सुनना चाहिए। श्री सुक्त, पुरुषसुक्त, विष्णु सहस्रनाम, आदि के अनुष्ठान निष्काम भाव से करना। मास भर मंदिर में और तुलसी के आगे दीपक जलाना।

इस मास में बड़, पीपल, तुलसी, पथवारी और गाय की पूजा करना चाहिए। इस मास में शंकरजी की उपासना करने का विशेष महात्म्य है, भगवान शंकरजी के अशिव रूप की वंदना करते हुए भक्त लोग मास भर शिवलिंग पर बेलपत्र, धतुरा तथा पुष्प चढ़ाते हैं। गीली हल्दी से शिवलिंग बनाकर पीपल में या तुलसी की कुण्डी में रखकर कच्चा दुध, दही, गंगाजल चढ़ाकर चंदन, चावल, पुष्प, बेल पत्र और पैसा चढ़ाकर नमस्कार करते हैं। फलाहार, एकासना व्रत करना चाहिए। गेहूँ की रोटी, दाना मेथी, तुरई और कांकड़ी का साग खाना चाहिए। हींग, तेल और जिमीकन्द नहीं खाना चाहिए। मास पूरा होने के बाद अमावस को तैतीस ब्रात्मण को खीर, मालपुवा का भोजन कराकर नारियल व रूपिया देना चाहिए। जोड़े से व्रत किया हो तो तैतीस जोड़ा को भोजन कराना चाहिए। ब्रात्मणीयों को साड़ी, ब्लाऊज, चूड़ी, टीकी और रूपया देना चाहिए। व्रत नहीं भी करें तो यथाःसम्भव ब्रात्मणों को तैतीस चीज दान करें व भोजन कराए।

एक काँसी की थाली में तैतीस मालपूवा, पुरुषोत्तम भगवान की सोने की मूर्ति या सोने की टिकड़ी और रूपया रखकर दूसरी काँसी की थाली से ढक कर लाल कपड़े में बांधकर ब्रात्मण से पूजा करवाकर ब्रात्मणों को दान दें।

एक अमावस्या को सीधा, नारियल और वस्त्र दक्षिणा सहित दान दें।

दीप दान

अधिक मास में दीप दान का विशेष माहात्म्य है।

एक थाली में चाँदी, तांबा, पितल या मिट्टी के तैतीस धी में दीपक जलाकर मंदिर में भगवान की आरती करके, थाली सहित दीपक मंदिर में छोड़ना।

एक छन्नी में तैतीस जगह पैसे रखकर, उन पर एक-एक धी की बत्ती जलाकर मंदिर में भगवान की आरती करके, छन्नी मंदिर में छोड़ना

पुरुषोत्तम मास में निम्न चीजों का दान करना चाहिए -

एकम- चांदी के पात्र में धी
दूज- काँसी का पात्र
तीज- १ किलो चना
चौथ- खारक
पंचमी- गुड तथा तुअर की दाल
षष्ठी- जौ तथा उडद
सप्तमी- लाल चंदन
अष्टमी- कपूर तथा केवडा
नवमी - केशर
दशमी- कस्तूरी
एकादशी- गोलोचन
द्वादशी- शंख
त्रयोदशी- धनिया
चृत्सुदशी- मोती
पूर्णिमा- पंचरत्न

एकम- मखाना व मालपूवा
द्वितीया- खीर
तृतीया- दही
चृत्सुधी- सूती वस्त्र
पंचमी- रेशमी वस्त्र
षष्ठी- उनी वस्त्र
सप्तमी- धी
अष्टमी- तिल
नवमी- चावल
दशमी- गेहूँ
एकादशी- दुध
द्वादशी- खिचडी
त्रयोदशी- शहद व चीनी
चृत्सुदशी- तांबा के पात्र में मूँग
अमावस्या- बेल, अधिक मास का फल

दान - धर्म



दान की परम्परा आदिकाल से चली आ रही है। हिन्दु धर्म में जो दान की महत्ता बताई गयी है, वह सर्वोत्तम है। दान का संबंध दया से है। सात्त्विक, राजसी और तामसी इन तीन प्रकार के दान का वर्णन श्रीमदभागवदगीता के सत्रहवें अध्याय में भगवान श्री कृष्ण ने किया है। भूमिदान, अन्नदान, विद्यादान, गौदान स्वर्णदान आदि अनेक प्रकार के दान हैं। दान हृदय को विराट, मन को विशाल एवं जीवन को निर्मल बनाता है। दान से आत्मा का अन्धकार नष्ट होता है।

वृच्छ कबहु नहीं फल भखै, नदी न संचै नीर
परमारथ के कारणै, साधुन धरा शरीर॥

वृक्ष कभी भी अपने फल को स्वयं नहीं खाता है, परथर मारने पर भी वह मारने वाले को मीठे मीठे फल देता है, नदी अपने जल को स्वयं नहीं पीती है इसी प्रकार साधु पुरुष, सज्जन पुरुष भी समाज एवं राष्ट्र को देने के लिए, सबके कल्याण के लिए जन्म लेते हैं।

जिस क्षण दान की प्रेरणा मन में जागृत हो तुरन्त दान करना चाहिए क्योंकि दूसरे ही पल मन बदल जाता है। दान इस प्रकार देना चाहिए कि एक हाथ दे वह दूसरे हाथ में न मालूम पड़े। अमृत में जितने गुण होते हैं, उतने ही बल्कि उससे भी बढ़कर गुण दान में हैं। दान, धर्म का प्रवेश द्वारा है। जिस घर में दान देने की परम्परा होती है वहाँ लक्ष्मी जी सदैव निवास करती है। दान बहुत ही श्रद्धा से करना चाहिए।

वर्तमान पीढ़ी के द्वारा किए सत्कर्म का फल भावी पीढ़ी को भी मिलता है। घर में लक्ष्मी बढ़ने पर दोनों हाथ खुले चाहिए, जिससे द्रव्य दान सरिता बहती रहे।

कुछ करके जाइए, दुनिया तुम्हें याद करेंगी।

दान - धर्म की विधियाँ

तुला दान-

तुला दान करने में अपने साथ पोते एवं पड़पोते को लेकर बैठते हैं। यदि हम चाहें तो दोहिते को भी साथ लेकर बैठ सकते हैं। इन तीनों के बजन

से ५ किलो सामान ज्यादा लेते हैं।

तैयारी:- १. पीतल का तराजू, २. शालीग्राम जी के वजन के बराबर तुलसी, ३. सोने का सिंहासन, ४. शालीग्राम जी के वस्त्र (पाँचों) ५. खाने पीने का सामान, सोना, काँसी, चाँदी, लोहा, ताँबा, पीतल, वस्त्र (स्त्री एवं पुरुष), कोयला, धी, तेल, चीनी, लकड़ी, सिरख, पथरना, रूई, माचिस। इसके अलावा गृहस्थी में व्यवहार किए जाने वाले सभी समान दिए जाते हैं। पण्डित के द्वारा एक माला का होम होता है। शालीग्राम जी की पजा कराके यह दान दिया जाता है। तेरह ब्राह्मण को भोजन कराकर दक्षिणा देते हैं। यह सारा सामान पण्डित एवं गुरु ले जाते हैं।

पद का दान

पद १३ ब्राह्मण को दिए जाते हैं।

सामग्री -

१. थाली, २. गिलास, ३. कटोरी, ४. छत्ता, ५. गोमुखी ६. माला, ७. आसन, ८. जनेऊ, ९. सोना (टिकड़ी या अंगुठी), १०. चाँदी (टिकड़ी या प्याला), ११. चीनी, १२. नगदी रुपया, १३. वस्त्र(गंजी, गमछा), १४. खड़ाऊ (चप्पल) आदि।

अष्टमा दान

यह दान वृद्ध या अति बीमार व्यक्ति के लिए किया जाता है। इसके प्रभाव की अवधि बारह वर्ष तक की है। दान करने के बारह वर्ष पूर्ण होने पर यह दान वापस करना पड़ता है।

सामग्री -

१. काला कपड़ा(१ मीटर), २. खड़ाऊ, ३. सोने की टिकड़ी, ४. चाँदी की टिकड़ी, ५. लोहे की कड़ाही, ६. रूई, ७. काला तिल, ८. काला उड़द, ९. गुड़, १०. नमक, ११. धी, १२. सरसों तेल आधा लीटर, १३. सप्तधान (चना दाल, चावल, गेहूं, उरद दाल, अरहर, मोठ दाल)

यह सारा सामान काले कपड़े में बाँध कर ब्राह्मण को या शनि मन्दिर में देते हैं। तेरह ब्राह्मण को भोजन कराकर टीका लगाकर दक्षिणा देवें। ब्राह्मण भोजन घर के बाहर भी करवा सकते हैं।

गौ दान

जीवन के प्रत्येक अवसर पर गौ दान करने का विधान है। स्वरूप गाय का दान

करना हर समय संभव नहीं होता। उसके निमित हम रूपया न्यौछावर कर देते हैं। स्वरूप गाय यदि हम दान देते हैं तो उसके साथ देने वाले समान इस प्रकार हैं।

सामग्री -

सोने का सींग, चाँदी का खुर, ताँबे की पीठ, मोती की पूँछ, पीतल की बाल्टी ढक्कन सहित, ओढ़ाने का वस्त्र, चारे का रूपया आदि।

धर्मराज की छाबड़ी-

धर्मराज की छाबड़ी संक्रान्ति मे देते हैं। चावल सवा सेर या पाँच सेर, सफेद धोती गंजी या पाँचों कपड़ा अपनी श्रद्धानुसार, चाँदी की धर्मराज की मूर्ति, व चाँदी की निसरनी देना चाहिए।

यमराज की छाबड़ी-

यमराज की छाबड़ी संक्रान्ति मे देते हैं। सवा सेर गेहूँ या पाँच सेर गेहूँ, काला ब्लाउज पीस या काला कपड़ा चाँदी की यमराज की मूर्ति, नाव, खेवटीया, चाँदी निसरनी (सीढ़ी), चाँद, सूरज यह समान दान मे दिए जाते हैं।

चित्रगुप्त का दान-

चित्रगुप्त के पाँचों कपड़े, कापी, पेन, चप्पल, सवा सेर मिठाई देते हैं। चित्रगुप्त जी हमारा लेखा-जोखा रखते हैं। मिठाई एक हण्डी में डालकर देते हैं। लाल कपड़े से हण्डी का मुँह बन्द कर देते हैं।

पोपा बाई का दान-

लुगाई का कपड़ा, सवा सेर मिठाई, पाव भर राई देने का महत्व है। राई उछालने से भूत प्रेत नहीं आता है। खोपरा या काँसी का एक कटोरा एक छाबड़ी में डालकर उसमें राई भरकर देते हैं। गेट के बाहर खड़े होकर यह दान दिया जाता है। लेखो राई-राई को, राज पोपा बाई को।

जम द्वारा-

एक थेला मे साँवा किलो मिठाई, टार्च, चप्पल व लाठी (गेड़ीया) एक साथ एक ब्राह्मण को देते हैं।

जाड़ा के दान-

पहले एक गरम कपड़ा किसी ब्राह्मण या गरीब को देकर फिर पहनना चाहिए।

बरसात के दान-

छाता एक अवश्य दान करना चाहिए ।

गर्भी के दान -

चटाई, चदर, तकिया, सुराही, पंखा, छाता, चप्पल, गिलास किसी ब्राह्मण को देना चाहिए ।

फलों के दान-

ऋतु के अनुसार आने वाले हर नये फल को पहले किसी ब्राह्मण को देकर ठाकुर बाड़ी में चढ़ाकर फिर खाना चाहिए ।

दैनिक जिन्दगी में नित्य करने वाले दान-

ठाकुर जी के भोग लगाना, अग्नि में आहृति देना, गरीब को भोजन कराना, ब्राह्मण को देना, कुत्ता को देना, गाय को गौ-ग्रास देना या पैसे अलग करना, कागला को देना, कबुतर को दाना देना, किडी नगरा सिंचना, नित्य अन्न दान करने के लिए एक मुट्ठी अनाज एक डिब्बे में डालते रहना चाहिए ।

दान देने की तिथियाँ-

कुछ तिथियाँ ऐसी हैं जिनमें दान देने से अनन्त लाभ होता है ।

इन तिथियों में इन युगों का आरम्भ हुआ था ।

सतयुग- कार्तिक शुक्ला नवमी

त्रेता युग - वैशाख शुक्ला तृतीया, आखातीज

द्वापर युग- माघ शुक्ला पूर्णिमा

कलयुग - भादौ कृष्ण त्रयोदशी इन तिथियों में इन युगों का आरम्भ हुआ था ।

यदि हम थोड़ा सा ध्यान देकर इस तिथि में दान करें तो पुण्य के भागी बनेंगे ।

चैत्र कृष्ण की पंचमी

चैत्र शुक्ल की पंचमी

वैशाख शुक्ल तृतीया

कार्तिक शुक्ला पंचमी

मार्गशीर्ष शुक्ला नवमी

माघ शुक्ला त्रयोदशी

फाल्गुन कृष्ण तृतीया

ये कल्यादि तिथियाँ हैं और इन दिनों किया गया दान से अनन्त गुणा लाभ



मिलता है।

ग्रहण-

सर्य ग्रहण और चन्द्रग्रहण में दान देना। रविवार को सर्य ग्रहण और सोमवार को चन्द्रग्रहण पड़े तो उसे चूड़ामणि योग कहते हैं और वारो में ग्रहण दान करने का जो महत्व है। चूड़ामणि योग में उससे करोड़ गुना ज्यादा है।

दान -

ग्रहण वाले दिन दो कांसे की कटोरी (छिरपली) एक में धी और एक में तेल एवं सोने चाँदी की जगह नगदी रूपया डाल देते हैं। डाकोत को या शनि मन्दिर में दान अवश्य करते हैं। दरिद्र नारायण को पुराना कपड़ा, पैसा, खाने के सामान देते हैं।

नोट - गर्भवती महिला हो तो नारियल लेकर एक ही स्थान पर बैठती है। भगवान का नाम का ही जप करना चाहिए। नारियल गंगा में प्रवाहित कर देते हैं।

सोमवती अमावस्या-

सोमवती अमावस्या को दान दिया जाता है। सोमवती अमावस्या को पीपल के वृक्ष की १०८ परिकमा करके १०८ वस्तु का दान करते हैं। घर के बुजुर्ग यदि सोमवती अमावस्या का दान करते आ रहे हैं तो पीढ़ी-दर-पीढ़ी इसका दान करते रहना चाहिए। इसका व्रत भी करते हैं। बारह वर्ष व्रत करके उजमन किया जाता है।

सुख सेज देना-

सतरंजी, विस्तर, रजाई, तकिया, खोली, चादर, सुराही, गिलास, पंखी, मोमबत्ती, माचिस या टार्च, अनाज, चप्पल, आभुषण मिठाई साथ में दक्षिणा देनी चाहिए।

नोट: बड़े व्रत के उद्यापन में सुख सेज दिया जाता है।

वस्त्र दान -

गर्मी में पित्तरों के निमित कपड़े अमावस्या के दिन देना चाहिए। सर्दी में रजाई, कम्बल, दुशाला, स्वेटर, मफलर दान देना चाहिए।

बुगचा- (सुहाग पेटी)

१३ या ३ बुगचा देते हैं। बुगचे में अपनी इच्छानुसार साड़ियाँ लहंगा, ब्लाऊज,

पुरुष के पाँचों कपड़े, अपनी इच्छानुसार गहना, चाँदी के बर्तन, चदर, सुजनी, श्रृंगार के सारे समान, चप्पल सारे समान को बक्सा या थैले में डालकर देते हैं।

सुहाग छावड़ी भी दान की जाती है। अपनी इच्छानुसार सुहाग का समान छावड़ी डालकर देते हैं।

अन्य वस्तु के दान-

ठाकुर जी की पोशाकें देना। ठाकुरजी के गहने देना। मन्दिरों में तुलसी देना, फूल की ऋतु में फूल बेलें, शंख, घन्टा देना, कुंकूं, अनन्तर, कपूर, धूप, चन्दन, रुई, माचिस, आसन माला, गोमुखी, दीपक की बाती बना कर धी में भीगाकर देना चाहिए।

गीता जी का दान-

तेरह गीता की किताब लाल वस्त्र में लपेट कर तेरह ब्राह्मण को देते हैं। ब्राह्मण को भोजन करा दक्षिणा भी देते हैं।

कुम्भ दान-

हर चौथे वर्ष पर कुम्भ का मेला आता है। यह मेला हरिद्वार, प्रयाग, नासिक और इलाहाबाद में होता है। अर्द्ध कुम्भ छः साल पर, पूर्ण कुम्भ बारह वर्ष पर आता है।

ताँबे के लोटे में सोने चाँदी की टिकड़ी और चीनी डालकर लाल कपड़े से बाँधकर पण्डित या घाटिया को दान करते हैं।

भगवान की पतले

संक्रान्ति से प्रारम्भ करते हैं। यह सब पत्तल में ही देने का धर्म है।

- | | |
|-------------------------------|-----------------------------------|
| गणेश चौथ को गणेश जी की | - १४ जगह चूरमा के लड्डू व दक्षिणा |
| हनुमान जयन्ती को हनुमान जी की | - १४ जगह चूरमा के लड्डू व दक्षिणा |
| गुरु पूर्णिमा को गुरुदेव की | - १४ जगह चूरमा के लड्डू व दक्षिणा |
| गोविन्द जी की | - १४ जगह मिठाई व दक्षिणा |
| नर की | - १४ जगह मिठाई व दक्षिणा |
| नारायण की | - १४ जगह मिठाई व दक्षिणा |
| विष्णु भगवान की | - १४ जगह मिठाई व दक्षिणा |
| चित्रगुप्त की | - १४ जगह मिठाई व दक्षिणा |

गलघोटिया की
भाड़ भपाड़ की

यमराज की
धर्मराज की

पोपा बाई की

जय की (भगवान का पहरेदार)
विजय की (भगवान का पहरेदार)
शंकर भगवान की

अन्नपूर्णा की

रामनवमी को
सूरज भगवान की

चाँद की

श्रीकृष्ण भगवान की

तुलसी माता की

गाय माता की

नावटिये की

गंगा धाटिये की

गंगा माई की

- १४ जगह बूंदी के लड्डू व दक्षिणा
- कार्तिक उत्तरती चौदस (१४ जगह बूंदी के लड्डू व दक्षिणा
- १४ जगह गुड या चीनी व दक्षिणा
- १४ जगह कच्चा चावल, दही व दक्षिणा जेठ वैशाख में
- १४ जगह एक साढ़ी ब्लाउज ,पीतल की कटोरी में १४-१४ पेड़ा व दक्षिणा
- १४ जगह मिठाई व दक्षिणा
- १४ जगह मिठाई व दक्षिणा
- शिवात्रि को १४ जगह फलाहार व दक्षिणा
- चैत्र नवरात्रि में १४ जगह सीरा, पूँडी व दक्षिणा
- चैत्र में १४ जगह मिठाई व दक्षिणा
- माघ सुदी सप्तमी को १४ जगह बिना नमक की पूँडी, खीर व दक्षिणा
- शरद पूर्णिमा को १४ जगह खीररखीरान्न, चना व दक्षिणा
- जन्माष्टमी में १४ जगह पंजीरी, फलाहार व दक्षिणा
- देव उठनी र्यारस को १४ जगह फलाहार व दक्षिणा
- गोपाष्टमी को १४ जगह मिठाई व दक्षिणा
- गंगा तीर पर १४ जगह मिठाई व दक्षिणा
- गंगा तीर पर १४ जगह मिठाई व दक्षिणा
- गंगा दशहरा को १४ जगह मिठाई व दक्षिणा

कुत्ता की
चील कागला की

कीड़ियों की

मंगता की
विश्राम घाट की

साक्षी गोपाल की

जो कुछ भी हाथों से हो जाये उतना ही अच्छा है। अगर ज्यादा न कर सकें तो थोड़ा-थोड़ा ही कीजिए। पाव, आधा सेर, तीन पाव, सेर शक्तिनुसार।

बारह मासी स्नान-

बारह मासी स्नान गंगा के किनारे जाकर हर महीने या साल में छह बार नहा कर करते हैं। पण्डित के द्वारा संकल्प करवा कर गंगा में स्नान करना पड़ता है। उसके बाद एक माला का हवन होता है। पेरावणी के समान छाबड़ी, गहना, सुख-सेज, पण्डित जी को देते हैं। तेरह ब्राह्मण को भोजन करा दक्षिणा देते हैं।

पूजन सामग्री पण्डित के कहे अनुसार करते हैं।

धी दान-

जो व्यक्ति अश्विन मास में ब्राह्मणों को धृतदान करता है। उस पर देवों के वैद्य अश्विनी कुमार प्रसन्न होकर रूप प्रदान करते हैं।

तेल दान-

सिर पर लगाने के लिए तेल दान करने से मनुष्य तेजस्वी, शूरवीर, सौन्दर्यवान होता है।

चाय दान-

प्रतिदिन एक व्यक्ति को वैशाख, माघ, अधिक मास में चाय अवश्य पिलाना चाहिए।

दूध दान-

प्रतिदिन आधा सेर या एक पाव दूध शक्कर मिलाकर अवश्य दान करना

चाहिए।

अन्न दान-

वैसे तो हम लोग ब्राह्मण भोजन कराकर अन्न का दान देते हैं। किन्तु मनुष्य योनि हमें मिली है। न जाने किस रूप में परमात्मा हमारी सहायता करते हैं। अन्न दान महादान है। एक वर्ष में ३६५ दिन होते हैं। हमारे वर्ष भर के चक्र में ३६० वस्तु देने का महत्व है। ३६० दिनों की ३६० वस्तु देते हैं

कोथली

१/४ किलो या-५ किलो वजन की १३ तरह के धान की कोथली दी जाती है। कोथली में सामान डाल कर मुँह बाँधकर एक ही ब्राह्मण को देते हैं।

१. गेहूँ, २. चावल, ३. चीनी, ४. मुंगदाल, ५. अरहर दाल, ६. चना दाल, ७. बाजरी, ८. जँवार, ९. मकई, १०. चना काबुली, ११. पीला मटर, १२. पापड़-बड़ी, १३. मोठ आदि।

कर्म फल-

१३ तरह के १३ नग फल छोटे हो या बड़े साथ में सोने की टिकड़ी का दान करते हैं। सोने की टिकड़ी के स्थान पर दक्षिणा स्वरूप एक या दो रुपया भी देते हैं। इसकी शुरूआत नारियल से की जाती है।

नोट:- कोई भी फल एक ही ब्राह्मण को देना जरूरी नहीं है।

जैसे - आम, अमरुद, केला, सीताफल, संतरा, पानीफल, नारियल, सेब, चीकू, आलूबखारा, मौसमी, लीची आदि।

पेटिया-

३० किलो धान का एक पेटिया होता है। यह १३ जगह दिया जाता है। १३ नहीं तो ३ भी दे सकते हैं। १ व्यक्ति के हिसाब से एक महीने का ३० किलो समान देते हैं।

आटा, तेल, धी, चीनी, चावल, अरहर, चना दाल, पापड़ बड़ी, मोठ, चना, मुंग, मिर्च, धनिया, अमचूर, हल्दी, जीरा, राई, नमक, साथ में लकड़ी एवं जलावन का दाम एवं दक्षिणा आदि।

सौ सेरी देने की विधि-

खाने के समान धान, फल, मिठाई, नमकीन, मसाला कुछ भी साग-सब्जी एक-एक किलो सौ जगह देते हैं।

लोहा, पीतल, ताँम्बा यह भी एक-एक किलो देते हैं।

हवेजी में सोना, जवार में मोती एवं चावल में चाँदी देते हैं।

मिनख लुगाई का जोड़े से करते हैं तो दो किलो समान देते हैं।

नोट:- इन सारे समान की सूची एक कागज में लिख लेते हैं। उस लिखे कागज को चाँदी की नाव में रखकर धाटिया के द्वारा गंगा जी में विसर्जन करते हैं।

हजारी -

हजार तरह की वस्तु चाहे खाने की हो या और कोई भी दान करते हैं।
किस मास में क्या दान देना चाहिए -

लखेतरी -

लाख तरह की चीजें दान कर सके जिसे लखेतरी कहते हैं।

मास	दान
चैत्र मास	वस्त्र दान
वैशाख मास	मालपूवा
ज्येष्ठ मास	छत्ता
आषाढ़ मास	सेज
सावन मास	वस्त्र दान
कार्तिक मास	दीप दान
मिगसर मास	नमक दान
पोष मास	स्वर्ण दान
माघ मास	तिल दान
फालुन मास	अन्न दान

विशेष- कोई भी मास में शुक्ल पक्ष में फूल दान करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। कोई भी मास में कृष्ण पक्ष में जल दान देने से महाफल की प्राप्ति होती है।

सप्तधान में क्या रहता है-

१. गेहूँ, २. चावल, ३. जौ, ४. उड़द, ५. मूँग, ६. चना, ७. ज्वार, ये सभी सप्तधान हैं।

पंचरत्न में क्या रहता है -

१. मूँगा, २. मोती, ३. पन्ना, ४. सोना, ५. चाँदी, ये सभी पंचरत्न हैं।

अठारह धान में क्या रहता है -

१. गेहूँ, २. चावल, ३. जौ, ४. उड़द, ५. मूँग, ६. चना, ७. तुअर, ८. मोठ, ९. मटर, १०. मसूर, ११. बाजरा, १२. जवार, १३. मक्का, १४. चवला, १५. गवार, १६. दाल, १७. कुल्था, १८. तिल, ये सभी अठारह धान हैं।

अष्टधातु में क्या रहता है -

१. सोना, २. चाँदी, ३. पीतल, ४. लोहा, ५. ताम्बा, ६. काँसा, ७. शीशा, ८. जस्ता (रांगा) ये सभी अष्टधातु हैं।

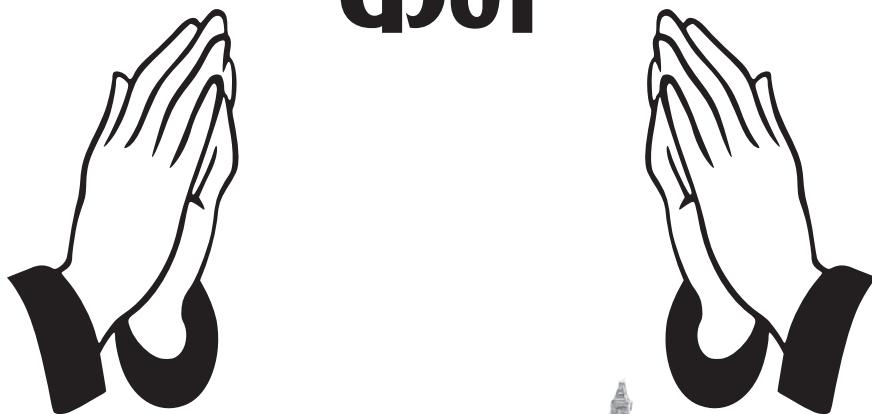
तार की बत्ती के नियम

१. शिवजी की सवा लाख बत्ती तीन तार की श्रावण में
२. पीपल की पांच तार की १०८ बत्ती ४० दिन जेठ में
३. दुर्गा जी की ९ तार की १०८ बत्ती ९ दिन नवरात्र में
४. लोद का महीना ३३ तार की ३३ बत्ती ३१ दिन
५. सूर्यनारायण की १३ तार की १०८ बत्ती ३१ दिन तक
६. भागवत सप्ताह की ७ तार की १०८ बत्ती ७ दिन
७. गंगा माई की ७ तार की १०८ बत्ती ३३ दिन हरिद्वार में
८. हनुमान जी की ५ तार की सवा लाख बत्ती पूर्णिमा को
९. त्रिवेणी की ९ तार की १०८ बत्ती ३१ दिन वैशाख में
१०. तुलसी जी की ७ तार की १०८ बत्ती ३१ दिन कार्तिक में
११. विष्णु जी की १६ तार की १०८ बत्ती ३१ दिन भादौ में
१२. पथवारी की ४ तार की १०८ बत्ती ३१ दिन कार्तिक में
१३. श्राद्ध की १६ तार की ११६ बत्ती १६ दिन श्राद्ध में
१४. गणेश जी की ३ तार की १०८ बत्ती ३१ दिन भादौ में
१५. ब्रह्मा जी की ५ तार की सवा लाख बत्ती ब्रह्मा जी के मंदिर में
मंगसिर महीना

गृहस्थ-गीता

“अतिथ्य” ही घर का वैभव है ।
“प्रेम” ही घर की प्रतिष्ठा है ।
“व्यवस्था” ही घर की शोभा है ।
“समाधान” ही घर का सुख है ।
“सदाचार” ही घर का सुवास है ।
ऐसे घर में सदा प्रभु का वास है ।
ऋण हो, ऐसा खर्च मत करो ।
पाप हो, ऐसी कमाई मत करो ।
क्लेश हो, ऐसा मत बोलो ।
चिंता हो, ऐसा जीवन मत जीओ ।
रोग हो, ऐसा मत खाओ ।

नित्य नैमितिक कर्म



मनुष्य-जीवन में प्रातकाल जागरण से लेकर रात्रिमें शयन पर्यन्त दैनिक कार्यक्रमों का पर्याप्त महत्व है। प्रायः कई सज्जन घटे-दो घंटे का समय भगवद आराधन, पूजा-पाठ, समाजसेवा तथा परोपकारादिके कार्यों में व्यतीत करते हैं, परंतु शेष समाज व्यवहार-जगत् में स्वेच्छाचारपूर्वक काम, कोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्ये तथा छल-कपट से युक्त असत्-कार्यों में भी लगाते हैं। जिसेस पाप-पुण्य और सुख-दुःख दोनों उन्हें भोगना पड़ता है।

सच्चा सुख नित्य, सनातन और एकरस शान्ति में है। उसेक अश्रु है मंगलमय भगवान्। प्रत्येक स्त्री-पुरुष का प्रयत्न उन्हीं परम-प्रभु को प्राप्त करने के लिये होना चाहिये। अतः इस भव-बन्धन से मुक्ति प्राप्त करने के लिये यह आवश्यक है कि चौबीस घंटे के सम्पूर्ण समय का कार्यक्रम भगवद आराधना के रूपमें हो। चलना-फिरना, उठना-बैठना, खाना-पीना, सोना सब कुछ भगवान् की प्रीति के लिये पूजा रूप में हो। पापाचरण के लिये कहीं भी अवकाश न हो, तभी स्वतः कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा। अपनी दिनचर्या शास्त्र-पुराणोंके अनुसार ही चलानी चाहिये जिससे जीवन भगवत्पूजामय बन जाय।

शास्त्रों के अनुसार सूर्योदय से एक घण्टा पहले ब्रात्म मूहूर्त होता है। इस समय सोना निषिद्ध है। इस कारण ब्रतमूहूर्त में उठ कर नीचे लिखे मंत्र बोलते हुए अपने हाथ देखें।

कर मंत्र

करागे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।

करमूले स्थितो ब्रत्वा प्रभाते करदर्शनम्॥

पृथ्वी वंदना मंत्र

समुद्रवसने देवि ! पर्वतस्तनमण्डले ।

विष्णुपति ! नमस्तुभ्यं पादस्पर्श क्षमस्व मे ॥

स्नान करते समय बोले जाने वाले श्लोक

गंगे ! च यमुने ! चैव गोदावरि ! सरस्वति ।

नर्मदे ! सिंधु ! कावेरि ! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

स्नान करते समय बोले जाने वाला श्लोक
गंगे ! च यमुने ! चैव गोदावरि ! सरस्वति ।
नमदि ! सिंधु ! कावेरि ! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

सूर्य को अर्थ

एहि सूर्य ! सहस्रांशो ! तेजोराशे ! जगत्पते !
अनुकम्प्य मां भक्त्या गृहणार्थ्य दिवाकर !
द्वादश सूर्य नमस्कार मंत्र

- | | |
|------------------------|--------------------------------|
| 1. ॐ मित्राय नमः । | 8. ॐ अर्काय नमः । |
| 2. ॐ भानवे नमः । | 9. ॐ सूर्याय नमः । |
| 3. ॐ हिरण्यर्भाय नमः । | 10. ॐ पूष्णे नमः । |
| 4. ॐ सवित्रे नमः । | 11. ॐ आदित्याय नमः । |
| 5. ॐ खये नमः । | 12. ॐ भास्कराय नमः । |
| 6. ॐ खगाय नमः । | ॐ श्री सवितृ सूर्यनारायणाय नमः |
| 7. ॐ मरीचये नमः । | |

सूर्यनमस्कार

आदिदेव ! नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर ।
दिवाकर ! नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तु ते ॥

तुलसी अर्थ मंत्र

तुलसी माता गड़वो दे लड़वो दे, पीताम्बर की धोती दे, मीठा मीठा गास दे,
बैकुंठा का बास दे, चटका की चाल दे, पटके की मौत दे, चन्दन को काठ दे,
झालर दे - भक्तार दे, साई को राज दे, ग्यारास को दिन दे, आप कृष्ण को कांधो दे ।

मंत्र

गणपति

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लबोदराय सकलाय जगद्विताय ।
नागाननाय श्रुतियत्रविभूषिताय, गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥

विष्णु

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेश

विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम् ।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्य

वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथनम् ॥

श्री रामचन्द्र

रामो राजमणिः सदा विजयते राम रमेश भजे रामेणाभिहता निशाचरचम्

रामाय तस्मै नमः ।

राभास्नास्सि परायणं परतं रामस्य दासोऽस्यहं

रामे चित्रलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर ॥

लोकाभिरामं रणरंगधीरं, राजीवनेत्रं, रघुवंशनाथम् ।

कारूण्यरूपं करूणाकरं तं, श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ॥

ब्रह्मा

नमस्ते सते ते जगत्कारणाय, नमस्ते चिते सर्वलोकाश्रयाय ।

नमोऽद्वैतत्वाय मुक्तिप्रदाय, नमो ब्रह्मणे व्यपिने शाश्वताय ॥

शंकर

कर्पूरगौरं करूणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारं ।

सदावसन्त हृदयारविन्दे भवं भवानी सहित नमानि ॥

हनुमान

मनोजवं मारुततुल्यवेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमता वरिष्ठम् ।

वातात्मजं वानरयूथमुख्यं, श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥

श्रीकृष्ण वंदना

वसुदेवसुतं देवं कसचाणूरमर्दनम् ।

देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जागद्गुरुम् ॥

गोपालकृष्ण

कस्तूरीतिलंकं ललाटपटले वक्षः स्थले कौस्तुभं

नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कंकणम् ।

सर्वांगे हरिचन्दनं सुललितं कंठे च मुक्तावलिः

गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः ॥

महामृत्युंजय मंत्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्धनम् ।
उव्वर्ण्णकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।

गायत्री महामंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुवरिण्यम् ।
भर्गा देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

नवग्रहस्मरणम् मंत्र

ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशी भूमिसुतो ब्रह्मच ।
गुरुः च शुक्रः शनिराहुकेतवः, कुर्वन्त सर्वे मम सुप्रभातम् ॥

तुलसी अर्पण मंत्र

पूजनातन्तरं विष्णोरपितं तुलसीदलम् ।
भक्षये देहशद्वर्यथ चान्द्रायणशताधिकम् ॥

बिल्वपत्र अर्पण मंत्र

काशीवास निवसीनाम् कालभैरवपूजन्
कोटिकन्या महादानम् एकबिल्व शिवार्पणम्
दर्शन बिल्वपत्रस्य स्पर्शन पापनाशन्
अद्योरपाप संहारम् एकबिल्व शिवार्पणाम्
त्रिदल त्रिगुणाकार त्रिनेत्र च त्रयायुधम्
त्रिजन्मपापसंहार एकबिल्व शिवार्पणम्

पुष्ट अर्पण

सेवन्तिका वकुल चपक पाटलाब्जै, पुन्नाङ्गजात करवीर विशाल पुष्टैः ।
विल्वप्रवाल तुलसी दल मंजरीभिस्त्वं, पुजयामि जगदीश्वर मे प्रसीदः ॥

पुष्पांजलि

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथममान्यासन् ।
ते ह नाक महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥
ॐ मंत्र पुष्पांजलि समर्पयामि ॥

ब्राह्मण तिलक मंत्र

ॐ नमो ब्रतपणदेवाय गोब्रात्पणहिताय च ।
जगद्विताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥

ब्राह्मण रक्षाबन्धन मंत्र

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दिक्षयाऽप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा-श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

पंचामृत अर्पण मंत्र

दुःखदौर्भाग्यनाशाय सर्वपापक्षयाय च ।
विष्णोः पंचामृतं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥

नैवेद्य अर्पण मंत्र

नैवधमन्नं तुलसीविमिश्रित विशेषतः पादजलेन विष्णोः ।
योऽशनति नित्य पुरतो मुरारे: प्राप्नोति यज्ञायुतकोटिपुण्यम् ।

चरणामृत ग्रहण मंत्र

अकालमृत्युहरण सर्वव्याधिविनाशनम् ।
विष्णुपादोदक पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥

भोग लगाने का मंत्र

त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये ।
गृहाण सम्मुखो भुत्वा प्रशीद परमेश्वरः ॥

ध्यान मंत्र

त्वमेव माता च पिता त्वमेम, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविण त्वमेव, त्वमेव सर्व मन देवदेव ॥
कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा, बुद्ध्यत्मान वा प्रकृतेः स्वभावात् ।
करोनि यद्यद् सकल परस्मै, नारायणायेति समर्पयामि ॥

शयन मंत्र

जले रक्षतु वाहाह स्थले वामनः ।
अटव्यां नारसिंश्च सर्वतः पातु केशवः ॥

कल्याण मंत्र

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
 सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभागभवेत् ॥
 ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः शान्तिः

मंगलकामना

गंगा सिंधु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा
 कावेरी सरयू महेन्द्रतनया चर्मण्वती वेदिका ।
 क्षिप्रा वेत्रवती महासुरनदी ख्याता जया गंडकी
 पूर्णा: पूर्णजलैः समुद्रसहिताः कुर्वन्तु मे मंगलम् ॥

पञ्च कन्याएँ

अहल्या द्रोपदी तारा कुन्ती मंदोदरी तथा ।
 पंचकंना स्मरेन्नत्यं महापातकनाशनम् ॥

सात मोक्ष पुरियाँ

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवंतिका ।
 पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः ॥

तुलसी माता को नमस्कार

तुलसि ! श्रीसखि शिवे पापहारिणि पुण्यदे ।
 नमस्ते नारदनुते नमो नारायणप्रिये ॥

सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्

ईश्वर सत्य है । सत्य ही शिव है । शिव ही सुन्दर है । नमामि देवं वरदं
 वरेण्यं, नमामि देवं च सनातनम् ।
 नमामि देवाधिपमीश्वरं हरे, नमामि शम्भूं जगदैकबन्धुम् ॥

पंचामृत ग्रहण-मन्त्र

दुःखदौर्भाग्यनाशाय सर्वपापश्रयाय च ।
 विष्णोः पंचामृतं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥

नैवेद्य ग्रहण मन्त्र

नैवेद्यमंत्र तुलसीविमिश्रित विशेषतः पादजलेन विष्णोः ।

योऽश्नाति नित्यं पुरतो मुरारेः प्राप्नोति यज्ञायुतकोटिपुण्यम् ॥
हरिः अँ तत्सत्परमात्मने नमः

प्रदक्षिणा

यान कनि च पापानि जन्मातकृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणं पदे पदे ।
यो तीर्थानि प्रचरन्ति सूकाहस्तानिषगणः ।
तेषा सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि ॥

क्षमा-प्रार्थनाः

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजा चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन ।
यत्पूजितं मया देव ! परिपूर्णं तदस्तु मे ॥
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यता देव ! प्रसीद परमेश्वर ! ॥

चरणामूर्त ग्रहण - मन्त्र

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम् ।
विष्णुपादोदकं पीत्वा पुनर्जन्मं न विद्यते ॥
भोजन करते समयं बोलने के श्लोक
अंहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः ।
प्राणापानसमायुक्तः पचास्यन्नं चुविधम् ॥

सांय-कृत्य

दीपज्योतिः परब्रह्म दीपज्योतिर्जनार्दनः ।
दीपो हरतु मे पापं सन्ध्यादीपं नमोऽस्तुते ॥
शुभं करोतु कल्याणं आरोग्यं सुखसम्पदाम् ॥
मम बुद्धिप्रकाशश्च दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥

देवपूजा में विचारणीय तथ्य

1. पूजा सामग्री को शुद्ध करके रखें।
2. देवताओं को अंगूठे से न मलें।
3. पुष्प अधोमुख करके नहीं चढ़ावें। वे जैसे उत्पन्न होता है वैसे ही चढ़ावें। बिल्वपत्र उल्टा करके चढ़ावें तथा कुश के अग्रभाग से देवताओं पर जल न छिड़कें।
4. धोती में रखा हुआ और जल में डुबाया हुआ पुष्प देवता ग्रहण नहीं करते।
5. शिवजी को कुन्द, विष्णु को धतूरा, देवी को आक तथा मंदरा और सूर्य को तगर का पुष्प नहीं चढ़ावें।
6. विष्णु को चावल, गणेश को तुलसी, दुर्गा को दुर्वा और सूर्य भगवान को बिल्वपत्र नहीं चढ़ाएं।
7. संकान्ति, द्वादशी, अमावस्या पूर्णिमा, रविवार और सन्ध्या के समय तुलसी नहीं तोड़नी चाहिए।
8. पूजन के समय पूर्वाभिमुख बैठकर बाँयी ओर घण्टा, धूप तथा दाहिनी ओर शंख, जलपात्र, पूजन की सामग्री रखें। फिर आचमन प्राणायाम करके संकल्प करें।
9. देवताओं के प्रीत्यर्थ प्रज्वलित दीप को बुझाना नहीं चाहिए।
10. धूत का दिपक अपनी बायीं ओर तथा तेल का दाहिनी ओर पूर्व या उत्तर मुख करके चावल आदि पर स्थापित कर प्रज्वलित करके हाथ धोवें।
11. जो मूर्ति स्थापित हो चुकी है, उसका आवाहन और विसर्जन नहीं करना चाहिए।
12. कमल को पाँच रात, बिल्वपत्र को दस रात और तुलसी को ग्यारह रात तक प्रक्षालन कर पूजन के कार्य में लिया जा सकता है।
13. पंचामृत में यदि सब वस्तु (दूध, दहीं, धूत, मधु, शर्करा) प्राप्त न हो तो केवल दुध से स्नान कराने मात्र से पंचामृत जन्य फल

मिलता है।

14. हाथ में धारण किये पुष्प, ताम्बे के पात्र में चन्दन और चर्मपात्र में गंगाजल अपवित्र हो जाता है।
15. दीपक को दीपक से जलाने से दरिद्र और रोगी होता है।
16. दक्षिणाभिमुख दीपक को कभी न रखें।
17. देवी के बाएँ दीपक और दाहिने नैवेद्य रखें।
18. एक हाथ से प्रणाम करने और एक प्रदक्षिणा करने से पूर्व किया हुआ पुण्या नष्ट हो जाता है। केवल चण्डी और विनायक की एक ही प्रदक्षिणा का साधारण विधान मिलता है।
19. प्रतिदिन की पूजा में पूजा की सफलता के लिए दक्षिणा अवश्य ही चढ़ावे। उसे किसी ब्रात्यण को देवें।
20. मांगलिक कार्यों में दूसरे की पहनी हुई अंगूठी धारण नहीं करनी चाहिए।

व्रतों में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का रहस्यमेद

पंचदेव

सूर्य, गणेश, शक्ति, शिव और विष्णु ये आराध्य पंचदेव हैं इनकी गणना विष्णु, शिव, गणेश, सूर्य और शक्ति-इस क्रम से भी की जाती है।

पंचोपचार

गंध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य अर्पण करने से पंचोपचार पूजा होती है।

कालत्रय

प्रातः काल, मध्याह्नकाल और सायंकाल हैं।

वेद

ऋग्, यजुः, सम और अथर्व ये चार वेद हैं।

वेद षडंग

कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्द, शिक्षा और ज्योतिष ये छः शास्त्र वेद के

अंग हैं।

चार वर्ण

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार वर्ण हैं।

पंचनदी

भागीरथी, यमुना, सरस्वती, गोदावरी और नर्मदा पांच मुख्य नदियां हैं।

पंचपल्लव

पीपल, गूलर, अशोक (आशोपालो), आम और वट इन वृक्षों के पत्ते पंचपल्लव हैं।

पंचगव्य

गौ का मूत्र, गोबर, दूध, दही, धी लेकर मिलाने से पंचगव्य होता है।

पंचामृत

गाय के दूध, व धी में चीनी और शहद और दही मिलाने से पंचामृत बनता है।

पंचरत्न

सोना, चांदी, ताम्बा, मूँगा, और मोती ये पांच रत्न हैं।

सप्तर्षि

कश्यप, भारद्वाज, गौतम, अत्रि, जमदग्नि, वशिष्ठ और विश्वामित्र ये सातऋषि हैं।

सप्तधान्य

चावल, गेहूँ, मटर, चना, मोठ, अरहर और मूँग ये सात धान्य हैं।

सप्तधातु

सोना, चांदी, तांबा, पीतल, लोहा, कांसी और रांगा ये सप्तधातु हैं।

नवरत्न

मणिक, मोती, मूँगा, सुवर्ण, पुखराज, हीरा, नीलम, गोमेद और लहसुनिया ये नवरत्न हैं।

गृहस्थों के लिये पुराणोक्त कुछ सामान्य नियम

1. प्रातः काल सूर्योदय से पूर्व उठना चाहिये । उठते ही भगवान् का स्मरण करना चाहिये ।
2. शौच-स्नानादि से निवृत्त होकर भगवान् की उपासना, संध्या, तर्पण आदि करने चाहिये ।
3. बलिवैश्वदेव कह के समयपर सात्त्विक भोजन करना चाहिये ।
4. प्रतिदिन प्रातः काल माता, पिता, गुरु आदि बड़ों को प्रणाम करना चाहिये ।
5. धन कमाने में छल, कपट, चोरी, असत्य और बैईमानी का त्याग कर देना चाहिये ।
6. अतिथि का सच्चे मन से सत्कार करना चाहिये ।
7. अपनी शक्ति के अनुसार दान करना चाहिये । पडोसियों तथा ग्रामवासियों की सदा सत्कारपूर्ण सेवा करनी चाहिये ।
8. सभी कर्म बड़ी सुन्दरता, सफाई और नेकनीयति से करने चाहिये ।
9. किसी का अपमान, तिरस्कार और अहित नहीं करना चाहिये ।
10. अपने किसी कर्म से समाज में शिथिलता और प्रमाद नहीं पैदा करना चाहिये ।
11. मन, वचन और शरीर से पवित्र, विनयशील और परोपकारी बनना चाहिये ।
12. विलासिता से बचकर रहना चाहिये-अपने लिये खर्च कम करना चाहिये । बचत के पैसे गरीबों की सेवा में लगाने चाहिये ।
13. स्वावलम्बी बनकर रहना चाहिये, अपने जीवन का भार दूसरे पर नहीं डालना चाहिये ।
14. अकर्मण्य कभी नहीं रहना चाहिये ।
15. अन्याय का पैसा, दूसरे के हक का पैसा घर में न आने पाये, इस बात पर पूरा ध्यान देना चाहिये ।
16. सब कर्मों को भगवान की सेवा के भाव से- निष्काम भाव से करने की

चेष्टा करनी चाहिये ।

19. जीवन का लक्ष्य भगवत्प्राप्ति है, भोग नहीं -इस निश्चय से कभी डिगना नहीं चाहिये और सारे काम इसी लक्ष्य की साधना के लिये करने चाहिये ।
20. भूल से तुम्हारा पैर या धक्का किसी को लग जाये तो उससे क्षमा माँगनी चाहिये ।
21. दूसरों की सेवा इस भाव से नहीं करनी चाहिये कि उसके बदले में कुछ इनाम मिलेगा, सेवा जब निष्काम भाव से की जायेगी, तभी सेवा का सच्चा आनन्द प्राप्त हो सकेगा ।
22. कोई आदमी रास्ता भूल जाए तो उसे सही रास्ता दिखाने में मदद करनी चाहिये ।
23. भगवत्पार्थना के समय आँखे बंद रखकर मन को स्थिर रखने की चेष्टा करनी चाहिये और उस समय भगवान् के चरणों में बैठा हूँ ऐसी भावना अवश्य होनी चाहिये ।
- * पिधला हुआ धृत और पतला चंदन देवताओं को नहीं चढाना चाहिए ।

संसार के सात सुख

पहला सुख निरोगी काया, दूसरा सुख घर में माया ।
तीसरा सुख सुलक्षणा नारी, चौथा सुख सुत आज्ञाकारी ।
पाँचवा सुख राज में पासा, छठा सुख सु-स्थाने बासा ।
सातवाँ सुख पडोसी अच्छा, सबसे सुखी वही है बच्चा ।

घरेलु नुखा

- * दाँत दर्द, मसूड़ा पायरिया, दात हिले तो अमरुद के कच्चे पत्ते चांर-पांच और बबूल की छाल (पोडी) को दो गिलास पानी में उबाले । एक गिलास पानी जब हो जाए तो उसे छान ले । फिर सुसुम हाने पर उससे कुल्लां करे । फिर एक घंटा कुछ न खाए । दो बार करे ।
- * सुगर के लिए जामुन को गुदा सहित सुखाए और उसे कुरकर कपड़ा-छान कर डिब्बे में भरे । मुख धोने के बाद उस पाउडर को ठंडे पानी के साथ लें

। फिर १५ मिनट तक एक जगह ही बैठें । फिर १५ मिनट सीधा सोये । उसके बाद २ घंटे कुछ न खाए । यह नियम १५ दिन तक करें ।

- * सुबह मुँह धोने के बाद खारे दो पत्ते नीम के मुख में चबाए और उसके रस को चुस ले ।
- * मोटापन घटाने के लिए सुबह मुँह धो कर पिथोर और शहद एक कप गरम पानी में एक चम्मच मिलाकर सबेरे पिए । फिर एक घंटा कुछ न खाए ।
- * मोटापा बढ़ाने के लिए:-

सुबह एक कप ठंडे पानी में एक चम्मच शहद मिलाकर पीने से मोटापा बढ़ता है ।

- * मस्सा के लिए:-
गाय के दुध का दही, गीले नारियल की जटा को जलाके उसकी राख ५ ग्राम एक कप दही में मिलाकर उसका सेवन दिन में तीन बार करें । यह नियम सात-आठ दिन तक करें ।

एक केले के दो भाग करके उसमे कपूर डालकर निगल ले ।

- * गैसटिक (कब्जी के लिए):-

एक पाव कच्चा पपीता को छीलकर धो लें । फिर उसके छोटे-छोटे टुकडे करले । सुबह मुँह धोने के बाद उसे चबाकर खाए । उसके बाद दो घंटे कुछ न खाए ।

* दमा

अडूसा और अदरक का रस ५-५ ग्राम व शहद ५ ग्राम-तीनों को मिलाकर दिन में तीन बार पिलाएँ । दमा ठीक हो जाएगा ।

* भुलक्कडपन-

शहद में आंवला और गुलाब के फूल डालकर मुख्बा बना ले । सुबह इसे नाश्ते में नियमित रूप से १५ ग्राम लें । भुलक्कडपन समाप्त हो जाएगा ।

- * माता, आकड़ा काकड़ा, बोदरी, पिश्ती, इत्यादी में-

- पानी उबाल कर ठण्डा करके पीयें ।

- नमक का प्रयोग तीन दिन बन्द करे।
- नाखुन न लगाने दे।
- नीम का पत्ता उबाल कर उस पानी से सेकें या स्नान करे।
- अगर फाला हो तो लाल चन्दन घिस कर लगायें (जहाँ तक हो सके चेहरे पर न लगाए दाग पड़ने का डर होता है)
- घासा (कोइ भी किसिम का बुखार या माता निकले पर)

१०० ग्राम पानी में चार तुलसी पत्ता, १ लौग टोपी उतार कर, १ चुट्की (आधा टी स्पून) अजवायन, आधा टी स्पून गोटा धनिया, एक पत्ता बंगला पान, आधा टी स्पून मुलेठी, मिश्री (स्वाद अनुसार), सबको मिला कर तीन चौथाई होने तक उबालें व सुती कपड़े से छान कर काढ़ा तैयार कर ले। मरीज को २ ब्राती की गोली मूँह में रख कर उस पर काढ़ा चाय की तरह दे। काढ़ा रात को सोने के बक्त ले अगर दिन में ले तो बरसाती हवा में बाहर ना निकले। (अगर बुखार बढ़ जाए तो जाबित्रीका एक छोटा टुकड़ा भी डाल दे) निमोनिया के लिए यही काढ़ा ज्यादा उबाल लें (आधा होने तक) भूख न लगे तो कूट कर पीपल इस काढे में डाल दे।

पीलिया

पीलिया परहेज प्रधान बीमारी है। इसमे हल्दी धी एवं तेल वर्जित है। नमक भी कम देना चाहिए। नारियल का पानी, लौकी की सब्जी, मूली, खीरा, गन्ना का रस, मूली का रस आदि दे। पानी उबाल कर दे।

गिलोई का एक पोर बराबर टुकड़ा काट कर कांच को ग्लास में पानी में डाल कर रात को भिगा दे। सुबह उस पानी को छान कर थोड़ी सी गोल मिर्च डाल कर दे। यह प्रयोग खाज खुजली, प्रदर एवं पीलिया में उपयोगी होता है।

श्वेत प्रदर (महिलाओं में)

शीशम का द-१० पत्ता दो गोल मिर्च के साथ पीस कर सुबह पानी का साथ एक सप्ताह लगातार ले।

पेट सम्बन्धी तकलीफों के लिए

आँव- बेल का चूर्ण लें।

कब्जी- अरण्डी का तेल लें। बच्चों को बून्द से बड़ों को २ ढक्कन दूध में डाल कर सोते समय पर पी लें।

पेट दर्द- एक चम्मच दाना मेथी, एक चम्मच अजवायन व एक चुट्की काला नमक निबाया पानी के साथ लें।

दस्त- बिलवादि चूर्ण या बेल का सत दें। बच्चों को जायफल धिस कर दे।

शुगर- एक चम्मच मेथी दाना रात को भीगा कर सुबह चबा कर खा ले।

चर्म रोगों के लिए- हर्झ बेहड़ा आँबला,
चौथी नीम गिलोई
पंचम जीरा लिजीए
कंचन काया होई।

हर्झ (पेट साफ), बेहड़ा (कफ खाँसी), आँबला (खून साफ), नीम गिलोई (जर्मीसाइड) और जीरा (पेट ठण्डा) सभी को बराबर मात्रा में मिला कर पिस ले। यह पाउडर रोज रात को एक चम्मच पानी को साथ ले।

‘नव्या’

गीत प्रतियोगिता

(मौलिक एवं संकलित गीत)

विनायक

तर्ज- भिलमिल सितारों का



श्रीमती सरोज राठी
इनरवा

रिद्धि सिद्धि विनायक गजानन होगा

रिमझिम बरसता आंगन होगा

ऐसा सुंड सुंडला जन मन भावना होगा

रिमझिम बरसता आंगन होगा ।

पूजन की खुशी मैं सौ सौ दीप जलाऊँगी-२

फलफूल मेवा मिसरी डलिया, भरभर लाऊँगी-२

मोदक से मीठा मेरा मनडा होगा-२

रिमझिम.....

साँझ सुहानी मैं साज सजाऊँगी-२

सिंदुरी सूरज में तुमको जगाऊँगी-२

लाज भरी आँखो से बन्दन होगा

रिमझिम.....

अरमानों की लड़िया हार तुमको पहनाऊँगी-२

आशाओं की कलियाँ मैं द्वार पर सजाऊँगी-२

नैनों को तेरा ही दर्शन होगा

रिमझिम.....

तर्ज- आज हमारे दिल में
(फिल्म- हम आपके हैं कौन)



अर्चना कावरा
काठमाण्डु

आज हमारे घर में गूँज रही सरगम है,
मौका है शादी का गा रहे सबजन हैं।
खुशियों में डुबे घर के सब परिजन हैं,
मौका है शादी का गा रहे सबजन हैं।

सेहरे को पहने बन्ना है तैयार,
सेहरे को पहने बन्ना है तयार,
ले के जाये बारात समधीजी के द्वार।
राज की बात बतायें-
राज की बात बतायें बन्नी भी है बेहाल,
ले के फूलों का हार कर रही इन्तजार।
राज की बात बतायें बन्नी भी है बेहाल,
ले के फूलों का हार कर रही इन्तजार।

बहनों को देखो कर रही श्रंगार,
बहनों को देखो कर रही श्रंगार,
बाबा और चाचा लटा रहे हैं प्यार।
राज की बात बतायें-
राज की बात बतायें मम्मी भी बन्नी का,
लेकर पूजा थाल कर रही इन्तजार।
राज की बात बतायें मम्मी भी बन्नी का,
लेकर पूजा थाल कर रही इन्तजार।

आज हमारे घर में गूँज रही सरगम है,
मौका है शादी का गा रहे सबजन हैं।
खुशियों में डुबे घर के सब परिजन हैं,
मौका है शादी का गा रहे सबजन हैं।

गणगौर



तर्ज (चलो रे भाईडा आपा हरिगुण गावा)

चलो ए सहैल्या आपा गौर मंगावा
गौर मंगावा आपा मारवाड की हाँ हाँ
गुजरात की म्हारी प्यारी ए गवरल ।
प्यारा ओ गौरा जी थाने गेणों घडाय देउ
गेणों घडाय देउ थाने लंका देश रो हाँ हाँ
रुपा देश रो म्हारी प्यारी ए गवरल

शोभा मुंद्रा
लहान

प्यारा ओ गौर जी थाने चुडलो मंगाय देउ
चुडलो मंगाय देउ थाने हाती दाँत रो हाँ हाँ
कलकत्ता रो म्हारी प्यारी ए गवरल

प्यारा ओ गौरा जी थाने टीको मंगाय देउ
टीको मंगाय देउ थाने, सोना रो हाँ हाँ
रुपा रो म्हारी प्यारी ए गवरल

प्यारा ओ गौरा जी थाने मेहन्दी मंगाय देउ
मेहन्दी मंगाय देउ थाने हैदराबाद री हाँ हाँ
राजस्थान री म्हारी प्यारी ए गवरल

प्यारा ओ गौरा जी थाने चुंदडी मंगाय देउ
चुंदडी मंगाय देउ थाने बम्बई स्यु हाँ हाँ
बम्बई स्यु म्हारी प्यारी ए गवरल

सज-धज गौरा जी म्हारी, घुमन चाली
घुमन चाली बे तो लहान म हाँ हाँ
म्हारा प्यारा गाँव म म्हारी प्यारी ए गवरल

जलवा

तर्ज- इचक दाना
(फिल्म- श्री ४२०)



श्रीमती सरिता सारडा
काठमाण्डौ

फूल खिला है गुलशन गुलशन,
सारडों के अंगना, फूल खिला है } २

फूल खिला है - २

चंदा जैसा चम चम चमके, दादाजी की शान है-२
टुक टुक देख रहा दादी को, प्यारी सी मुस्कान है-२

आ॥॥॥॥

बाहों के भूले मे भूले, गोदी मे जहान है

फूल खिला है - २ } २

नन्द के आनन्द भयो है, जय कन्हैया लाल की-२

दुग-दुग दुग-दुग ढोलक बाजे, जमके थाल बजाओ री-२

आ॥॥॥॥

गौरव-रिचा का तारा आया, उनका अभिमान है
फूल खिला है - २ } २

दिल से देवे हम बधाई, सुन रे ओ ललनवा-२

दिल भी तेरे हम भी तेरे, हमें कभी ना भूलना-२

आ॥॥॥॥

हो जायेगी कट्टी-शट्टी, माफी ना आसान है
फूल खिला है - २ } २

नन्हा सा दुलारा.....-३

बन्नी-बन्नी

तर्ज-माई हाट इज बीटिंग

(फिल्म-जूली)

बन्नी का मुखुडा, चांद का टुकड़ा ।

बन्ना हमारा, है लागे प्यार

बन्नी की आँखे, देखे हैं सपने ।

बन्ना को बन्नी, लागे हैं अपनी ।

जोड़ी॥ ये भली, हो जैसे बन्ना किशन

राधा रानी बन्नी ॥



श्रीमती संतोष राठी
विराटनगर

मीठे हैं सपने, मीठी है बातें,

मीठे पल हैं मीठा है मिलन ।

होती हैं बातें होती मुलाकाते,

रोज करते बाते, खाए कसम ॥

ल ल ल लालाः ना हो जुदा कभी ।

मिलके रहें यें ना हो खफा कभी ॥

जोड़ी॥ ये भली, हो जैसे बना चांद

और चाँदनी हो बन्नी ॥

बन्नी का.....

शादी का बंधन, दिलों का बंधन

बंधन है ये सातों जनमों का ।

प्रेम से रहना, याद भी रखना,

दिल ना टुटे एक दूजे का

जोड़ी बनी रहे, प्यार सदा रहे,

देते दुआ तुझे हाथों में हाथ रहे ॥

जोड़ी॥ ये भली हो जैसे बन्ना शिवजी पार्वती

हो बन्नी ।

बन्नी का.....



घोड़ी

तर्जः मेरा जूता है जापानी



श्रीमती चारु गगरानी राठी

इनरवा

आ तो टप-टप टाप बजाती,धरती अम्बर में लहराती

घोड़ी नाचणी जी, रंग राचणी जी-२

आ तो टप-टप टाप बजाती,धरती अम्बर में लहराती

घोड़ी नाचणी जी, रंग राचणी जी-२

फूल गुलाब रो सरवर लहरे, बनडो बहुत है प्यारो,बनडो बहुत है
प्यारो

चंद्रमुखी सो बन्नो म्हारो, घर भर रो उजियारो,घर भर रो उजियारो
रूप्वन्तो जी, मन भावनो जी-२

घोड़ी नाचणी जी, रंग राचणी जी-२

आ तो टप-टप टाप बजाती,धरती अम्बर में लहराती

घोड़ी नाचणी जी, रंग राचणी जी-२

इंद्र रूप सो सजधज बनडो, समधी पोल है जावे, समधी पोल है जावे
लिल्वट देख मणि ज्यूँ चमके, सगला खूब सरावे, सगला खूब सरावे
मन मुसकावे म्हारो जी, मन लुभावे म्हारो जी-२

घोड़ी नाचणी जी, रंग राचणी जी-२

आ तो टप-टप टाप बजाती,धरती अम्बर में लहराती

घोड़ी नाचणी जी, रंग राचणी जी-२



तर्ज- चमक्यो-चमक्यो सूरज चमक्यो
(राजस्थानी लोक गीत)

उगियो उगियो उगियो, चित्तलांगिया रैआगणै-२

कुल दीपक हुयो, बाँको वंश बद्यो ।

छाई-छाई खुशिया छाई, रामदेव जी रै आंगणै-२

घर मैं गीगो हुयो, बांके पोतो हुयो ।

सासूजी आवै, थाल बजावै, मांगै नेग बधाई ।

मोहरा, गिन्नी और रोकड़ा, नोटां की कमी नांही ।

दादीजी हरखता डोलै, बाँटै खूब बधाई ॥

श्रीमती पायल सारडा
विराटनगर

बाईजी आवै सथिया पुरावै, मांगे नेग बधाई ।

हीरां, पन्ना माणक मोती जड़ी साड़ी ल्यो बाई ।

मन चावै, सो मांगो बाई, आज या शुभ घड़ी आई ॥

थारै भतीजो हुयो, कुल उजियारो भयो,

उगियो ।

देवराणी आवै पलंग बिछावै, मांगै नेग बधाई ।

बहनां सरसी म्हारी दयोराणी, प्रीति लागै प्यारी

थानै तो देस्या मुंह मांगयो, आज घड़ी सुखदायी

अपणो वंश बद्यो, कुल उजियारो भयो

उगियो उगियो

बन्नी

तर्ज मैया यशोदा
(फिल्म- हम साथ साथ हैं)



श्रीमती प्रिया कावरा
काठमाण्डु

बन्नी हमारी, सबकी है प्यारी,
सजधज के दुल्हन बनी देखो प्यारी,
ढोल बाजे प्रैल बाजे खुशियों का मौका है,
श्री जी की कृपा से व्याह रचा -२, श्री जी की कृपा से ।

आंगन में गलियों में चौखट चौबारे,
यो ढोल बागिया में सांझ-सवेरे ।
कुछ न बताये ये बन्नी है भोली,
फोन मिला के ये बन्ने से बोली ।
सुध-बुध गँवाई, नीदे उडाई, -२
बाट निहारूँ तू फिर भी न आया ।
प्यारी-प्यारी बातें ये सब को सुनाये हाय
श्री जी की कृपा से व्याह रचा -२, श्री जी की कृपा से ।



चँदा सा मुखडा है भोली सूरतिया,

घोड़ी पे आया ले जाने दुल्हनिया ।

जगमग हुयी है महल ओ अटारी,

बन्ना और बन्नी पे मैं जाऊँ वारी ।

आँखो का तारा, सबका दुलारा, -२,

जवाँई हमारा हमें लागे प्यारा ।

बड़े भाग्य से आज शुभ दिन ये आया है,

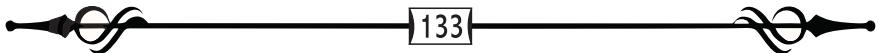
श्री जी की कृपा से व्याह रचा-२ श्री जी की कृपा से ।

बन्नी हमारी, सबकी है प्यारी,

सजधज के दुल्हन बनी देखो प्यारी,

ढोल बाजे प्रौल बाजे खुशियों का मौका है,

श्री जी की कृपा से व्याह रचा -२, श्री जी की कृपा से ।



तीज

तर्ज “पल्लो लटक”



श्रीमती कुमुद गट्टानी
विर्तामोड

सावन री तीज आई, भादुड़ री तीज
पहर लहरियो सखीयाँ चाली झुला झुलन आज

हिवड माही खुशीयाँ उमड, कर सोलह श्रृंगार
झाला दे साजन न रिझाँव, मन मे प्रीत अपार
हो देखा, हो देखा, घुमर रो रमझोल....
आयो तीजा रो त्योहार.... हो आयो तीजा रो त्योहार ॥

कोई चाली पिवरीय, कोई सासरीय माय
भरतार और परिवार र खातिर माता न मनावन
हो देखो, हो देखो गीता रो मल्हार
आयो तीजां रो त्योहार... हो आयो तीजां र त्योहार ॥

मेहन्दी रचावा, लाड लडावा, निमडली न सजावा
दिख्यो सो टुट्यो माता दिख्यो सो टुट्यो
हो देखो, हो देखो लुड़ लुड़ धोक लगावाँ
आयो तीजा रो त्योहार... हो आयो तीजा र त्योहार ॥

रीत निभावा प्रीत निभावा, चुन्डडली रो मान
भक्ती और श्रदा से आपा मनावां तीजा रो त्योहार
हो देखो, हो देखो, दोनो कूल की लाज निभावा
आयो तीजा रो त्योहार... हो आयो तीजा र त्योहार ॥

सावन री तीज आई, भादुड़ री तीज
पहर लहरीयो सखीयाँ चाली, झुला झुलन आज
आयो तीजा रो त्योहार... हो आयो तीजा र त्योहार ॥

मजन-मत्स्य अवतार

तर्जः थाली भरकर ल्याई खीचडो



श्रीमती पायल सारडा

विराटनगर

भक्ताँ का सिरदार धनी हो, भक्ताँ पर किरपा बड़ी
सच्चे मन से याद करे तो, भक्ताँ को दुख दूर करी
सत्यव्रत हो ऐसो राजा, परम भक्त हो थारो जी
एक दिन तर्पण करने लाग्यो, हुयो अच्म्मो बाने भी
मछली बनकर थे आया, बिने पतो पड्यो ना बिलकुल भी
सच्चे मन से याद करे तो....

मछली ने धरयो कमण्डल, चाल पड्या वे कुटिया जी
मछली बढ़ती-बढ़ती जावे, ना मावे कमण्डल में
राजा ने चिन्ता हुई, अब के करां इस मछली को
सच्चे मन से याद करे तो भक्ता का.....

राजा जी मछली ने छोड़न, पुग गया समुन्द्रजी
मछली डर के बोली राजाजी, ना छोडो मनै मगराँ बीच
सत्यव्रत भी समझ गयो, थारी लीला दीनदयाल जी
हाथ जोड़कर अरज करी, प्रभु दीनदयाल कृपालु हरी

भक्ता.....

भगवन दियो बचन सत्यव्रत ने, प्रलय मे दुनिया पड़ी
मैं आऊंगो मत्स्य रूप में, तारुँगा दुख की घड़ी
राजा जी प्रलय देख कर, सप्तरिषी संग नैया खड़ी
नैया ढूवन लागी तो मत्स्यरूप ले तारी थे दुख की घड़ी

भक्ता.....

हृदयग्रीव राक्षस से भी थे, वेदाँ को उद्धार कर्यो
चारों वेद पाताल से ल्या कर दुनिया ने उपहार दियो
सच्चे मन से याद करे तो भक्ता.....

तर्जः उठे सब के कदम....



श्रीमती सरोज राठी, इनवा

उठे सब के कदम, तर रम पम पम, अजी ऐसे गीत गाया करो,
कभी खुसी कभी गम, तर रम पम पम, हंसो और हंसाया करो
मेरी प्यारी सासुजी अच्छी अच्छी सासुजी, कभी मंदिर में जाया करो
कभी भजन कभी कीर्तन, कभी कीर्तन कभी भजन
कभी दानों सुनायो करो,

उठे सब..

मेरी प्यारी जेठानी अच्छी अच्छी जेठानी कभी किचन में जाया करो
कभी चाय कभी कोफी, कभी कोफी कभी चाय
कभी दोनों बनाया करो,

उठे सब....

मेरी प्यारी द्योरानी अच्छी अच्छी द्योरानी कभी बाथरूम में जाया करो
कभी पैन्ट कभी शर्ट, कभी शर्ट कभी पैन्ट
कभी दोनों धुलाया करो,

उठे सब.....

मेरी प्यारी ननद जी अच्छी अच्छी ननद जी कभी पीहर भी आया करो
कभी झाड़ू कभी पोछा, कभी पोछा कभी झाड़ू
कभी दोनों लगाया करो,

उठे सब....

मेरी प्यारे पिया जी अच्छे अच्छे पिया जी, कभी कमरें में आया करों
कभी हाथ कभी पावँ, कभी पावँ कभी हाथ
कभी दोनों दबाया करो,

उठे सब....

मजन- नरसिंह अवतार

तर्जः उमराव थारी बोली प्यारी लागे



श्रीमती गिरिजा सरडा
विराटनगर

प्रहलाद थारी भक्ति प्यारी लागे, भक्त बडा
प्रहलाद जी ओ ॥.. भक्त बडा
हिरण्याकशिप राजा बडो, तप स्यूँ हुयो अजेय
देव मनुष्य और पशु, कोई मार न पाय
कि दानव सुत धरा की रक्षा, निमित्त बनो थे - भक्त बडा.....

प्रहलाद जी....

दैत्यराज को अत्याचार दिन-२ बढ़यो ही जाय
पुत्र प्रहलाद थो भक्त बडो, भगवन नै ही ध्याये
जी हरिहर थारे भक्ता में विपदा, है आ पडी

प्रहलाद जी.....

पूजा पाठ न खुद करे, न कोई करने पाय
जो हरि को ध्यान करे, उसने मार गिराय,
जी लक्ष्मी बर थारी नजराँ घालो म्हाँ पर, भक्त बडा

प्रहलाद जी.....

इक दिन हिरण्याकशिप हुयो, बेटा स्यूँ नाराज
क्यूँ पूजै तूँ भाटाँ नै, देखूँ तनै किया बचाय
जी सृष्टि का कर्ता- सब दुख हर्ता, किरपा थे करो

प्रहलाद जी.....

नरसिंह रूप धर्यो प्रभु, थाने लियो बचाय
खंभा स्यूँ बै प्रकट हुया, जंघा पे मार गिरायो
जी दाता थे आया, जो-जो ध्याया, लीला थे धरी

प्रहलाद जी.....

बीरा

तर्ज- सुन के दिल मेरा डोले
(फिल्म- गूँज उठी शहनाई)

बाई डागलिये चढ जोवे, कद म्हारा वीरोजी आवे,
सुआ काई रे संदेशो ल्यायो वीर रो ।
नगरी में बाजाजी बाजे, जंगी ढोल है गाजे,
बाई बाजे सूँ आसी थारा ।



श्रीमती मृदुला सुखानी
काठमाण्डु

सुआ आछो संदेशो तु लायो,
सुनकर म्हारो यो मन हरखायो ।
सोने री चोंच जडाऊँ, सोने रा पंख घडाऊँ
तो पर वारि-वारि जाऊँ वीरा आज रे ।

वीरा कद सूँ म्हे बाट निहारु,
नित थारा ही काग उडाऊ ।
शुभ दिन शुभ घडी आई, आया भाई-भौजाई,
लाया सुरंगो भतीजा न साथ रे ।

म्हारी ममता स्यूँ चूँदड रंगाई,
म्हारे बाबूजी रा आशीष जडाई ।
वीरा री प्रेम री किरण, चमके चूँदण रे ऊपर,
ओढूँ नवल बन्ना रे व्याह में ।

बाई डागलिये चढ जोवे, कद म्हारा वीरोजी आवे,
सुआ काई रे संदेशो ल्यायो वीर रो ।
नगरी में बाजेजी बाजे जंगी ढोल है गाजे,
बाई बाजे सूँ आसी थारा वीरा ।

गणगौर

(तर्जः- थाली भरकर लाई खिचडो)



श्रीमती शोभा मुंद्रा
लाहान

थाली भरकर ल्याई पुजा की , साथ् कल्पना री बाटकी
चलो सहेल्या हिल-मिल पुजा, गौर माता
हाथा मेहंदी, माथे बिंदिया, पगा पायलिया डालके
कर सोलह सिंगार गौरजा आने पुरे साल से
लाल सुहानी चुनरी ओढाया, चुडिया खनके हाथ की,
चालो सहेल्या.....

पेला तो म्हे दीयो जोयकर, गौर माता पुजस्या,
हाथ जोड प्रणाम करस्या, दोनो आन्ध्या मिचिया
हल्दी, कुमकुम सवाग लुटो, मेहंदी भरी है बाट्की,
चालो सहेल्या.....

पान, सुपारी, फुल दातन, फला रो भोग लगायो है
आशिष मांगन माता आगे, आचल भी फलायो है
आचल पसार आशिष मांगा, अपनी प्यारी मात से
मंगल गावा गीत माता का, संग सहेल्या है साथ की,
चालो सहेल्या

आखा लेकर सुना कहानी, सुनस्या चित्र लागाय के
टिकी लगावा, मेहंदी देवा, रेवा माँ रे साथ्
मे सासुजी ने कलपनो देवा, आशिष मांगा साथ् मे)
चाला सहेल्या.....

बन्नी

(तर्जः- फूल तुम्हे भेजा है)



श्रीमती राधा अटल
इनरुवा

आज बन्नी ऐसी सजी है, जैसे सागर मे मोती
देख बन्नी को बना निरखे और ये तारीफ करे
शीश बन्नी के बेरिया सोहे, लड़िया मेरा मन मोहें
टीका का हीरा ऐसे चमके जैसे बादल बीच बिजली

आज बन्नी

कान बन्नी के बाली सोहे, जुल्फे मेरा मन मोहें
गले बन्नी के नैकलेस सोहे, नथनी मेरा मन मोहें
नथनी का हीरा ऐसे चमके जैसे बादल मे चन्दा

आज बन्नी

हाथ बन्नी के पुंची सोहे, चूड़ियां मेरा मन मोहें
अंग बन्नी के घाघरा सोहे, चुनरी मेरा मन मोहें
पायल की झन्कार मेरे कानो में मृदुल रस घोले

आज बन्नी



तर्ज - मेरा नाम चुन चुन

घोड़ी नाचे छम छम छम -२

छम छम छम बाबा छम छम छम -२

लाख टकों की घोड़ी है, एक टका ना होगा कम-२

वाह-वाह, वाह-वाह, वाह-वाह -२

इन्द्रलोक की ये घोड़ी, घोड़ी है इम्पोर्टेड जी -२

चना दाल ना खाए ये तो, पिए केवल ब्ल्स्की जी-२

मतवाली सी है ये ज़रा - बुरा ना मानो भैया तुम -२

घोड़ी नाचे छम छम छम -२

छम छम छम बाबा छम छम छम -२

लाख टकों की घोड़ी है, एक टका ना होगा कम-२

वाह-वाह, वाह-वाह, वाह-वाह -२

सारी दुनिया धूम के आई, सोने की किलंगी लगाई - और माथे पे बिंदिया जी-२

दुलड़ी मोती की ये पहन, टकबक टकबक होजा फुर्झ -२

घोड़ी नाचे छम छम छम -२

छम छम छम बाबा छम छम छम -२

लाख टकों की घोड़ी है, एक टका ना होगा कम-२

वाह-वाह, वाह-वाह, वाह-वाह -२

समधी जी से जाकर बोली, हेल्लो मिस्टर हाउ डू यू डू ?- समधन बोली जय

श्री कृष्णा -वो भट बोली थैंक यू -२

है विलायती घोड़ी ये, इसको कर लो फाइनल तुम -२

घोड़ी नाचे छम छम छम -२

छम छम छम बाबा छम छम छम -२

लाख टकों की घोड़ी है, एक टका ना होगा कम-२

वाह-वाह, वाह-वाह, वाह-वाह -२

श्रीमती निकिता राठी डागा

नारायणधाट



श्रीमती अमिता पेडिवाल
विराटनगर

पहली बार जब उदय सपना ने एक दुसरे को देखा, तो आँखों ही आँखों में
प्यार हो गया और शादी के सपने संजोने लगे। तब उदय ने कैसी शादी के
लिए मनाया अपनी मम्मी को वो बताती हूँ।

तर्ज़: राधिका गौरी से....

१. सपना गौरी से, दिल्ली की छोटी से, मम्मी करा दे मेरो व्याह-२
उदय की बात सुणकर भाभीजी तो एकदम हीं चौक गया। वे उदय को
समझाते हुए कहती हैं देखो बेटा-
२. उमर थारी छोटी है, नजर थारी खोटी है, कैया करादुँ थारो व्याह-२
भाभी की बात सुनकर उदय शाँक हो गया उसे उम्मीद नहीं थी कि मम्मी
यूँ मेरी उमर छोटी बता कर मना कर देगी। उदय ने थोड़ा धमकाते
हुए कहा...
३. जो नहीं व्याह करावै, मैं दुकानां नहीं जाऊँ-

आज के बाद म्हारी मम्मी, थोर दरवाजे नहीं आऊँ-२
आवलोऽरे मजो रे मजो, तन मनावण से.....।

सपना गौरी..... मम्मी करा दे मेरो व्याह।

भाभीजी को आया थोड़ा गुस्सा-उन्होने उदय की तरफ देखते हुए कहा
तुम मुझे धमकी दे रहे हो अब तो जाओ मैं तेरा व्याह नहीं करवाती
उदय ने सोचा अरे ये क्या, यहाँ तो बात ही बिगड़ रही है। तब उसने मम्मी
को सोफा मे बैठाकर धीरे से कहा-

डनलप के गद्दे पर मम्मी थान बैठाऊँ-२
अपनी सपना से मैं पाँव तेरे दबबाऊँ-२
भोजन रोज़SSS बनावगी, बनावगी, थारी पसंद को।

सपना गौरी.....

पाँव दबबाने की बात नया नया आइटम री बात सुनकर भाभीजी
के चेहरे पर थोड़ी खुशी नजर आई तब उदय ने सोचा अभी थोड़ा
मक्खन और लगाना पड़ेगा उदय बोला-

५. छोटी सी दुल्हनीयाँ जब अगँना में डोलेगी-२
थारे सामने मम्मी वो साड़ी भी पहनेगी-२
पापा नSSS जा कहो जा कहो व्याह करावण से-२

सपना गौरी.....

उदय की इती बात सुनर भाभीजी क मन भी ल्यावण
रो चाव जागे। वे भी मन ही मन ख्याली पूलाव बनाने लग गये।
सुण बाते उदय की मम्मी बैठी मुस्काव। २
लेके बलैया मम्मी, राई लुण ऊवार। २
नजर कहीं SS लग जाये ना लग जाये ना, म्हार ही। लाल न।
सपना गोरी से, दिल्ली की छोरी से, बेटा करादूँ तेरो व्याह।

वीरा

तर्ज-म्हारे हिवड़ा में नाचे मोर



श्रीमती चारु गगरानी राठी
इनरवा

छाई मनडे में रमझोल, आये मेरे भैया
लाये खुशियों की सौगात, आये मेरे भैया
छाई मनडे में रमझोल, आये मेरे भैया
लाये खुशियों की सौगात, आये मेरे भैया
भैया आये, मायरा लाये, और लाये चुन्दरिया
छाई मनडे में रमझोल, आये मेरे भैया
मेरे भैया दूर से आये हैं, भाभी को संग लाये हैं -२
ममता से आँचल सजने लगा, खुशियों से दामन भरने लगा
बहना आये, भैया बधाये, खिल उठी मन की कलियाँ
छाई मनडे में रमझोल, आये मेरे भैया
लाये खुशियों की सौगात, आये मेरे भैया
मैं कूँ कूँ चावल लायी हूँ, भैया के तिलक लगाई हूँ -२
मिसरी की शरबत लायी हूँ भैया को आज पिलाई हूँ
भैया आये, गीत गवाए, रस्मे सारी निभाये
छाई मनडे में रमझोल, आये मेरे भैया
लाये खुशियों की सौगात, आये मेरे भैया

बन्ना बन्नी

तर्जः मुझे नींद न आए...



श्रीमती सुधा तोषनीवाल
विरामोद

दूल्हा को बुलावो ओ....

दुल्हा को बुलावो, दुल्हन को बुलावो, दोनोंको पास विठाओ,
यह जोड़ी कैसी लगती है, बहुत सुन्दर लगती है..... २

दादाजी-दादीजी निरख रहे, निरख रहे और हरक रहे..... २

दादीजीको बुलावो.....

दादीजीको बुलावो, बधाई बटवाओ और मंगला चार गुवावो
यह जोड़ी कैसी लगती है, बहुत सुन्दर लगती है... २

बाबोजी-बडियाजी निरख रहे, निरख रहे और हरक रहे.... २

बडियाजी को बुलावो.... २

बडियाजी को बुलावो, मिठाई बटवाओ और मंगला चार गुवावो
यह जोड़ी कैसी लगती है, बहुत सुन्दर लगती है।

काकाजी-काकीजी निरख रहे, निरख रहे और हरक रहे

काकीजी बुलावो.....

काकीजीको बुलावो, नास्ता करवाओ और मंगला चार गुवावो
यह जोड़ी कैसी लगती है, बहुत सुन्दर लगती है।

(इस तरह फुफाजी-भुवाजी, मामा-मार्मी का भी नाम ले सकते हैं) सुनीये

त्यंग्य

तर्जः जय गणेश, जय गणेश देव



राठी जी हम आज कुछ कहेरों
खोलगें हम सारे राज, चुप ना रहेगें

श्रीमती अमिता पेडिवाल
विराटनगर

सुशील कुमार जी ऊषा भाभी सबसे मीठा बोलते
परिवार को जोड़ने की हरदम कोशिश करते
पोते-पोती लाडेसर, उनमें है इनकी जान
पूरे राजस्थान में इनकी है बड़ी शान ।

कम बोलना ज्यादा सुनना कहता है हनुमान
झरना उसकी बातों को पूरा है देती मान
सारा दिन दोनों जन ओफीस में बिताते,
रात को प्यारी सी बिटिया को खिलाते ।

सुनील जी है विजनेस के मास्टर
बीबी ममता देवी है मोबाइल की मास्टर
वाट्सप फेसबुक से नाता जोड़ रखा है,
अपने परायों को एक डोर में बाँध रखा है ।



प्रमोद जी प्रीया जी के किस्से सुहाने

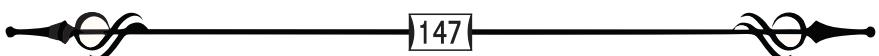
दोनों एक दुसरे के प्रेम के दिवाने,
अरे हम तो मस्तगोला, कोई कुछ भी बाले
दिन रात मौज करो, खाओ पुड़ी छोले ।

मेनेजमेन्ट अच्छा करे प्रदीप कुमार जी,

सपिङ्ग की रसिया है माया देवी जी
विराटनगर की एक एक दूकान छान ली है
बारगेनिंग की मास्टर है बात मान ली है ।

राजु जी हमारे है बिल्कुल भोले-भोले

संतोष देवी के है, प्रेम के दीवाने
बीबी के चक्कर मे सादा खाना खाते है ।
अपनी फिटनेस का राज यही बताते है ।



मायरा

तर्ज - जारे हट नटखट



श्रीमती सरोज राठी
इनरवा

देखो शंख करे अर्चन, मुदंग करे वंदन
ये भाँझरें भक्तार भभनायी हैं
आज मायरे की -२ शुभ घड़ी आई है-२
उठा देवलोक में ज्वार किया स्वर्ग में श्रृंगार
चाँदनी रस की धार से नहाई है
आज मायरे की -२ शुभ घड़ी आई है-२
हो-----

धरती है लाल आज, अम्बर है लाल-२
सिन्दूरी रंग सजा सरज के भाल-२
कुदरत ने पंख पसारे हजार
लहराए लहर लहर फूलों की माल
बहना की रूप छटा
अंधियारा दूर हटा, बीरे घर हरख बधाई है
आज मायरे की -२ शुभ घड़ी आई है-२
कंचन की बेलरी, चन्दन की डार
हाथों में लेकर के मोतियन की थाल
बाई के आँगन में छाई बहार
बिखराए उत्सव में खुशियाँ हजार
पवन बहे धीरे धीरे, छनन छनन हौले हौले
दामिनी भी शर्म से लजाई है
आज मायरे की -२ शुभ घड़ी आई है-२
देखो-----
आज मायरे की -२ शुभ घड़ी आई है-२

भजन-वराह अवतार

तर्जः मिलो न तुम तो हम घबराय



श्रीमती सम्पत देवी सारडा
विराटनगर

प्रलय के जल मे धरती डूबी,
मनु गए बत्सालोक, बोले हम क्या करे..... २
प्रलय के जल मे धरती डूबी,
मनु गए बत्सालोक, बोले हम क्या करे..... २

मनु ने पुछा ब्रह्मा से, आज्ञा दो पिताजी मुझे आप ये
क्या करूँ कर्म जिससे, जन्मदाता आप हमे तार दें
ऐसा ज्ञान हमे दो दाता, हो जाए बलिहारी
हमे आप राह दिखा दे- २

प्रलय के जल

ब्रह्मा जी बोले मनु से, पुत्र तुम्हारा कल्याण हो
धर्मपूर्वक पृथ्वी पालन, है ये वडा सुन्दर काम रे
यज्ञों द्वारा हरि की सेवा, प्रज्ञापालन करना
यही तुम्हे तार देगा- २

प्रलय के जल

मनु ने कहा ब्रह्मा से, पृथ्वी डूबी है प्रलय जाल में, प्रलय जाल में

कैसे हो उद्धार पृथ्वी का, ये भी बतायें हम जान ले

ब्रह्मा के नाक से, वराह शिशु निकला, हुआ तुरन्त पर्वताकारी

हरि लीला ये निराली-२

प्रलय के जल.....

ब्रह्माजी ने स्तुति कीनि, भगवन के बराहअवतार की

प्रसन्न हुए भगवन और, जल में किया था प्रवेश रे

दाढ़ों पर लिया पृथ्वी को, निकले बराह अवतारी

हिरण्याक्ष को मार गिराया २

प्रलय के जल से धरती निकली

बराह भगवान ने तारी, करे हम उनकी जय-२

गणगौर

तर्ज- सोन चिरइया एक दिन उड जाएगी

सोलह दिनोंके लिए गौरा माता आएगी
एक वर्ष के लिए फिर चली जाएगी
चली जाएगी ये-२
ईशर जी के देश फिर ना आएगी ॥



श्रीमती पूनम गृहानी
शनिश्चरे

छोटी सी गौरा, हो गई इतनी बड़ी
आ जाएगी जब विदा होने की घड़ी
ओ सखियो तुम-२
खड़ी खड़ी द्वार देखती रह जाओगी
चली जाएगी ये.....॥

गौरा माँ को मिलके सब ने सजाया है
और ज्वारा मिलके सब ने बाया है
सखियों को छोड़ अकेली-२
अब ईशर जी के साथ मे चली जाएगी
चली जाएगी ये.....॥

दब सब सखियाँ मिलकर तोड़ लाई है
और गौरा माँ को चढाई है
सब सखियो को-२
गौरा माँ के हाथों मे मेहदी लगानी है
चली जाएगी ये.....॥

रसम क्युँ गौरा के विदा होने की बनी
रहती है सोलह दिन बस फिर है चली
ये सच है कि-२
गौरा ईशर के साथ इक दिन जाएगी
चली जाएगी ये.....॥

घोड़ी

तर्जः एक लड़की को देखा तो ऐसा लगा
(फिल्म: १९४२ लव स्टोरी)



हो ५५५
हरियाले बन्ने भी घोड़ी ऐसी आई-२
आई राठीयों के द्वार
छाई चमन में बहार
डोले मन की फुहार
बोले बीणा का तार
बाजे गीत मल्हार, गूंजे मंगलाचार
इसले नखरों को देख, बन्ना हुआ असवार ५५५
हो ५..... हरियाले आई
हो जैसे सोल्ह श्रृंगार
नख सिख रतनार
जीन जडाऊ कनार
भालर मोतियन हार
पग पैजनी बहार
धुंधरु सोहे हजार
इसकी रिमझिम को सुन बन्ना हुआ असवार ५५५
हो हरियाले आई
हो ५५५ हरियाले बन्ने की घाड़ी ऐसी सोही
जैसे बादामी रंग
छवि इन्द्र की तरंग
छाई शोभा अनूप
चंचल चन्द्रमा का रूप
छमछम मतवाली चाल
वारुं मोतियन थाल
ऐसी घोड़ी पे बैठ बन्ना चला ससुराल ५५५
हो ५५५..... हरियाले आई..... २

श्रमिती निकिता डागा,
नारायणधाट

भजन-कच्छप अवतार

तर्जः दुश्मन ना करे दोस्त ने जो....



श्रीमती गिरिजा सारडा
विराटनगर

जिसने भी मेरे भगवन का नाम लिया है
बिन बोले उसका आपने हर काम किया है ॥टेर॥

लेकर फरियाद हरि दर पे, जो आ गया
हरि दर पे जो आया
देव हो या-२ दानव का उद्धार किया है
श्रद्धा से जिसने आपको पुकार लिया है ।
जिसने भी मेरे.....

देवों और दानवों का युद्ध आपने टाला, युद्ध आपने टाला
दानव राज - दानव राज बलि ने भी साथ दिया था
वासुकी और मन्दराचल से मन्थन किया था २

कच्छपरूप घर के मन्दराचल लियो उठाय, मन्दराचल लियो उठाय
सहस्रबाहु, सहस्रबाहु हुए और मन्थन दियो कराय
हलाहल पी के शिव भी नीलकण्ठ कहलाए

कामधेनु कल्पवृक्ष ऐरावत भी दिए, ऐरावत भी दिए
देवों को भी तो, देवों को भी ता अमृत कलष आप ने दिया
लीला आप की ही से अमरत्व है मिला

ऐसा है ये आपका कच्छप अवतार, कच्छप अवतार
देवता हो, देवता हो या हो दानव राज की कथा
सब को मिले सदा आप को कृपा ।



श्रीमती राधा अटल,
ईनरवा

सगोसा लाडली (नाम) न सौपा हाँ थे सोरी राखीजो सोरी राखीजो सबाई
राखीजो

- १) म्हारी बाई न थार, परिवार मे सौपा हाँ म्हारी नेन दुलारी
बेटी ना थे सोरी राखीजो ।
सगोसा लाडली.....
- २) दादासा री प्यारी मोती, दादी र मन भावनी हाँ, काका सा री नयन
दुलारी न थे सोरी राखीजो ।
सगोसा लाडली.....
- ३) बापू सा री प्यारी बेटी, मायर न मन भावनी हाँ मामा जी री कौर ना
थे सोरी राखीजो ।
सगोसा लाडली.....
- ४) भाया रो हिवडो हारो, बहनारो घनो प्यार भाभी केव म्हारी ननन्द न
थे सोरी राखीजो
सगोसा लाडली.....
- ५) भुवासा री प्यारी भतीजी, मासी री मन भावनी हाँ, सहेल्यारी सरवी न
थे सोरी राखीजो ।
सगोसा लाडली.....
- ६) भाया री लाडेसर बहना, सासरिया म सराईज्यो तु सासरिया म सासु
न सबाई राखीजो ।
सगोसा लाडली.....

पीलो

तर्ज- मैने पायल है छनकाई
(फालुनी पाठक)



कोई गोटो किरण लगाओ, कोई तारा जाल बिछाओ... हो-२

कोई SSSSS

हो कोई लाल कसूबी रंगादे }
पीलो केसरियो मंगवादे } २

श्रीमती सरिता सारडा
काठमाण्डौ

म्हाने ओढण री आवे रली, हो जी हो, कोई सुणो ये म्हारी अरजी

आम मुंबई रा भावे, काफी चेन्नई री भावे

दिल्ली री चाट भावे, नणदिया हो SSSSS

पिज्जा डोमिनोज रा भावे, ये पुचका मन ललचावे

कलकत्ता री पावभाजी, हो सजना हो SSSS

म्हाने SS सगला टेस्ट सतावे, म्हारी जीभ सूँ रहयो न जावे-२

म्हाने खावणरी आवे रली-२

पोत जयपुर सूँ लाओ, रंगरेजा सूँ रंगवाओ

“सिमाया” सूँ बणवाओ, सासू माँ हो SSSSS

हीरा सूरत सूँ लाओ, म्हारे चुडला घडवावो

पायल री झणकारा सूँ आँऊ महलां हा SSSS

म्हाने SSS ब्राण्डेड शौक सतावे, म्हारो जी हिचकोला खावे

म्हाने ओढण री आवे रली-२

गोदी मे घनेड लाऊँ, मनडे री आस पुराऊँ

पितरा ने शीश नवाऊँ, जाऊँ चरणां.... हो SSSS

सासूजी र पग लागूँ, ससुरजी आशीश माँगू

ननद जेठाणी संग मनाऊँ खुशियाँ हो SSSSS

म्हारो SSSSS साजन बिल्खयो डोले, मन ही मन मुळ्कावे होले

म्हाने ओढण री आवे रली-२

नेपाल माहेश्वरी महिला संगठन

समिति संयोजक



श्रीमती अमिता पेडीवाल
पुस्तिका प्रभारी



श्रीमती अर्चना तापडिया
स्वास्थ्य समिति



श्रीमती मधु काबरा
महिला स्वावलम्बन समिति



श्रीमती निधि राठी
सांस्कृतिक समिति



श्रीमती पायल सारडा
वेबसाइट समिति



श्रीमती सरिता सारडा
विवाह सम्बन्ध समिति



श्रीमती सुरुचि साबू
किशोरकिशोरी प्रशिक्षण समिति



श्रीमती मञ्जु राठी
परिवार परामर्श समिति



श्रीमती किर्ती राठी
व्यापार प्रवद्धन समिति



श्रीमती किरण अटल
व्यापार प्रवद्धन समिति

नेपाल माहेश्वरी महिला संगठन
द्वारा प्रकाशित

“जीवन संरक्षण”

सम्पादक मण्डल



श्रीमती गिरिजा सारडा



श्रीमती अमिता पेडीवाल



श्री घनश्याम राठी



श्रीमती सरस्वती देवी राठी



श्रीमती सीतादेवी राठी



श्रीमती रञ्जना मन्त्री

